निवेदन ।

अनेक आभूषणोंके साथ यदि इस छोटेसे 'भूषण' को भी आप अपनी सुगृहिणीको भेट करें, तो मुझे आशा है कि उन अमूल्य रत्नजडित आभूषणोंकी अपेक्षा यह विशेष उपयोगी होगा ।

स्त्रीके आभूषणमें पति प्रेम, आत्मीय तथा अन्य जनके प्रति समुचित आदर स्नेह और सुजनता, सतीत्व, सहनशीलता, दया, औदार्य्य, गृहकार्य्य दक्षता आदि उज्ज्वल रत्न न हों तो वह सच्चा आभूषण नहीं है । अतएव इन अमूल्य रत्नोंको ग्रन्थित कर यह 'गृहिणी-भूषण' तैयार किया गया है । इसे धारणकर स्त्रियाँ यदि अपने वास्तविक सौन्दर्य्यमें कुछ भी वृद्धि कर सकीं, तो मैं अपने इस परिश्रमको सफल समझूगा ।

देवरी-सागर ।
महाशिवरात्रि,
स १९७० बि

निवेदक-
शिवसहाय चतुर्वेदी ।

विषयानुक्रमणिका ।

ॐ

गृहिणी-भूषण ।

पतिके प्रति पत्नीका कर्त्तव्य ।

संसारमें पति ही स्त्रीका सच्चा सहायक, सच्चा मित्र और सच्चा आश्रय है । पति अबला (स्त्री) का बल है, वह सुख और दुःखमें सम्पत्ति और विपत्तिमें सदैव अपनी स्त्रीकी रक्षा और उसका पालन पोषण करता है । स्त्री पतिके सुखसे सुखी और उसके दुःखसे दुःखी होती है; पतिके जीवनसे वह अपनेको जीती और उसकी मृत्युसे अपनेको मरी हुई समझती है। इस लिये स्त्रीका कर्त्तव्य है—उसका धर्म है, कि वह अपने परमहितैषी पति-देवके चरणोंकी तन मनसे सेवा करे । संसारमें स्त्रियोंकी जो कुछ बड़ाई है, जो कुछ प्रतिष्ठा है, वह इसीमें है कि वह अपने पतिको सदैव प्रसन्न और सुखी रक्खे । भगवान् मनु कहते हैं कि स्त्रियोंके लिये न कोई जुदा यज्ञ है, न कोई जुदा

व्रत है और न कोई उपवास है जिससे कि वे स्वर्गमें पहुँच सकें।* जो स्त्रियाँ अपने स्वामीकी सेवा करती हैं वे ही स्वर्गमें आदर पाती हैं। रामायणमें लिखा है—

"एकै धर्म एक व्रत नेमा, काय वचन मन पतिपद प्रेमा।"

इस लिए शुद्ध चित्तसे पतिकी सेवा करके उसको सुखी रखना स्त्रियोंका प्रधान कर्त्तव्य है। यह निश्चय समझो कि संसारमें पति सेवारूपी महायज्ञमें अपने तन, मनकी आहुति दिये बिना स्त्रियोंका जीवन कौड़ी कामका नहीं है। पति कैसा ही मूर्ख, निर्धन, अपाहज, रोगी या बेकार क्यों न हो तो भी स्त्रीको उसका आदर करना उचित है। पति स्त्रीकी प्रत्येक अवस्थाका स्वामी है। भगवान् मनु कहते है कि "स्वामी कैसा ही दुराचारी और गुणहीन क्यों न हो पर साध्वी स्त्रियोंके लिये वह पूजनीय ही है। यथार्थमें स्वामी कैसा ही हो, किन्तु उसीमें संतुष्ट रहनेसे स्त्रियोंको इस लोकमें सुख—सन्मान और परलोकमें परम शान्ति मिलती है। शास्त्रोंमें लिखा है कि "स्त्रियोंका पति ही धर्म, पति ही गति और पति ही उनका सुख और सच्चा सौभाग्य है, पति ही उनका वसन, भूषण और सौन्दर्य है। सूर्यहीन संसार और पति हीना स्त्री दोनों अंधकार मय हैं। जो स्त्रियाँ ऐसे परमपूज्य, पति देवताका अनादर करती हैं—चित्तसे उसकी सेवा नहीं करतीं; उससे संतुष्ट नहीं रहतीं—वे अतिशय नीच और पापिनी हैं। संसारमें उन्हें सुख और सन्मान

---

* न स्त्रीणां पृथग्यज्ञो न व्रतं नाप्युपोषितम्।
पतिं शुश्रूषयेद्यत्तु तेन स्वर्गे महीयते॥

नहीं मिल सकता। सब लोग उन्हें बुरी समझते है। ऐसी स्त्रियाँ सचमुचमें स्त्री कुलको कलङ्कित करती हैं।

जिससे पति सुखी और संतुष्ट रहे, जिससे उसकी भलाई हो— अच्छी स्त्री सदैव ऐसे ही कामोंसे प्रीति रखती है। वह मरने तक पतिके हितसाधनमें कभी आनाकानी नहीं करती। जिन कामोंसे पति अप्रसन्न हो उनसे वह सदैव दूर रहती है। भगवान् मनु कहते है कि "जो स्त्री पति लोक चाहती है वह पतिको अप्रिय लगनेवाला काम कभी भूल कर भी नहीं करती। स्त्रीको छायाके समान पतिकी अनुगामिनी होना चाहिये और उसे सदैव प्रसन्नमनसे पतिके मनके अनुकूल काम करनेका उपाय करते रहना चाहिये। पतिको प्रिय लगनेवाले कामोंका करना और अप्रिय लगनेवाले कामोंसे बचे रहना ही सच्ची पतिसेवा है। स्त्रियोंको कभी पतिकी आज्ञा न टालना चाहिये; वह जो काम करनेको कहे या जो उपदेश देवे उसे प्रसन्नचित्तसे स्वीकार करलेना उचित है। यदि कोई पति अपनी पत्नीपर किसी कारणसे अत्याचार करे, तो यह उसकी गलती है, परन्तु उसका बदला लेना बुरा है। जो स्त्री, अपने स्त्री-स्वभावके अनुकूल सरलता, सहनशीलता, कोमलता, दया, भक्ति और पवित्रता आदि उत्तम गुणोंके द्वारा पतिके दुराचारों या दुर्गुणोंको दूर न कर सकी, तो फिर वह पतिके सौभाग्य और हितकारी कामोंको कैसे कर सकेगी? जिस समय पति क्रोधित होकर कडुवे वचन कहे, या बुरा व्यवहार करे तो उस समय स्त्रीको चुप रहना ही उचित है। क्योंकि विधाताने स्त्री जातिको कोमल स्वभाव बनाया है। बदला लेनेके लिये उग्रमूर्ति

धारण करनेसे परिणाम बहुत बुरा होता है। स्त्रीको पतिसे ढिठाई करना बहुत निन्दनीय है। मूर्ख स्त्रियाँ ही ऐसे कुकर्म करनेका साहस करती हैं। बुद्धिमती स्त्रियाँ ऐसा निष्ठुर व्यवहार करके कभी पतिके चित्तको नहीं दुखाती।

बड़े खेदकी बात है कि इस समय पति-भक्तिके समान स्वर्गीय वस्तुकी दशा बहुत शोचनीय हो रही है। वर्तमान समयमें बहुत-सी नई शिक्षा पाई हुई युवतियां पतिको अपने खेलकी चीज़ समझती हैं। वे पतिपर सच्चा प्यार नहीं करतीं। वे इस बातको स्वीकार नहीं करतीं कि—पति स्त्रियोंको देव-तुल्य पूजनीय है। वे पतिसे प्रेम करना चाहती हैं—परन्तु उनकी पूजा करना उन्हें पसन्द नहीं! पतिको देव तुल्य समझना, उनके वशीभूत रहना, उनकी सेवा करना इत्यादि बातें उन्हें बहुत खटकती हैं; ये बातें उनके लिये बड़ी आपत्तिजनक हैं? यह कैसे दोषकी बात है! स्त्रियोंको ऐसे दूषित विचारोंसे सदैव बचे रहना चाहिये। कई स्त्रियां ऐसी नीच और छोटे हृदयवाली होती हैं कि पतिका ज़रासा दोष या भूल देखकर आगबबूला हो जाती हैं और जो जीमें आता है अनापसनाप बकने लगती हैं। उस समय उन्हें भला बुरा कुछ भी नहीं सूझता। कोई कोई रूसकर सात सात दिन तक रोती पीटती रहती हैं और खानापीना भी छोड़ देती हैं। यह बहुत बुरी बात है। कोई कोई स्त्रियाँ ऐसे चपल स्वभावकी होती हैं कि अपने पतिका दोष दूसरोंसे कहनेमें वे कुछ भी संकोच नहीं करतीं। पतिके दोष दूसरोंपर प्रगट करना उचित नहीं; बरन उनके दोषोंको छिपानेके लिए सदैव कोशिश करते रहना चाहिये। पतिका दोष

देखकर उससे कैसा व्यवहार करना चाहिये, इस बातको बहुतसी स्त्रियाँ नहीं जानतीं। अथवा जो जानती हैं वे रोगको पहचान कर भी औषधि नहीं दे सकतीं। पतिका दोष दूर करनेके लिये प्रथम उनसे नम्रतापूर्वक मधुर वचनोंसे उस दोषको त्याग देनेके लिये प्रार्थना करना चाहिये। यदि इतने पर भी वह दोष मुक्त न हो तो उनके चरणोंपर मस्तक रखके बारंबार प्रार्थना करना चाहिये। जब तक वह दोष दूर न हो जावे; तब तक सौ सौ बार विनयपूर्वक अनुरोध करते रहना चाहिये। स्वामी कितना ही कठिन हृदय क्यों न हो साध्वी स्त्रीके इस तरह नम्र अनुरोधको बारंबार नहीं टाल सकता, उसका हृदय एक न एक दिन अवश्य पिघलेगा। पतिके कुराह चलनेपर स्त्रीको अपनी शक्तिभर उसे रास्तापर लानेका उद्योग करना चाहिये—उदास होकर बैठ रहना उचित नहीं। जब तक वह पतिको सुमार्गपर न पहुँचा दे तब तक उसे हितकारी मित्रके समान विनयपूर्वक नम्रवचनोंसे उन बुरे कामोंसे पैदा होने वाली बुराइयोंको हमेशा पतिसे कहते रहना चाहिये। स्त्री अपने दु.शील पतिको जैसा सुशील बना सकती है वैसा कोई दूसरा नहीं बना सकता। यथार्थमें पतिपर सच्चे हृदयसे प्रीति रखनेवाली साध्वी स्त्री ही पाप-रोगसे ग्रसित कठोर-स्वभाव पतिकी रामबाण दवा है।

पतिकी मौजूदगीमें स्त्रीको अपनी इच्छानुसार कोई भी काम करनेका अधिकार नहीं है। वह स्वामीकी आज्ञा या सम्मतिसे अपने इच्छित कार्य्योंको पूरा कर सकती है। जिस कामसे पति असंतुष्ट हो या जो कार्य पतिके असंतुष्ट होनेका कारण हो उसे कदापि न

करना चाहिये । और तो क्या पतिको अप्रिय लगनेवाले कामोंमें अपनी सम्मति या सहानुभूति भी न दिखाना चाहिये।

पतिको प्रिय लगनेवाले कामोंसे सदैव प्रीति रखनी स्त्रीका मुख्य कर्त्तव्य है। इस कर्तव्यके मार्गको भूल जाना बड़ी भारी विडम्बना है; इससे अधिक विडम्बना और क्या हो सकती है?

स्वामीकी भलाई चहनेवाली, आज्ञाकारिणी—दासीके समान तुम्हें पतिकी आज्ञा पालनेमें सदैव तत्पर रहना चाहिये। इस काममें शिथिलता दिखलाना, टालटूल करना वा ऐसा कहना कि 'यह न हो सकेगा' सर्वथा अनुचित है।

इस दुःखमय संसारमें स्त्रीके समान और कोई व्यक्ति हितकारी और सन्तोषदायक नहीं है। तुम इस बातको सदैव ध्यानमें रक्खो कि स्त्री स्वामीके जीवन-पथकी संगिनी, मंगलकारिणी देवी और पाप, पुण्य तथा शरीरकी अर्धभागिनी है। पति जिस समय सुखी हो उस समय तुम्हें उनके सुखसे सुखी और दुःखके समय दुःख भागिनी होकर उनके हृदयका दुःख दूर करना चाहिये। पतिको विपत्तिके समय साहस और उपदेश देना, सम्पत्तिमें उनके चित्तको संयत रखनेका यत्न करना और बीमारीके समय सेवा सुश्रूषा करके उनके क्लेशोंको दूर करना कुलीन स्त्रियोंका लक्षण है। अनेक स्त्रियाँ पतिके दरिद्र हो जानेपर उनका सन्मान नहीं करतीं और उन्हें अनादरकी दृष्टिसे देखकर कटुवचनोंसे दुःखित किया करती हैं। यह बड़ा ही अन्याय है। पतिकी गरीबी और हीनावस्थामें जिस स्त्रीकी पति-भक्ति कम हो जाती है, वह पत्नी नामके योग्य नहीं है। ऐसे नीच स्वभावकी स्त्रियाँ ही संसारको दुःखमय बनाती

हैं। भगवान् मनु कहते हैं कि "दैवी घटना या और किसी कारणसे स्वामीके दरिद्र या रोगी होनेपर जो स्त्री उसकी अवज्ञा करती है वह वारंवार शृगाली या शूकरीका शरीर धारण करती है।" स्त्रियोंको ऐसी बुरी चाल शीघ्र ही छोड़ देना चाहिये। पतिकी हालत कैसी ही क्यों न हो, स्त्रीको उसीमें संतुष्ट रहना उचित है और इस दशासे उन्नति पानेके लिये उसे पतिको सहायता और सलाह देना उसका कर्त्तव्य है।

धृतराष्ट्रकी पत्नी गान्धारी और सीताका वृत्तान्त महाभारत और रामायणमें बहुतोंने पढ़ा होगा। गान्धारी जीवनभर अन्धे पतिकी पद-सेवा करके सुखी और संतुष्ट रही। स्वामी अंधा है, ऐसा सोचकर क्षणभरके लिये भी उसके मनका भाव नहीं बदला। सीता राजसुखोंको तिनकेके समान छोड़कर पतिके साथ जंगल और पहाड़ोंमें अनेक कष्ट और संकट भोगती फिरी। इसके पीछे सीताकी गर्भावस्थामें उनके पतिने उन्हें निर्दोष होनेपर भी हिंसक जन्तुओंसे परिपूर्ण वनमें भेज दी। सती सीताने सब कुछ सहन किया, पतिके भयंकर अत्याचारसे पीड़ित होकर भी वह क्षणभरके लिये पति चरणोंको नहीं भूली। जन्म जन्मान्तरमें रामचन्द्रको ही पतिरूपमें पानेके लिये उसकी अटल वासना बनी रही। देखो, कैसी अविचल और अलौकिक पतिभक्ति है।

अभी एक दिन कामिनी नामकी एक हिन्दू स्त्रीने जिस तरह पतिभक्तिका परिचय दिया था, उसे सुनकर विस्मित होना पड़ता है। कामिनीका घर मयमनसिंह जिलेके टाङ्गाइल नामक ग्राममें है कामिनीका स्वामी बड़ा गाँजाखोर था। एक दिन उसके पतिने

गाजा पीकर उसे व्यर्थ हीं बड़ी निर्दयतासे मारा। इस मारपीटसे कामिनीके शरीरमें गहरी चोट पहुँची। इलाजके लिये वह हास्पिटल भेजी गई। वहाँ रहकर मृतप्राय अवस्थामें भी वह सदैव बड़ी उत्सुकतासे पतिकी कुशलता पूछा करती थी। पति किस तरह है, क्या खाता है, कौन रसोई बनाता है, उसको मेरे पास बुलाकर एक बार दिखादो, इस तरह सदैव अपने पासके लोगोंसे रोरोकर कहा करती थी। उसकी अपूर्व पतिभक्ति और हृदयमें भरा हुआ पतिप्रेम वायुके प्रकोपसे हिलते हुए समुद्रके समान और भी सहस्र-गुण लहरा उठा। जिस समय न्यायाधीशने उसकी गवाही ली उस समय उस सतीने पतिका कुछ भी दोष प्रकट नहीं किया। 'मेरे ही दोषसे मेरी ऐसी हालत हुई' ऐसा कहके वह आँखोंमें आंसू भरकर गिड़गिड़ाकर स्वामीके लिये क्षमा प्रार्थना करने लगी। कामिनी! तुम्हारी पतिभक्तिको धन्य है। अंतमें जब मजिस्ट्रेटने कामिनीके पतिको सात वर्षकी कठिन जेलकी सजा दी, उस समय उसकी जैसी दशा थी वह लिखी नहीं जा सकती। पतिव्रता कामिनी उच्च स्वरसे रोती रोती एक ही बार व्याकुल होकर जमीनपर गिर पड़ी। न्यायाधीश और अन्यलोग कामिनी-का रोदन सुनकर अपने आंसूओंको न रोक सके। सब लोग उसकी ऐसी दृढ़ पतिभक्तिको देखकर बहुत चकित हुए। कामिनी यथार्थमें आदर्श पतिव्रता थी। बंगवासी आदि अनेक प्रसिद्ध समाचार पत्रोंने उसकी प्रशंसा और उसके दुःखमें सहानुभूति प्रकट की थी।

यह पहले ही कहा गया है कि पतिसे हिलमिल कर रहना। कभी उसकी अवहेला न करना। सदैव उसे सुखी और प्रसन्न

बनाये रखनेकी कोशिश करना—स्त्रीका परम कर्तव्य है। जो ऐसा करतीं हैं वे लक्ष्मी हैं।

उनका जीवन इस संसारमें बड़ा सुख-शान्तिसे व्यतीत होता है।

पति-पत्नीका प्रेम।

पवित्र भावसे जीवन भरके लिये स्त्री-पुरुषके सम्बन्धको विवाह कहते हैं। जब स्त्रीपुरुष विवाह—सूत्रमें बंध जाते हैं, तब उनके प्राण और हृदय परस्पर मिलकर प्रेम उत्पन्न करते हैं। जब दोनोंकी एक आशा, एक ध्येय, एक ध्यान, एक ज्ञान और हरएक बातमें एकता हो जाती है, स्त्री पतिमें और पति स्त्रीमें मिल जाता है; दोनों पृथक् शरीर मिलकर एक नवीन प्रियदर्शी युगलमूर्तिका रूप धारण करते हैं, तब इस तरहके निर्मल और मधुर मिलनको दाम्पत्य (पति पत्नीका) प्रेम कहते हैं। इस प्रेम या आध्यात्मिक (आत्मासम्बन्धी) मिलनका भाव बहुत गंभीर है; इसका उद्देश्य बहुत बड़ा है। इसकी जड़में परमेश्वरका जो गूढ अभिप्राय छिपा हुआ है उसे कार्य्यमें परिणत करना ही दम्पतिके निर्मल प्रेमका परम गौरव या चरम (अन्तिम) उन्नति है। वह गूढ अभिप्राय कौन है ? स्त्रीपुरुष एक सङ्ग, एक मत, और एक इच्छासे एक दूसरे पर निर्भर होकर परमेश्वरके प्रियकार्य्यको साधन करें—प्रेमका यही मुख्य उद्देश्य है। इसी लिये स्त्रीको सहधर्मिणी कहते हैं। इस लुभानेवाले संसारमें क्या स्त्री क्या पुरुष कोई भी अकेला रह-

कर अपनी रक्षा नहीं कर सकता—विषयवासनाओंसे अपनेको नहीं बचा सकता। इसी लिये यह पवित्र युगल—मिलन है। यदि समाजमें यह पवित्र स्त्री-पुरुषका मिलन प्रचलित न होता तो आज तक समाज नष्टभ्रष्ट हो जाता और मनुष्योंके हृदयमें दया, स्नेह, दूसरेके दुःखमें कातर होना और धर्मपरायणता आदि ईश्वरीय भाव कभी स्थान न पाते। मनुष्य का हृदय विषधर सर्पकी आवास भूमि हो जाता और यह संसार रहनेके योग्य ही न रहता। इन्हीं दोषोंसे बचनेके लिये दाम्पत्य-प्रेमकी सृष्टि की गई है। यदि दाम्पत्य-प्रेम न होता तो मनुष्योंमें मनुष्यपन न आता। मनुष्योंका हृदय मरुभूमिके समान लूखा और दोषोंसे मलीन हो जाता। भगवानकी ऐसी अपूर्व माया है कि उसने मनुष्यको मनुष्य बनानेके लिये; पाप, ताप, व्यभिचार आदि विषसे बचानेके लिए और उन्हें स्वर्गीय सुखका अधिकारी करनेके लिये; स्त्रीपुरुषके हृदयमें दाम्पत्य प्रणयका संचार कर दिया है। यहांपर यह कहना अनुचित न होगा कि दुःखज्वालामय—संसाररूपी घोर वनमें दाम्पत्य—प्रणयकी मोहनी शक्ति ही नंदनवनके समान रमणीय और सुखशान्ति दायक है। इससे ही दम्पति नाना तरहके सुख भोगते हुए धीरे धीरे अपने उन्नतिके मार्गमें बढ़ते जाते हैं।

पतिपत्नीका प्रेम सब सुख और उन्नतिका मूल है। परन्तु दम्पतिके हृदय और चरित्रपर ही वह सुख और उन्नति पूर्ण रूपसे निर्भर है। स्वामी और स्त्रीके व्यवहारदोषसे इस सुखमें तीव्र विष उत्पन्न हो जाता है। परन्तु दम्पतिके परस्पर एक मन और एक प्राणसे अनुरक्त होने तथा अपना कर्त्तव्य समझकर काम

करनेसे इतना सुख प्राप्त हो सकता है, जितना कि एक अतुल वैभवशाली राजाको नहीं मिल सकता। दाम्पत्यप्रणय अर्थात् पतिपत्नीका प्रेम बड़ा ही निष्कलंक और मधुर है। इसका व्यवहार बड़ी सावधानीके साथ करना चाहिये। अनेक स्त्रियाँ इन बातोंको बिलकुल नहीं जानतीं। इसी कारण अनेक पतिपत्नियोंमें सदैव मनोमालिन्य और असन्तुष्टता बनी रहती है। वे परस्पर एक दूसरेसे सुखी नहीं हो सकते। बहुधा देखनेमें आया है कि अनेक पुरुष घरमें रात दिन कलह होने और स्त्रीके बुरे व्यवहारके कारण यह कहके कि घरमें कुछ सुख नहीं है—गृहस्थ धर्म छोड़ देते हैं। कोई कोई तो आत्महत्या तक कर डालते हैं। इसी तरह अनेक स्त्रियाँ स्वामीके दोषसे जन्मभर तीव्र दुःख भोगकर शरीर छोड़ती हैं। यद्यपि दाम्पत्य-प्रणय भंग होनेके उत्तरदाता स्त्रीपुरुष दोनों हैं, तथापि हमारे हिन्दूशास्त्रोंमें और देशकी प्रचलित रीतिके अनुसार इस विषयमें स्त्री ही सम्पूर्ण रीतिसे दोषी है। जो स्त्री अपने स्वामीके प्रेमका वजन तौलकर उतना ही प्रेम बदलेमें देना चाहती है वह अभागिनी है। पुरुषोंका हृदय स्वभावसे ही कठिन और स्त्रियोंका कोमल होता है। स्त्रीके प्रेमरूपी जलके सींचनेसे पुरुषोंका कठिन हृदय आर्द्र होकर उसमें दया, ममता आदि कोमलवृत्तिके अंकुर फूटें यही विधाताकी इच्छा है। अतः स्वामीकी अवहेलना पर ध्यान न देकर, उनके कर्कश व्यवहारसे कभी सहनशीलता न छोड़ना चाहिये। बरन् स्नेहपूर्वक सदैव उनके प्रसन्न रखनेकी कोशिश करना उचित है। स्वामी कितना ही निष्ठुर और कठिन क्यों न हो, तुम्हारे ऐसे नम्र व्यवहारसे उसका हृदय तुम्हारी

और झुके बिना न रहेगा। गंभीरता और अटलताके बिना दम्पतिका प्रणय स्थायी नहीं हो सकता। गृहस्थीके सुखोंकी मूल भित्ति पतिपत्नीका प्रेम है। दाम्पत्य प्रेमके अभावमें मधुर गृहसुख चिरदुःखमें बदल जाता है। घरवाले गृहलक्ष्मीकी कृपासे जैसा विमल सुख पा सकते हैं वैसा अन्यसे नहीं। जिस घरमें पति पत्नीका गंभीर प्रेम और अटल स्नेह रहता है वह घर यथार्थमें आनंदका धाम है। भगवान् मनु कहते है कि, " जिस घरमें स्त्रीके द्वारा पति और पतिके द्वारा स्त्री संतुष्ट रहती है उस घरमें सदैव आनंद रहता है।" पति-पत्नीमें अविचल प्रेम और दृढ़ अनुराग न होनेसे नाना तरहके दुःख, उपद्रव और अशान्ति उत्पन्न होकर घर दग्ध हो जाता है। विज्ञानशास्त्रसे जाना जाता है कि पति-पत्नीमें दृढ़ प्रेम न होनेसे उनके बलवान्, बुद्धिमान और शान्त भाव संतान पैदा नहीं हो सकती। अतः यदि संसारमें सुखी रहनेकी इच्छा हो; पाप, ताप, व्यभिचार आदि दोषोंके कराल ग्राससे बचना हो; निरोग, शान्त, बुद्धिमान् और सुन्दर सन्तानका मुख देखकर अपने हृदय और नेत्रोंको शीतल करना चाहते हो—तो जिससे पति पत्नीका अटूट प्रेम रहे, उन बातोंपर सदैव ध्यान रक्खो। दाम्पत्य-प्रणय की जड़में भक्ति और श्रद्धाका रहना परम वश्यक है। जिस प्रेममें भक्ति और श्रद्धा नहीं है वह प्रेम, प्रेम नहीं है। ऐसे प्रेमसे सुखकी आशा करना वृथा है।

पतिका आन्तरिक स्नेह प्राप्त करना ही पत्नीका सौभाग्य है। यह स्नेह कैसे प्राप्त हो सकता है? बहुतसी स्त्रियाँ कहेंगी कि उत्तम रूपके बिना पतिके चित्तको अपनी ओर खींचना कठिन है।

रूपसे ही पति वशमें किया जा सकता है । जो ऐसे कुविचारके वशीभूत होकर अपने रूप और सौन्दर्य्यके द्वारा ही पतिके हृदय पर अधिकार जमाया चाहती हैं— वे मूर्ख और अभागिनी है। इस तरह स्त्रियाँ पतिके सच्चे प्रेमकी अधिकारिणी नहीं हो सकतीं । जब तक रूप है तब तक ही उनका सौभाग्य है, समय बीतनेपर ज्यों ही उनका रूप नष्ट हुआ त्यों ही धीरे धीरे प्रेम भी ठंडा पड़ जाता है । जो स्त्रियाँ पतिको सुखी करके सुखी होती हैं, जो पतिकी चरण धूलको लेकर अपनेको धन्य समझती हैं— वे ही पतिका आन्तरिक स्नेह पाती है । ऐसी स्त्रियोंपर पति सदैव संतुष्ट रह कर उन पर हृदयसे प्रेम करते हैं । यह प्रेम रूपके मोहके समान शीघ्र ही नष्ट नहीं हो जाता। कई स्त्रियां पतिका प्रेम न देखकर वे उनपर भी प्रेम नहीं करना चाहतीं और अभिमानमें चूर रह कर पतिसे इतनी विरक्त और अप्रसन्न रहती हैं कि उनके नामसे जलती है । ऐसी स्त्रियाँ कभी पति–प्रेम का स्वाद नहीं पा सकतीं। यदि तुमपर पति प्रेम न करे तो न सही परन्तु तुम्हें उनपर अवश्य करना चाहिये; क्योंकि वह तुम्हारा सर्वस्व और आश्रय दाता है। यदि तुम पति पर सच्चा अनुराग रक्खो तो वह भी तुम्हें अपना हृदय समर्पण किये बिना न रह सकेगा । मान लो कि तुम्हारा पति तुम पर प्रेम नहीं रखता हमेशह विरक्त रहता है। यदि तुम उसपर हृदयसे प्रेम करो, उनके लिये अपने प्राण दो तो ऐसा नहीं हो सकता कि वह तुम पर कुछ भी स्नेह न करे, एक न एक दिन वह तुम्हारे लिये अवश्य रोवेगा । तुम्हारे सद्व्यवहार और उच्च हृदयको देखकर उनका मन अवश्य फिरेगा । एक बात और है कि पति की इच्छानुसार चलना ही

प्रीति—पात्र बननेका मुख्य उपाय है। कुछ भी हो तुम्हें पतिके मनके अनुकूल बनना चाहिये। पतिका स्वभाव जैसा हो स्त्रीको भी वैसा ही स्वभाव रखना उचित है। ऐसा किये बिना उसका मन पाना असंभव है। पर तुम यह मत समझना कि यदि स्वामीका स्वभाव निन्दनीय और चरित्र दूषित हो, तो पत्नीको भी अपना स्वभाव और चरित्र वैसा ही रखना चाहिये। यदि स्वामीकी आदतें बुरी और चालचलन खराब हो तो जहां तक हो सके उसकी आदतोंका और चालचलन सुधारनेका प्रयत्न करना चाहिये। क्योंकि पति—पत्नीमें एक भाव न होनेसे उनमें परस्पर विवाद और बिगाड़ पैदा हो जानेकी संभावना रहती है। जिससे कि पति—पत्नी दोनों दाम्पत्य सुखसे हाथ धो बैठते हैं। इस लिये तुम्हें उचित है कि किसी बनावटी उपायका सहारा न लेकर तुम्हें स्वामीके मनके अनुकूल बनना चाहिये। दाम्पत्यप्रणयके अनेकशत्रु स्त्रियोंके हृदयमें वास करते हैं; अब इस जगह उनका संक्षिप्तरीतिसे विवेचन किया जाता है।

(१) कुछ स्त्रियाँ ऐसी होती हैं कि उन्हें अभिमान बहुत प्यारा होता है। वे समझती हैं कि अभिमान न करनेसे पतिसे नित्य नया आदर पाना कठिन है। अतः वे बात बातमें अभिमान दिखला कर सदैव पति से मानकी मरम्मत कराया करती हैं। यदि नये मानके मिलनेमें कुछ विलम्ब हो तो उन्हें मर्मान्तिक कष्ट होता है। और फिर स्वामीके थोड़े ही आदरको पाकर वे आनन्दमें मग्न हो जाती हैं। यह बड़ा दोष है। इससे स्वामी संतुष्ट न होकर उल्टा हो जाता है। अभिमानिनी स्त्रियाँ सच्चे स्नेहका मुख नहीं द

सकतीं। उनके प्रणयकी जड़में सदैव संकीर्णता बनी रहती है। वे पतिके हार्दिक प्रेमकी अधिकारिणी नहीं हो सकतीं। जो स्त्रियां पतिके चरणोंमें अभिमानको होम देती हैं वे ही पत्नीकी पदवी योग्य हैं।

(२) **कपट या माया**—यह सहज ही जाना जाता है कि सरल व्यवहारका अभाव पति पत्नीके प्रेमका मुख्य कंटक है। कपट मनकी उदारताको नष्ट करता और हृदयको कठिन बनाता है। जिस प्रेममें सरलपनकी कमी होती है वह प्रेम सुखदायक नहीं हो सकता। यदि स्त्री स्वामीसे दिल खोलकर अपने मनका भाव प्रकट न करे, जो कहे व सोचे उसे पतिसे हृदयके किवाड़ खोलकर सरल मनसे न कहे, तो यह निश्चय जानो कि ऐसी स्त्रियोंपर स्वामीका सच्चा अनुराग नहीं हो सकता।

युवतियो, सोचो, जो अपना स्वामी है उससे छिपाने योग्य कौन बात है? पतिपत्नी दोनों एक हृदय एक मन हैं उनके बीच कपट रहना मानो ईश्वरके नियमोंका घात करना है। इस लिये पतिके निकट सब तरहसे कपट–व्यवहारका परित्याग करना तुम्हारा परम धर्म है।

(३) **अपना दोष स्वीकार न करना**—अनेक स्त्रियाँ अपनी भूलको पतिसे प्रकट नहीं करतीं, यह उनकी बड़ी गलती है। तुमने कोई दोष यह समझकर कि यदि पति जान लेगा तो अप्रसन्न होगा, इस लिये छिपा रक्खा, परन्तु यदि वह दोष पीछे उन्हें किसी तरह मालूम हो जाय, तो वे तुम पर पहलेसे अधिक असंतुष्ट और क्रोधित होंगे—इसमें कुछ सन्देह नहीं है। भूल करके उसे

छिपा रखना बड़ी मूर्खताका काम है । सरल मनसे अपनी भूलको जाहिर कर देनेसे वे ठीक समयपर उसका सुधार कर सकते हैं । ऐसा करनेसे आगे और हानि नहीं उठाना पड़ती । एक दोषको छिपानेके लिये और कई झूठी बातें बनाना पड़ती हैं कि जिसमे तुम्हारे कसूरकी मात्रा बढ़ती ही चली जाती है । दोषोंसे बचनेके लिये पतिसे सिखावन न लेकर यदि उन्हें अपने हृदयमें पोषण करती जाओ तो अंतमें दोषका एक छोटेसे छोटा अंश भी बढ़कर तुम्हारा सर्वनाश कर डालेगा । इस लिये तुम्हें उचित है कि अपने दोषोंको स्वीकार करके पतिसे क्षमा माँगो । इस तरह चरित्रके कलंकको दूर करके पवित्र बनो । ऐसा करनेसे तुम्हारे पतिप्रेमका बंधन पक्का होगा और तुम सहज ही पतिके हृदयपर अधिकार जमा सकोगी ।

(४) घरमें बुरा बर्ताव रखना—पतिके माता पिता बहिन भाई आदि कुटुम्बियोंसे बुरा बर्ताव रखना एक बहुत बड़ा दोष है । उनके साथ लड़ाई झगड़ा और अविनय करनेसे कभी पतिकी प्रसन्नता नहीं रह सकती । इस लिये तुम्हें उचित है कि पति अपने घरमें जिसमे जैसा सद्व्यवहार रखता हो उससे तुम भी वैसा ही सद्व्यवहार रक्खो । पति जिससे डरकर चलता हो, जिससे स्नेह ममता रखता हो, जिससे भक्ति और अदब करता हो उसके साथ तुम्हें भी वैसा ही भय, प्रेम भक्ति और सज्जनताका व्यवहार करना उचित है ।

(५) स्वार्थपरता—जो स्त्री रातदिन अपने स्वार्थमें मग्न रहती है वह न स्वामी को सुखी कर सकती है और न स्वतः ही

सुखी हो सकती है। जो स्त्री पतिके सुखके लिये अपने भोगोंकी इच्छाको दमन नहीं कर सकती उसे पतिसेवामें कुछ भी सुख नहीं होता और न वह हृदयसे पतिपर प्रेम ही कर सकती है। स्वार्थ-परता प्रेमका महाशत्रु है। पतिचरणोंमें उसे विसर्जन किये बिना कल्याण नहीं है। यह बात याद रक्खो कि यदि तुम स्वार्थ छोड़-कर स्वामीको आत्मदान द्वारा सुखी करोगी तो तुम भी सुखी हो सकोगी।

(६) क्रोध—प्रेमके जितने शत्रु हैं उनमें क्रोध सबसे श्रेष्ठ है। जो स्त्रियाँ छोटी छोटी बातोंपर क्रोधित होती हैं, जिनका क्रोध-का स्वभाव ही पड़ गया है वे अपने स्वामीके प्रेमरूपी अमृतका आस्वादन नहीं कर सकतीं। जिन्हें स्वामीके सैकड़ों दोषोंसे क्रोध नहीं है, मान नहीं है, विरक्ति नहीं है और जिनके भक्तिपूर्ण प्रेममें शिथिलता नहीं है परन्तु जिन्हें अपने दोषोंको दूर करनेकी प्रबल इच्छा है वे ही पतिके प्रेमराज्यकी यथार्थ रानी हैं। पति-प्रेमको उन्हें बुलाना नहीं पड़ता—प्रेम ही उन्हें खींच लेता है।

(७) विलासिता—विलासिनी स्त्रियाँ सदैव मलिन विलास वासनाके लिये पतिको पीड़ित किया करती हैं। जो अच्छे अच्छे कपड़ों और जेवरोंके लिये पागल बनी रहती हैं वे पतिके अनमोल प्रेमके बदले केवल साधारण कपड़े लत्ते और गहने ही पाती हैं। उनके भाग्यमें पति-प्रेम नहीं लिखा। युवतियो! तुम अपने शृंगारके लिये पतिको कष्ट मत पहुंचाओ और ऐसा करके उनकी अप्रसन्न-ताका कारण मत बनो। यदि वे अपनी इच्छासे भी तुम्हें गहने आदि देवें तो तुम्हें उसका निषेध करना चाहिये। क्योंकि वसन

भूषणोंकी तृष्णा विलासिता स्त्रियोंका एक बड़ा अवगुण है। अनेक स्त्रियाँ बसन भूषणोंके लिये पतिको सदैव दुःखित किया करती हैं—न जाने ऐसी स्त्रियोंके हृदय है या नहीं ! पतिकी कठिनाईयों-की ओर उनका कुछ ख्याल नहीं रहता। पति दिन रात परिश्रम करके बड़ी कठिनाईसे पैदा करता है, बिना विश्राम परिश्रमसे उसके शरीरका रक्त मानो पानी हो जाता है इन बातोंकी ओर कुछ ध्यान न देकर वे रातदिन जेवर कपड़ोंकी धुनमें मस्त रहती हैं। अनेक स्त्रियाँ अपनी हैसियतका विचार न करके गहनोंके लिये पतिको ऋण-जालमें फँसा देतीं हैं। ऐसी पतिहितैषिणी स्त्रियाँ स्वामीके सर्वनाशका मूलकारण होती हैं।

कलकत्ता, बम्बई आदि बड़े बड़े शहरोंमें बड़े घरोंकी स्त्रियाँ बहुत शृंगार-प्रिय होती हैं; इन कामोंमें वे बहुत रुपया बरबाद किया करती हैं। बंगालमें कालीपूजाके समय वे स्त्रियाँ जिनका पति विदेशमें होता है खर्चकी एक लम्बी फर्द बनाकर पतिके पास भेज देती हैं। स्वामीके हाथमें तो एक पैसा नहीं है उस पत्रको पढ़कर उनका माथा ठनक जाता है। निदान वे लाचार हो यहा वहासे कुछ रुपया निकालकर पूजाका खर्च चलानेका विचार करके रुपयोंकी खोजमें यहा वहा फिरने लगते हैं। जब तक रुपयोंका बंदोबस्त नहीं होता तब तक उनके पेटमें अन्न और नेत्रोंमें नींद नहीं आती। किसी तरह अनेक कष्ट सहकर उन्हें स्त्रीके मनको संतुष्ट करना पड़ता है। कोई पर्व या उत्सव आते ही यही हाल होता है। बहिनो, अपने मनमें सोचो कि इस तरह मामूली खाने पीने और पहिरने ओढ़नेके लिये पतिको कष्ट देनेमें जिनके मनमें कुछ भी दुःख और सकोच नहीं होता

उनको पत्नी न कहकर राक्षसी कहनेमें क्या दोष है? अभी थोड़े दिन हुए एक युवकने आभूषणोंसे प्रीति रखनेवाली अपनी स्त्रीको गहना न दे सकनेके कारण उसके वाक्य-बाणोंसे दुखी होकर आत्म-हत्या कर डाली और इस तरह उसके वकजेसे अपना पिण्ड छुड़ाया।

यदि तुम पतिका प्रेम चाहती हो तो अच्छे गुणोंको अपने शरीरके आभूषण बनाओ। ऐसे आभूषणोंकी प्राप्ति के लिये सदैव यत्न करती रहो। यह बात जगत् प्रसिद्ध है कि लज्जाशीलता ही स्त्रियोंका अपूर्व भूषण है, पवित्रता ही उनके गलेका हार है और धर्मकी कान्ति ही उनके पहिरनेके वस्त्र हैं। जो कुलललनाएं वस्त्र आभूषणोंकी एकदम दासी हो रही हैं उनके चित्तकी अशान्ति, हृदयकी दरिद्रता और दूसरेका मुँह ताकनेकी कमीनी आदतको देखकर हमें बहुत दुःख होता है। जितनी जल्दी उनकी यह हीनता दूर हो उतना अच्छा है। क्योंकि अधिक भूषण-प्रियतासे बहुधा अपने रूपका अभिमान होने वा झूठी बड़ाई पानेकी बुरी आदत पड़ जाती है। यह आदत बहुत हानिकारक है। कई नीच पुरुष अनेक कुलललनाओंको इसी आदतके कारण उनका सर्वनाश कर डालते हैं। जो स्त्रियां भाग्यवान पड़ोसिनियोंके जेवरों और उनकी सज-धजको देखकर डाहसे अपने प्राणोंको भी त्यागनेमें संकोच नहीं करतीं, वे जेवरोंकी अनुचित लालसाके वशमें होकर कौनसा पाप नहीं कर सकतीं? अनुचित भूषण-प्रियता ही अनेक आपत्तियों-की जड़ हैं।

(८) चरित्रहीनता—चरित्र निर्मल हुए बिना पतिकी प्रियपात्री होना कठिन है । दम्पतिमें विशेष करके स्त्रीका खराब होना बड़ा आपत्तिजनक है । अतः अपने चरित्रको निर्मल और मधुर बनानेकी कोशिश करते रहना स्त्रियोंका कर्त्तव्य है । इस विषयक आगेके अध्यायमें विस्तारपूर्वक वर्णन किया जावेगा ।

चरित्र ।

चरित्र एक अमूल्य रत्न है । संसारकी किसी भी बहुमूल्य वस्तुसे उसकी तुलना नहीं हो सकती । चरित्र मनुष्यको भलीभांति और उत्तम गुणोंसे अलंकृत कर देता है । चरित्रबलसे स्त्रियाँ सबकी पूज्य होती हैं, सर्व साधारणके हृदयमें उनके प्रति जैसी भक्ति, श्रद्धा और प्रीति उत्पन्न होती है, वैसी अन्यके प्रति नहीं । सब लोग आदर सन्मान और विश्वासके साथ साथ उनके उत्तम चरित्रोंका अनुकरण करने लगते हैं । जिसका चारित्र अच्छा होता है, उसकी सब प्रशंसा करते है । दुश्चरित्रका न कोई विश्वास करता है और न उससे प्रीति ही रखता है । बल्कि उसके कामोंसे सब लोग सदैव शंकित रहते हैं । दुराचारी विद्वानसे सदाचारी मूर्ख सब तरह अच्छा है । जिसका चरित्र पवित्र है वह मानव समाजमें अनुकरणीय आदर्श होता है ।

मनुष्य समाजमें पहले स्त्रियोंके चारित्र पवित्र और निष्कलंक होने की बड़ी आवश्यकता है । स्त्रियोंका चरित्र पवित्र हुए बिना

मनुष्योंके चारित्रकी उन्नति होना असंभव है। स्त्री घरके राज्यकी रानी है यदि वह रानी स्वतः दुराचारिणी हो तो घरके सर्वनाश होनेमें क्या सन्देह है? पुरुषोंकी चरित्रहीनतासे समाजकी जितनी हानि होती है, उससे हजार गुणी हानि और अनिष्ट स्त्रियोंकी दुश्चरित्रता से उत्पन्न होती है। जब बालक पैदा होता है तब माताकी गोद उसका आश्रय और उसके स्तनका दूध उसका जीवन होता है। इस तरह निदान दस वर्ष तक बालक और माताका संसर्ग रहता है। बच्चे माताका दूध पीनेके साथ साथ उसके समस्त गुणों अवगुणों और चरित्रोंके भाव भी ग्रहण करते हैं। यदि माता सुशीला हुई तो उसके सत्संगसे संतान भी सुशील हो जाती है। और यदि माताका चरित्र उत्तम न हुआ तो संतानके दुश्चरित्र और अवगुणी होनेमें कोई सन्देह नहीं है। सब जगह देखा जाता है कि संतान मातापिताके स्वभावके अनुरूप होती है। यदि उनमें गुण न हुआ तो संतान उनके दोषोंके सीखनेमें कसर नहीं रखती। क्योंकि मनुष्य गुणोंकी अपेक्षा दोषोंको बहुत शीघ्र सीख लेता है। माता इस तरह संतानकी मुख्य शिक्षिका (शिक्षा देनेवाली) है, और उसके चरित्र ही बालकोंकी पाठ्य पुस्तकें हैं। वह अपने छोटे छोटे बच्चोंको जो कुछ सिखावेगी, उनके कोमल हृदयपर जो कुछ अंकित कर देगी बालकोंको जन्मभर उसी शिक्षाका फल भोगना पड़ेगा। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यथार्थमें बालकोंके भविष्यत् चरित्रकी (आगेकी चालचलन) उन्नति या अवनति माताके चरित्र पर निर्भर है। जितने महापुरुष अपने चरित्र बलसे संसारमें निर्मल सुख भोगकर अक्षय कीर्ति स्थापन कर गये हैं उन

सैनकी माताएं उत्तम शिक्षा पाई हुई और सच्चरित्रा थीं। उत्तम चरित्रवाली माताकी विरली ही संतान बुरी और चरित्रहीन होती है। जिस कुलमें स्त्रियोंका चरित्र उत्तम होता है उस कुलका सुख सौभाग्य दिन दिन बढ़ता जाता है। और ऐसे ही कुलकी संतान चरित्रबलसे अपने वंशका मुख उज्ज्वल करती है। भगवान ऐसे कुलपर सदैव प्रसन्न रहते हैं। क्रोध करनेवाली, अधर्म करनेवाली और मिथ्यावादिनी माताके कारण संतानको जो हानि पहुँचती है वह किसी तरह पूरी नहीं हो सकती। लड़कियोंको छुटपनहीसे उनके चरित्र सुधारनेकी शिक्षा देना चाहिये और सयानी होने तक उन्हें इस योग्य बना देना चाहिये कि वे अपनी संतानको शीलस्वभाववाली और सदाचारिणी बना सकें।

दुराचारिणी स्त्रियाँ संसारमें काँटेके समान हैं। स्त्रियोंकी चरित्रहीनता मनुष्योंकी दुर्गतिका मूल कारण है। सुचाल और सीधीसादी साध्वी स्त्रियाँ जिस तरह पतिको सुख संतोष देने वाली होती हैं, चरित्रहीना स्त्रियाँ उसी तरह पतिघातिनी और पतिकुलको कलंक लगानेवाली होती हैं। दुष्टा स्त्रीके द्वारा पतिका सर्वनाश हो जाता है, उसकी मान मर्यादा बड़प्पन आदि सभी नष्ट हो जाते हैं। और यहाँ तक कि वह लोगोंमें मुँह दिखानेके योग्य नहीं रहता। दुष्टा स्त्रीके दोषसे घरमें सदैव कलह और आपत्ति बनी रहती है। हिन्दूशास्त्रोंमें इस तरहकी दुष्टा स्त्रियोंको परित्याग कर देनेका उपदेश दिया है, और परलोकमें इनको जिस तरहके नरक–दुःख भोगनेका वर्णन लिखा है उसको पढ़कर हृदय काँप उठता है। इस

लोकमें उनको ठिकाना नहीं मिलता, सब लोग उनको घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं ऐसी स्त्रियोंकी दुर्गतिकी हद नहीं है।

सुशील, सती स्त्रियाँ घरमें उजेला करनेवाले दीपक हैं। उनके निर्मल उजेलेसे सास, ससुर आदि कुटुम्बी और पड़ोसियों तकका मुख उज्ज्वल होता है। सब लोग उनके सरल व्यवहारसे सुखी रहते हैं। जिनको सौभाग्यसे सुशीला स्त्री मिली हो संसारमें वे ही धन्य हैं। वे पृथ्वीपर रहके स्वर्गसुख लूटते हैं। सुशीला स्त्रीके निष्कपट व्यवहार और सच्चरित्रसे पतिके सुखकी सीमा नहीं रहती। उसे यह दुःख ज्वालामय संसार नंदनवनके समान सुखकारी होता है। परिवारके समस्त आदमी उसके सुन्दर गुणोंसे अनेक सुख भोगते हैं।

जिसका चरित्र पवित्र होता है वह स्वतः अनेक सुख भोगता है। संसारमें जिसका चरित्र जितना निर्मल और उत्कृष्ट होता है उसका सुख सौभाग्य और मान-मर्यादा भी उतनी ही अधिक होती है। अच्छा स्वभाव होनेसे मनुष्य संसारमें नित्य ही अनेक आपत्तियोंसे बच सकते हैं। अच्छा स्वभाव ही स्त्रियोंका सौन्दर्य है वही अबलाओंका बल और रक्षक है और वही विपत्तिके समय सच्चा सहायक है। नीतिकार चाणक्यने लिखा है कि, 'पृथ्वीकी शोभा समुद्रसे, घरकी शोभा प्राचीर (परकोटा)से' देशकी शोभा प्रतापी राजासे और स्त्रियोंकी शोभा उनके सत्स्वभावसे है।'

सुशीला पत्नीका दुराचारी पतिपर कैसा उत्तम प्रभाव पड़ता है यहांपर इस विषयकी एक सत्य घटना लिखी जाती है। एक भला आदमी बुरी संगतिके कारण इस तरह दुराचारी हो गया कि उसकी दुर्दशा देखकर आँखोंमें आँसू भर आते थे। वह अपनी

सारी आमदनीको प्रायः शराब पीनेमें उड़ा देता था। धीरे धीरे वह बिलकुल कंगाल हो गया। बुरे स्वभावके कारण उसकी नौकरी भी छूट गई। धीरे धीरे उसपर घोर आपत्ति आ पड़ी। केवल भीख मांगना ही उसकी आजीविकाका द्वार रह गया। तो भी उसकी शराबखोरी दूर न हुई। भिक्षामें जो कुछ मिलता था उसके द्वारा ही वह शराबका खर्च चलाता था। परन्तु न जाने उसके किस पुण्यके प्रभावसे-उसे एक स्त्रीरत्न प्राप्त हुआ। उसकी पतिव्रता स्त्री अपने पतिकी ऐसी दुर्दशा देखकर सदैव व्याकुल रहती और पतिको रास्तेपर लानेके लिये सदैव उपाय सोचा करती थी। उसने बहुतेरे उपाय किये परन्तु सब निष्फल हुए। जब उसने देखा कि मधुर वचनों और निरन्तर आँसुओंकी धारासे स्वामीके हृदयपर कुछ असर नहीं पहुंचा तो उसने एक दिन स्वामीके घर आते ही उनके चरणोंपर गिरकर बड़ी कातरतासे रोना प्रारंभ किया उसके दोनों लड़के अपनी माताको इस तरह रोते देखकर वे भी जोर जोरसे रोने लगे। अहा! उस समय एक अपूर्व करुणाकी लहरने पाषाणको पिघला दिया!! स्वामी पत्नीके विलापको न देख सका। उसने पत्नीके आसुओंको पोंछकर उससे अपने किये हुए दोषोंकी क्षमा माँगी और उस दिनसे शराबखोरी आदि व्यसन न करनेकी उसने कसम खा ली। अहा! सतीकी कैसी अपूर्व शक्ति है—दुश्चरित्र स्वामीके हृदयके अंधकारको एकदम दूर कर दिया। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि उस दिनसे वह धीरे धीरे सुमार्गपर आने लगा और बुरी संगति तथा शराब पीना छोड़कर उसने धन संग्रह करनेमें मन लगाया। थोड़े दिनोंमें ही उसकी

दशा सुधर गई । देखो, सुशीला स्त्रीके उपदेश और अच्छे वर्तावसे एक दुश्चरित्र और परम दुःखी स्वामीका कितना उपकार हुआ । हमने जिस स्त्रीकी कथा ऊपर लिखी है वह अब तक जीती है । उसके चरित्रोंकी निर्मलता, हृदयकी पवित्रता और उसके देवत्वको देखकर आनंदित होना पड़ता है । सच्चरित्र स्त्रियां देवीके समान पवित्र और पूज्य हैं । प्राचीन समयकी अनेक आर्य स्त्रियां सीता, सावित्री, दमयन्ती आदि अपने चरित्रबलसे संसारमें पूज्य हुई हैं । बड़े सबेरे उठकर इन साध्वी स्त्रियोंका नाम लेनेसे मनकी मलिनता दूर होती है ।

चेष्टा और उपाय बिना चरित्र उन्नत और पवित्र नहीं हो सकता । उत्तम चरित्रवान बननेके लिये× आत्मशासन* आत्मबंधन और ÷ आत्मपर्यालोचन करनेकी आवश्यकता होती है । संसारमें बुराइयाँ चारों ओर तुम्हारे अमंगलके लिये खड़ी हैं, चारों ओर ललचानेवाली वस्तुएं तुम्हारा मन लुभानेके लिये दिख रही हैं, इन सब बुराईयों और प्रलोभनोंसे अपनी रक्षा करना चाहिये । जिन कामोंके करनेमें पाप हो उन कामोंको बुरा समझकर तत्काल त्याग देना चाहिए । जब कोई बुरी भावना उठे या किसी बुरे काम करनेकी मनमें इच्छा हो तो उस समय आत्मशक्तिसे इन इच्छाओंको दबाना चाहिये । नहीं तो चरित्र कभी निर्मल नहीं रह सकता । सबको अपने मनके आवेगोंको दबाना और अपने चरित्रकी स्वतः आलो-

× अपने मन और इन्द्रियोंको वशमें रखना ।

* अपनेको किसी धर्म, समाज या नियमके बंधनमें रखना ।

÷ अपने गुणदोषोंकी और अपने स्वरूपकी आलोचना करना ।

चना करके उसपर कड़ी नजर रखना उचित है। आत्मशासनसे अपने मनको वशमें रक्खे और आत्मपर्यालोचनसे अपने चरित्रके गुण दोषोंकी जाँच किया करे। बुरे सगसे सदैव डरता रहे अन्यथा ऐसा किये विना चरित्र सुधारनेकी आशा करना वृथा है।

चरित्रकी उन्नतिके लिये सुशिक्षाकी आवश्यक्ता होती है। सुशिक्षासे अंत करण निर्मल और उदार होकर कर्त्तव्यज्ञान परिपक्व होता है। उत्तम उत्तम पुस्तकें पढ़ने और अच्छे दृष्टान्तोंसे मनमें सत्कर्म करनेकी इच्छा पैदा होती है। इस तरहकी शिक्षासे चरित्र निर्मल और उन्नत हो जाता है। परन्तु हमारे देशमें जिस रीतिसे स्त्रीशिक्षा प्रारंभ की जाती है उससे विशेष लाभ होना एक तरहसे असमव है। ऐसी दूषित प्रणालीसे शिक्षा मिलनेकी अपेक्षा तो उसका न मिलना ही उत्तम है। स्त्रीशिक्षा कैसी होना चाहिये इस विषयका वर्णन हम आगे चलकर करेंगे।

सतीत्व एक अनमोल रत्न है।

हृदयकी पवित्रतासे स्त्रियोंकी शारीरिक शोभा सौगुणी बढ जाती है। इस पवित्रताके बिना सुन्दरी स्त्रिया इन्द्रायणफलके समान केवल बाहरसे सुन्दर होकर भीतर बहुत ही कडुवी होती हैं। वे लोगोंके मनमें एक तरहकी घृणा और भय उत्पन्न कर देती हैं। हृदयकी जिस पवित्रताके अभावमें स्त्रियोंकी ऐसी शोचनीय दशा होती है उसीका नाम सतीत्व है। सतीत्व स्त्रियोंका जीवन और

स्वर्गीय रत्न है। संसारमें यह रत्न अमूल्य है। सतीत्व स्त्रियोंका चिर पूज्य परम धन है इसके उपार्जन और आराधनसे सती स्त्रियां संसारमें प्रातःस्मरणीय और पूज्य होती हैं। जिस तरह चंद्रमाकी चांदनीसे पृथ्वी प्रकाशित हो उठती है उसी तरह सती स्त्रियोंके हृदयके सौन्दर्यसे समस्त संसार प्रकाशमान और उज्ज्वल हो जाता है। पतिव्रता स्त्री घरकी पूर्ण लक्ष्मी है। शास्त्रोंमें लिखा है कि "सतीत्वके समान रत्न और सतीके समान दूसरी देवी नहीं है।" मीठी वाणी बोलनेवाली पतिव्रता और स्वामीसेविका सती जिस जगह निवास करती है, संसारमें वह स्थान नंदनवनके समान सुख शान्तिका भवन बन जाता है। पतिभक्ता प्राणतोषिनी सतीके पवित्र मुखमंडलको देखकर स्वामीके समस्त रोग शोक दूर हो जाते हैं, उसके मधुर सान्त्वना-वाक्योंसे पतिका दुःख-सन्तप्त हृदय शीतल हो जाता है। दरिद्रकी झोपड़ीमें रहकर भी सती अपने पतिको स्वर्गका आनंद लुटाती है। संसारमें ऐसा कोई कार्य्य नहीं जिसे सती स्त्री अपने पतिके लिये न कर सकती हो। वे पतिको पर्वतशिखरके समान उच्च अटल और अचल समझती हैं। स्वामी सतीके सहवाससे जिस निर्मल मधुर सुखका उपभोग करता है संसारमें उसकी तुलना नहीं है। सती स्त्रियां पतिको प्राणोंसे अधिक प्रिय और स्वर्गसे भी ऊँचा समझती है। जो स्त्री पतिसे द्वेष रखती है सती उसका मुख नहीं देखना चाहती। पतिके चरणोंकी सेवासे सती स्त्रिया जैसे दुर्लभ सुखका उपभोग करती है वैसा सुख दूसरेको नहीं मिल सकता। सती स्त्रियाँ पतिके हितकारी कामोंमें अपने प्राणोंको सदैव निछावर किया करती है। उनका मन पतिके चरणोंमें और नेत्र पतिके मुखकमलकी शोभा-

हैं। युवतियो, सावधान, ऐसे नराधमोंका कभी मुखं न देखना। क्योंकि ये लोग ही भली स्त्रियोंके सर्वनाशका कारण होते हैं। सदैव स्मरण रक्खो कि ऐसे नर पिशाचोंका हृदय साक्षात् नरककुंड है। ये चाहे ज्ञातिके हों या रिश्तेके हों, पर इनसे निर्दयी डांकुओंके समान सदैव डरती रहो। इसी तरह कई दुष्टस्वभावकी कुल्टा स्त्रियाँ भी होती हैं। वे बहू बेटियोंसे मिलकर उनका सर्वनाश करा देती हैं। ये ऊपरसे देखनेमें बहुत चतुर और अच्छी मालूम पड़ती हैं परन्तु वास्तवमें सोनेके घड़ामें विष भरा रहता है। उनकी करतूतें बहुत काली और हृदय भयंकर होता है। भले घरोंकी बहू बेटियोंको ऐसी दुष्ट स्वभावकी स्त्रियोंसे कभी बातचीत तक न करना चाहिये। नहीं तो दुष्टोंकी अपवित्रतासे तुम्हारा मन भी मैला हो जायगा और ऐसा होनेसे तुम्हारे हृदयमें पापरूपी पिशाचके प्रवेश कर जानेका भय है। साध्वी स्त्रियाँ असती दुराचारिणी स्त्रियोंको विषके समान त्याग देती हैं और उन्हें घृणाकी दृष्टिसे देखती हैं। पाप और पापीसे सर्वथा दूर रहना ही उचित है। गंदी, बुरे विचार उत्पन्न करनेवाली पुस्तकोंका पढ़ना, घृणित विषयोंपर बातचीत करना बहुत बुरा है। इसी तरह अतिशय सुखासक्ति स्त्रियोंके हृदयमें विषका सा काम करती है। इन्द्रियसंयम अर्थात् इन्द्रियोंको अपने वशमें रखना धर्मरक्षाका मुख्य उपाय है। जिसकी इन्द्रियां वशमें नहीं, उसका अधःपतन अवश्य होता है—वह पापके गढ़ेमें गिर जाती है। इन्द्रियोंकी चंचलता मनुष्योंको पशु बना देती है। तुम्हें अपनी मनोवृत्तियोंको पवित्र रखके चरित्रपर तीक्ष्ण दृष्टि रखना चाहिये, जिससे

उसमें किसी तरहके दोषका संचार न होने पावे। परमेश्वरमें अटल भक्ति रक्खो और अपने तथा पतिके चरित्रकी मंगल कामनाके लिये भक्तिभावसे ईश्वरकी आराधना करती रहो। अपने दोषोंको कभी मत छिपाओ। बल्कि उनसे बचनेके लिये सदैव पतिसे सिखापन लेती रहो। इसमें लज्जा और अनादरका कुछ काम नहीं।

सती स्त्रियोंका पराक्रम अपार और सतीत्वकी महिमा अपूर्व होती है सती स्त्रियोंकी दृष्टिमें अमृत और अग्नि दोनों रहती हैं। महाभारतमें लिखा है 'कि जब निर्मलहृदया सती दमयन्ती व्याकुल होकर रोती हुई वन वनमें अकेली पतिको ढूंढ़ रही थी उस समय एक पापी शिकारी बुरे अभिप्रायसे ज्यों ही उनके सामने आया त्यों ही दमयन्तीकी अग्निमयी दृष्टिसे वह जल कर भस्म हो गया।' सती स्त्रियोंकी पवित्र दृष्टि ऐसी ही होती है। सावित्रीने सतीत्वके तेजोमय प्रभावसे अपने मृतपतिको जिला दिया। देखो सतीत्वकी कैसी अद्भुत महिमा है। सती स्त्रियोंका कैसा अपूर्व प्रभाव है। सैकड़ों जिव्हाओंसे भी सती और सतीत्वके गुणोंका वर्णन नहीं हो सकता। सती स्त्रियाँ किस तरह घोर विपत्तियों और लालचोंसे अपनी पवित्रताकी रक्षा कर सकती हैं—यह बात सीताके वृत्तान्तसे भलीभाँति जानी जाती है। सीताने परम पराक्रमी रावणके वशमें पड़कर भी अपने सतीत्व-धनकी पूर्ण रक्षा की। रावणके हजार समझाने, भय दिखाने, विनय तिरस्कार तथा क्रोध करनेसे भी वे जरा विचलित नहीं हुईं। सीताने रावणके अतुल ऐश्वर्य, प्रबल पराक्रम और देवोंको वशीभूत करनेवाले प्रभुत्वको तिनकेके समान तुच्छ समझा। वह जानती थीं कि, 'पति एकके सिवाय दूसरा नहीं हो सकता। आत्मदान एक बार करके

देखनेमें लग रहते हैं। साध्वी स्त्रियां पतिकी प्रसन्नता देखकर जिस तरह सुखी और संतुष्ट होती है उसी तरह पतिके मलिन मुखको देखकर उनके दुःखका ठिकाना नहीं रहता।

बहिनो, जिस सतीत्वके बलसे तुम संसारमें मानवी देवी कहला कर पूजी और आदरकी दृष्टिसे देखी जाती हो उस अमूल्य सतीत्व धनकी रक्षा करनेमें तुम्हें सदैव होशयार और यत्नवान रहना चाहिये। चाहे मृत्यु भले ही हो जाय परन्तु सतीत्वका अपमान न होने पावे। सती स्त्रियोंको जलती हुई अग्निमें कूद कर जल मरनेमें कुछ भय और संकोच नहीं होता, परन्तु सतीत्वके पवित्र और उच्च सिंहासनसे एक बाल नीचे खिसकनेमें भी उनका हृदय काँप उठता है। अब इस जगह इस बातका विवेचन करना है कि सतीत्व धर्म किस तरह पवित्र रह सकता है।

बुरे विचार और बुरी इच्छाओंको मनमें स्थान न देना चाहिये। कारण बुरी भावनाके क्षण भर भी हृदयमें ठहरनेसे सतीत्वमें कलंक लगता है। सतीत्व ऐसी पवित्र वस्तु है कि उसमें एक बाल सा दोष मिल जानेसे वह कलंकित दिखने लगता है। हर तरहसे पतिको संतुष्ट रखना सतीत्वका लक्षण है। पतिसे जरा अप्रसन्नता बुरा बर्ताव या अनबन रखना सतीत्वको नष्ट करता है। पतिकी गैर-हाजिरीमें स्त्रीका किसी आमोद प्रमोद या उत्सवमें शामिल होना अनुचित है क्योंकि यह अधर्म है। पति तुमसे जो कुछ पानेका अधिकारी है यदि तुम उसे किसी दूसरेको देओ तो तुम व्यभिचारिणी कहलाकर निन्दा और घृणाके योग्य हो। पति पत्नी परस्पर एक

दूसरेसे धर्मपूर्वक जिसके पानेके अधिकारी हैं उसे किसी तरह दूसरेको देना ही व्यभिचार है। भगवान मनु कहते हैं कि "पतिसे छिपाकर उपहार या पठौनी भेजना, खेल तमाशेके मिस पर-पुरुषोंका अंग छूना, एकान्तमें बहुत समय तक एक आसनसे बैठना आदि भी व्यभिचार हैं।" अनेक स्त्रियोंमें ऐसी बुरी आदत होती है कि दो पुरुष पास पास आमने सामने बैठे हों तो वे उनके बीचमेंसे होकर जानेमें जरा नहीं रुकुचतीं। यह बहुत बुरी बात है। ऐसा करनेसे सतीत्वमें धक्का पहुँचता है। पर-पुरुषको कभी पतिसे श्रेष्ठ मत समझो। दूसरोंका सुख सौभाग्य तथा सौन्दर्य देखकर पतिको तुच्छ समझना नितान्त अनुचित है। जो ऐसा करती हैं वे यदि व्यभिचारिणी न भी हों तो भी वे सती नामके बिलकुल अयोग्य हैं।

स्वामीके चरित्र दोष या बुरे आचरणसे स्त्रियोंको यदि कुछ दुःख या आपत्ति उठाना पड़े तो ऐसे अवसरपर अनेक स्त्रियाँ कहने लगती हैं कि यदि हम इसके हाथ न पड़तीं या विधवा होतीं तो अच्छा था, आज इतना दुःख तो न सहना पड़ता। ऐसी स्त्रियाँ कदापि सती नहीं हो सकतीं। स्त्रियोंको ऐसे दोष शीघ्र छोड़ देना चाहिये। अनुचित आमोदप्रियता (मौजमजा) विलास वासनाको कभी हृदयमें स्थान न देना चाहिये। जिस सुखकी अभिलाषासे धर्म नष्ट होनेकी संभावना हो उस सुख को सती स्त्रियाँ नहीं चाहतीं। क्योंकि ये सब सुखकी अभिलाषाएं या बुरी भावनाएं ही मनुष्यको कुमार्गगामी बनाकर दारुण दुःख दिया करती हैं। कई स्त्रियाँ अनेक दुराचारी पापिष्ठ लोगोंकी ठगाईमें आकर पतित हो जाती

हैं । युवतियो, सावधान, ऐसे नराधमोंका कभी मुख न देखना। क्योंकि ये लोग ही भली स्त्रियोंके सर्वनाशका कारण होते हैं । सदैव स्मरण रक्खो कि ऐसे नर पिशाचोंका हृदय साक्षात् नरककुण्ड है । ये चाहे जातिके हों या रिस्तेके हों, पर इनसे निर्दयी डाकुओंके समान सदैव डरती रहो । इसी तरह कई दुष्टस्वभावकी *कुल्टा स्त्रियाँ भी होती हैं । वे बहू बेटियोंसे* मिलकर उनका सर्वनाश करा देती हैं । ये ऊपरसे देखनेमें बहुत चतुर और अच्छी मालूम पडती हैं परन्तु वास्तवमें सोनेके घडामें विष भरा रहता है । उनकी करतूतें बहुत काली और हृदय भयकर होता है । भले घरोंकी बहू बेटियोंको ऐसी दुष्ट स्वभावकी *स्त्रियोंसे कभी बातचीत तक न करना चाहिये । नहीं तो दुष्टोंकी* अपवित्रतासे तुम्हारा मन भी मैला हो जायगा और ऐसा होनेसे तुम्हारे हृदयमें पापरूपी पिशाचके प्रवेश कर जानेका भय है। साध्वी स्त्रियाँ असती दुराचारिणी स्त्रियोंको विषके समान त्याग देती हैं, और उन्हें घृणाकी दृष्टिसे देखती हैं । पाप और पापीसे सर्वथा दूर रहना ही उचित है । गदी, बुरे विचार उत्पन्न करनेवाली पुस्तकोंका पढ़ना, घृणित *विषयोंपर* बातचीत करना बहुत बुरा है । इसी तरह अतिशय सुखासक्ति स्त्रियोंके हृदयमें विषका सा काम करती है । इन्द्रियसंयम अर्थात् इन्द्रियोंको अपने वशमें रखना धर्मरक्षाका मुख्य उपाय है । जिसकी इन्द्रिया वशमें नहीं, उसका अध पतन अवश्य होता है—वह पापके गढ़ेमें गिर जाती है । इन्द्रियोंकी चचलता मनुष्योंको पशु बना देती है । तुम्हें अपनी मनोवृत्तियोंको पवित्र रखके चरित्रपर तीक्ष्ण दृष्टि रखना चाहिये, जिससे

उसमें किसी तरहके दोषका संचार न होने पावे। परमेश्वरमें अटल भक्ति रक्खो और अपने तथा पतिके चरित्रकी मंगल कामनाके लिये भक्तिभावसे ईश्वरकी आराधना करती रहो। अपने दोषोंको कभी मत छिपाओ। बल्कि उनसे बचनेके लिये सदैव पतिसे सिखापन लेती रहो। इसमें लज्जा और अनादरका कुछ काम नहीं।

सती स्त्रियोंका पराक्रम अपार और सतीत्वकी महिमा अपूर्व होती है सती स्त्रियोंकी दृष्टिमें अमृत और अग्नि दोनों रहती है। महाभारतमें लिखा है 'कि जब निर्मलहृदया सती दमयन्ती व्याकुल होकर रोती हुई बन बनमें अकेली पतिको ढूढ रही थी उस समय एक पापी शिकारी बुरे अभिप्रायसे ज्यों ही उनके सामने आया त्यों ही दमयन्तीकी अग्निमयी दृष्टिसे वह जल कर भस्म हो गया।' सती स्त्रियोंकी पवित्र दृष्टि ऐसी ही होती है। सावित्रीने सतीत्वके तेजोमय प्रभावसे अपने मृतपतिको जिला दिया। देखो सतीत्वकी कैसी अद्भुत महिमा है! सती स्त्रियोंका कैसा अपूर्व प्रभाव है। सैकड़ों जिह्वाओंसे भी सती और सतीत्वके गुणोंका वर्णन नहीं हो सकता। सती स्त्रियाँ किस तरह घोर विपत्तियों और लालचोंसे अपनी पवित्रताकी रक्षा कर सकती हैं—यह बात सीताके वृत्तान्तसे भलीभाँति जानी जाती है। सीताने परम पराक्रमी रावणके वशमें पड़कर भी अपने सतीत्व-धनकी पूर्ण रक्षा की। रावणके हजार समझाने, भय दिखाने, विनय तिरस्कार तथा क्रोध करनेसे भी वे जरा विचलित नहीं हुई। सीताने रावणके अतुल ऐश्वर्य, प्रबल पराक्रम और देवोंको वशीभूत करनेवाले प्रभुत्वको तिनकेके समान तुच्छ समझा। वह जानती थीं कि, पति एकके सिवाय दूसरा नहीं हो सकता। आत्मदान एक बार करके

पुनः नहीं किया जा सकता। वे जानती थीं कि, सतीत्व स्त्रियोंका जीवन और उनकी सार सम्पत्ति है। सतीत्वधनको खोकर जीते रहनेकी अपेक्षा मरना भला है। जिस स्त्रीको सतीत्व प्राणोंसे प्रिय, पूज्य, आदरणीय और अमूल्य है वह सती पापी और दुराचारियोंके वशमें रहकर भी पवित्र और निष्कलंक रह सकती है। शुद्ध आचरण करनेवाली सती स्त्रियोंका मन बहुत सौम्य और स्थिर होता है। उनका हृदय समुद्रके समान गंभीर, आकाशके समान अनन्त, फूलके समान कोमल तथा सतीत्वकी रक्षा करनेमें बज्रसे भी अधिक कठिन होता है। उनके साहसकी सीमा नहीं होती, धर्म और विपत्तिग्रस्त पतिकी रक्षाके लिये उनका साहस बहुत दृढ़ और प्रशंसनीय होता है। सत्साहसके प्रभावसे सीता और द्रौपदी अपने अपने पतिको चतुर मन्त्रीके समान उत्तम सलाह दिया करती थीं।

जिस तरह सती स्त्रियाँ अपनी पवित्रताको निष्कलंक रखकर सच्चा सुख और भगवानका आशीर्वाद पाती हैं; सब लोगोंकी प्रीति-भाजन बनकर पतिसेवासे इस लोकमें प्रातःस्मरणीय हो जाती हैं और परलोकमें अक्षय सुखकी अधिकारिणी होती हैं; उसी तरह कुलटा स्त्रियाँ पद पदपर तिरस्कार और दारुण आपत्ति भोगकर जीते ही मरेके समान हो जाती हैं। लोगोंकी ताड़ना और धिक्कारसे अधीर होकर संसार उन्हें अंधकारमय दिखने लगता है। पापोंका प्रायश्चित्त अवश्य होता है। पुराणोंमें लिखा है कि दुराचारिणी स्त्रियाँ नरककी भयंकर अग्निमें पड़कर अत्यंत कष्ट भोगती हैं। सती स्त्रियाँ स्वर्गके समान उच्च, पवित्र और

पूजनीय होती हैं । कुलटा स्त्रियाँ नरकके कीड़ोंसे भी तुच्छ अपवित्र, व्यभिचारिणी और संसारको कंटक स्वरूप हैं । ऐसी स्त्रियोंसे समाजको जो हानि होती है वह बड़ी भयंकर है । संसारमें सतीकी तुलना नहीं है, अनंत काल तक उसकी महिमा गाई जाती है । साध्वी स्त्रियोंका सुख सम्मान और शान्ति अटल है । कलंकिनी हमेशह दुःख अनादर और अशान्ति भोगा करती है । सती स्त्रियाँ सैकड़ो गांठे लगे हुए जीर्ण वस्त्र पहिननेवाले भिखारी पतिकी घासकी झोपड़ीमें रहकर पवित्र सुखका उपभोग करती हैं । दुराचारिणी स्त्रियाँ मनोहर ऊँचे महलोंमें रहकर सुवर्णके रत्नजड़ित आभूषणोंको पहिन सब तरहके राजसी सुख सामने रहने पर भी सच्चे सुखका मुख नहीं देख पातीं । सती स्त्रियाँ देवीके समान पूजनीया और असती शृगालिनी या कुत्तीके समान घृणा योग्य है । उनके दुःख और आपत्तिकी सीमा नहीं है वे हँसते हँसते पतिका सिर उड़ा सकती हैं । संसारमें ऐसा कुकर्म नहीं जिसे वे न कर सकती हों । नीतिकार चाणक्यने लिखा है कि, ' जिस घरमें सांप रहता हो उसमें रहना और दुष्टा स्त्रीका पती होना एक समान है । हजार सावधानी रखनेपर भी एक न एक दिन अवश्य प्राणोंसे हाथ धोना पड़ता है । '

इस विषयमें अब अधिक कहनेकी आवश्यकता नहीं है । अन्तमें सिर्फ इतना ही कहना है कि पवित्रता ही स्त्रियोंका जीवन है । प्राण देओ पर पवित्रताको मत छोड़ो । सतीको प्रत्येक काममें पवित्र रहना उचित है । पवित्रता रहित स्त्री और प्राणरहित शरीर दोनों एक समान है । परमेश्वर स्त्रियोंको ऐसी सुबुद्धि दे कि

उनका मन पवित्रताके लिये सदैव ललचाता रहे। एक बात और है जो स्वतः अपनी रक्षा करना जानती हैं वे ही सुरक्षिता हैं। अन्यथा संसार भरके लोग उनकी रक्षा नहीं कर सकते। भगवान् मनु कहते हैं कि "विश्वासी और हितकारी लोगोंसे रक्षित घरमें भी स्त्री सुरक्षित नहीं रह सकती। जो अपनी स्वतः रक्षा करती है वे ही सुरक्षिता हैं।" अतः तुम्हें स्वतः अपनी रक्षा करनेके लिये सदैव सावधान रहना चाहिये। जो स्त्रियाँ यह न जानती हों कि अपनी रक्षा कैसे करना चाहिये उन्हें पतिसे इस बातकी शिक्षा लेना चाहिये।

पतिसे बात चीत करना।

स्त्रीका पतिके साथ अनन्त सम्बन्ध है। जिसके साथ ऐसा दृढ़ सम्बन्ध है, जिसकी कृपा और श्रद्धा पर स्त्री-जीवनका समस्त सुख सौभाग्य निर्भर है, उसके साथ बहुत ही सोच समझकर बात चीत करना चाहिए। बहुतसी स्त्रियाँ पतिसे गंदी निर्लज्जताकी बातें करनेमें बड़ी प्रसन्न रहती हैं। दो एक झूठी असार या घृणित बातें कहकर स्वामीका मनोरंजन करनेकी अपेक्षा न करना ही सौगुणा उत्तम है। स्वामी और स्त्री एक हृदय हैं, वे प्रेमभाजन हैं ऐसा समझकर उनके साथ निर्लज्जोंके समान अश्लील बातें या ऐसा ही व्यवहार करना क्या स्त्रीका कर्त्तव्य है? नहीं, ऐसा नहीं है। पतिसे बात चीत करते समय सरलपन, नम्रता और धैर्यका सहारा लेना उचित है। अधिक बकवादसे पतिके अप्रसन्न हो

जानेका भय रहता है। ऐसी कोई बात मत कहो जिससे पतिके मनको कष्ट पहुँचे या वह बात कष्ट पहुँचानेका कारण बन जावे। पतिके साथ अशिष्ट बातचीत करना जैसा बुरा है, अशिष्ट व्यवहार या निर्लज्जता प्रकट करना भी वैसा ही निन्दनीय है।

कुछ स्त्रियाँ ऐसी होती हैं जो पतिसे बहुत कम बातचीत करती हैं। दस बातें पूछनेपर वे बड़ी कठिनाईसे एक दो बातोंका उत्तर दे सकती हैं। ऐसी स्त्रियाँ कभी पतिकी प्यारी नहीं हो सकतीं और उनके पति प्रायः कुराह चलने लगते हैं। क्योंकि स्वभावसे ही पुरुष स्त्रीके पास मधुर वार्तालाप करनेकी इच्छा रखता है। जब इस इच्छाकी पूर्ति स्त्रीसे नहीं होती तब वह इस सुखकी आशासे यहां वहां भटकता है। अतः हमेशह मीठे, नम्र और निष्कपट वार्तालापसे स्वामीके मनको प्रसन्न रखनेकी कोशिश करते रहना चाहिये। जब वे सांसारिक अनेक चिन्ताओंसे जलते हुए, शोकोंसे संतप्त, विषादयुक्त मुखसे या अपने जीवनको अंधकारके गहरे गड्ढे में डूबा समझ हताश होकर तुम्हारे पास आवें, तो उस समय तुम्हें मीठी और समझावटी बातोंसे उनके मनको शान्त करनेकी चेष्टा करना चाहिये। जिस तरह बने उनकी मनोवेदनाको दूर करना स्त्रीका परम धर्म है। जो स्त्रियाँ ऊपरी स्नेह दिखलाकर पतिको मनानेके लिये अधिक बातें करती हैं वे कभी पतिप्रेम नहीं पा सकतीं। एक न एक दिन उनका वाक्य-जाल छिन्न भिन्न होजाता है। 'हम तुमपर बहुत प्रेम करते हैं' अपने मुँहसे ऐसी बातें कहना उचित नहीं है—कामके द्वारा ही अपना प्रेम प्रकट करना उचित है। बातोंसे प्रेम बतलाना—कपट जाहिर करना है।

कुछ स्त्रियाँ ऐसी होती हैं कि वे स्वामीके बिल्कुल वशमें रहती हैं। पति जो कुछ कहे वे किसी तरहकी आपत्ति किये बिना उसे सिर झुकाकर मान लेती है। किसी विषयमें नम्रता पूर्वक अपनी सलाह देनेकी उनमें हिम्मत नहीं रहती। पति यदि कहे कि 'चोरी करना पाप नहीं है' तो वे बिना कुछ सोचे समझे कह देती है कि सत्य है। ऐसी हां में हां मिलानेसे किसी तरह पतिका चित्त प्रसन्न हो सकता है, परन्तु उसका हितसाधन नहीं हो सकता। जब हम संसारी हैं तो हमें नित्यके अनेक कामों तथा कई एक जरूरी बातोंमें स्त्रीकी राय लेना पड़ती है। ऐसी हालतमें यदि स्त्री बिना सोचे समझे हमारी 'हां में हां या ना में ना' मिलादे तो कितना अनिष्ट हो! पति किसी बातमें सलाह क्यों न ले अच्छी तरह उसकी भलाई बुराई सोचे बिना उत्तर देना योग्य नहीं। बिना सुने समझे किसी बातका सहसा उत्तर देना बड़ी मूर्खता और अविचारका काम है। पति किसी बुरे कामके करनेकी तुमसे राय लेवे तो तुमसे जहां तक बन सके निर्भय होकर उसके दोषोंको साफ साफ बतला दो। ऐसे समयपर यदि तुम चुप हो रहो और उसको बुरे कामोंके करनेसे न रोको तो मानो तुम स्वयं ही अपने हाथोंसे पतिका सर्व नाश कर रही हो। अनेक स्वार्थिनी दुष्टा स्त्रियाँ अपने सास, ससुर, देवर, ननद आदिके विरुद्ध स्वामीको भड़काया करतीं हैं। उनके राई से दोषोंको पहाड़ सा बनाकर पतिको उत्तेजित किया करती हैं। इस तरह पतिके निर्मल मनमें मैल पैदा कर देती हैं। बहिनो, सावधान, तुम ऐसा निन्दनीय और धर्मविरुद्ध काम करके मनुष्य समाजमें कलंकिनी मत बनो और न स्वामीके गृहसुखमें कांटे बोओ।

लज्जाशीलता ।

लज्जाशीलतासे स्त्रियोंकी सुन्दरता बढ़ती और प्रफुल्लित होती है। लज्जा स्त्रियोंके हृदयका एक बहुमूल्य सुन्दर गहना है। जिस स्त्रीके लज्जा नहीं है वह हजार सुन्दरी होनेपर भी कुरूपा है। उसे देख कर मनमें एक तरहका भय उत्पन्न होता है। सचमुचमें लज्जा एक ऐसी उत्तम वस्तु है कि उसके बिना स्त्रियोंके सारे गुण फीके पड़ जाते हैं। लज्जाहीन स्त्रियोंपर लोगोंकी आन्तरिक श्रद्धा और भक्ति नहीं होती। सब जगह देखा जाता है कि लज्जाहीन स्त्रियों-पर मनुष्यमात्रका स्वभावसे ही कुछ आंतरिक क्रोध और घृणा रहती है, और यह है भी ठीक। क्योंकि यदि ऐसी स्त्रियोंपर लोगोंकी आन्तरिक घृणा न रहती तो अवश्य ही स्त्रीजाति अपने एक बहुमूल्य रत्नको खो बैठती।

लज्जावती स्त्रियोंका लज्जायुक्त मुखकमल बहुत मधुर, पवित्र और मनोहर होता है। उसको देखकर मनमें एक तरहका पवित्र भाव उठता है और मन भक्तिभावसे भीग जाता है। लज्जावती स्त्रियोंका हृदय, पवित्र, कोमल और स्नेहपूर्ण होता है। पुरुषके समान स्वभाववाली लज्जाहीन स्त्रियोंका हृदय बहुधा अपवित्र और कठोर होता है। उनके मनके भाव, बातचीतके ढँग चाल ढाल आदि सभी बातें एक जुदा ही तरहकी रहती है। वे सहज ही निन्द-नीय आमोद प्रमोदसे प्रीति रखनेवाली होती है अतः उनका स्वभाव भी शीघ्र बिगड़ जाता है। यदि उनमें कुछ गुण भी हों तो

मलिन पड़ जाते हैं और उनके द्वारा लोगोंकी हानिके सिवाय लाभ होनेकी कुछ सम्भावना नहीं रहती। जिसे लज्जा नहीं ऐसी पंडितासे लज्जावती मूर्ख स्त्री श्रेष्ठ है। लज्जावती गुणवान् स्त्रीकी तो बात ही जुदा है। उसपर लोग श्रद्धा और प्रीति रखते हैं। लज्जा स्त्रीको गुणवती और साध्वी बना देती है। इसलिए जो स्त्रियाँ लज्जामें लजनूलता (लज्जावती-लता) के समान हैं, बुरी भावनाएँ उनके हृदयका स्पर्श नहीं कर सकतीं। वे लज्जाके पुरस्कारमें शीलता, दया-लुता, नम्रता सत्यप्रियता और परदु खकातरता आदि अनेक उत्तम गुण पाती हैं। वे ईश्वरकी कृपासे जैसा सुख भोगती हैं दूसरोंके लिए वैसा सुख बहुत ही दुर्लभ है। भगवान लज्जावती स्त्रियोंपर सदैव प्रसन्न रहते हैं। लज्जाहीन स्त्रियाँ जैसे लोगोंको वैसे ही भगवानको भी अप्रिय होती हैं। ऐसी स्त्रियाँ बुरे स्वभाव, कलह और अश्लील भाषण कर-नेवाली होती हैं इस लिये साध्वी स्त्रियोंको इनसे बातचीत करना भी उचित नहीं है।

लज्जावती स्त्रियोंका हृदय अत्यन्त शक्तिशाली और इन्द्रियाँ उनके वशमें रहती है। वह अपनी शक्तिसे दुराचारियोंको पद-दलित कर सकती हैं। बुरे मार्गपर लेजानेवाली आपत्तियाँ उनके समीप नहीं आ सकतीं। पवित्रतासे उनकी आन्तरिक भक्ति और प्रीति रहती है। संसारमें रहनेके लिये पवित्रता सबसे प्रथम चाहिये। जिस घरमें पवित्रता नहीं होती उस घरमें सुख शान्तिकी आशा करना वृथा है। जिन्हें लज्जा नहीं है ऐसी स्त्रियाँ पवित्र नहीं रह सकतीं और वे थोड़े ही लोभसे कलङ्कित हो सकती हैं। जिस स्त्रीमें लज्जा जितनी कम होती है उसमें दुस्साहस उतना ही अधिक होता

है। स्त्रियोंमें दुस्साहस पैदा होनेसे उनको पद पद पर आपत्ति और विघ्नका सामना करना पड़ता है इस लिये लज्जाहीनताको विषके समान छोड़ देना चाहिये; अन्यथा भलाई नहीं है।

बहनोई समधी आदि जिनके साथ हँसी की जा सकती है उनके साथ अनेक युवतियाँ समय समय पर ऐसी बेशरमी और निन्दित रसिकता प्रकट करती हैं कि जिसे देखकर मनमें क्रोध उत्पन्न होता है। यह बड़ी शरमकी बात है। निर्लज्जोंके समान कहने और सुननेके अयोग्य बातें कहकर हँसी दिल्लगी करना सर्वथा अनुचित है। कभी कभी जैसे पुरुष वैसी ही स्त्रियाँ दोनों एक समान हो घृणित हँसी दिल्लगी करनेमें कमर कस लेते हैं। यह कैसी बुरी बात है? ऐसी स्त्रियाँ शायद यह समझती हों कि अपनी वाचालता दिखानेमें पुरुषोंके निकट हमारी चतुराई प्रगट होती है। परन्तु यह उनकी भूल है। लज्जाहीन स्त्रियोंसे मुख खोलकर चाहे कोई कुछ न कहे तो भी वह मन ही मन उनसे नाराज अवश्य हो जाता है और उनके पीछे उनकी निन्दा करता है। यदि अपने सम्बन्धियोंसे हँसी दिल्लगी करना ही हो; तो करो, परन्तु हँसी करते समय खयाल रक्खो कि रसिकताकी मात्रा बढने न पावे और न कोई दूषितभाव ही हृदयका स्पर्श कर सके पवित्रता ही स्त्रियोंका जीवन सर्वस्व है। देखो, कभी किसी काममें पवित्रता न घटने पावे। उसके प्रति तुम्हारा दृढ़ अनुराग होना चाहिये। आशा है कि तुम वैसी घृणित हँसी दिल्लगी और आमोद प्रमोद न करोगी। यदि कोई स्त्री करती हो तो आगेके लिये ऐसी बातें छोड़ देनेके लिये हम नम्रतापूर्वक उपदेश देते हैं।

भारतवर्षकी स्त्रियोंमें एक और भारी दोष है वह यह कि वे विवाहके समय नाना तरहके सुननेके अयोग्य अश्लील गीत सीटने या गालियाँ गाती हैं। ये गीत ऐसे भद्दे और घिनोने होते हैं कि सुननेसे मनमें ग्लानि पैदा होती है। ऐसे गीत गानेवाली स्त्रियाँ अपने मनको स्वतः दूषित करती हैं दूसरोंको निर्लज्ज होनेकी शिक्षा देती हैं।

कहते हुए दुःख होता है कि स्त्रियोंकी लज्जा दिनोंदिन घटती जाती है। स्त्रियोंकी लज्जा ही शोभा, लज्जा ही सुन्दरता और लज्जा ही उनके सद्गुणोंकी जड़ है। नहीं समझ पड़ता कि वे अपने ऐसे रमणीय रत्नको क्यों जलाञ्जली दे देती हैं? क्यों उनकी ऐसे मति गति हो जाती है? हमारा विश्वास है कि इसमें मुख्य दोष पुरुषों और घरकी जेठी स्त्रियोंका है। घरकी लड़कियोंके लज्जाहीन होनेसे उनके कारण पैदा हुए विषमय फल घरके सब आदमियों-को भोगना पड़ते हैं। जिससे स्त्रियोंकी लज्जाशीलतामें अंतर न घटे उन बातोंपर स्त्री पुरुष दोनोंको बड़ी सावधानी रखना चाहिये।

निर्लज्जता कई तरहसे प्रकट की जाती है। जिसे लज्जा है उसकी चालचलन एक तरह की और जिसे लज्जा नहीं है—जो बेशरम है उसकी चालचलन एक और ही किस्मकी होती है। निर्लज्जता केवल बातचीतसे ही नहीं जानी जाती बल्कि चालचलनसे भी प्रकट होती है।

लज्जावती स्त्रियाँ कभी पुरुषोंके पास जानेकी इच्छा नहीं रखतीं, यदि उन्हें लाचार होकर जाना ही पड़े तो वे मुख नीचा करके अपने समस्त अंग और आभूषणोंको ढक कर, दबे पैरोंसे जाती हैं। यही लज्जावती स्त्रियोंके लक्षण हैं। शास्त्रोंमें लिखा है कि स्त्रियोंके

जल्दी जल्दी चलना, ओछा कपड़ा पहिनना और अपने अंग वा आभूषणोंको खुला रखना मना है । तुम्हें इस शास्त्रके उपदेशोंको अवश्य मानना चाहिये । स्त्रियोंको अश्लील वा जोर जोरसे बातें करना बिलकुल अयोग्य है । कई स्त्रियाँ जोर जोरसे बातें करनेमें अपनी बड़ाई समझती हैं । बहुधा इससे पुरुषोंको लज्जित होना पड़ता है । जब कभी कोई बड़ा आदमी घर पर बैठने आता है तो उस समय स्त्रियोंको जोर जोरसे बातें करना अपनी निर्लज्जताका परिचय देना है । ऐसा करनेसे घरकी बदनामी होती है । अनेक स्त्रियाँ कुछ अच्छे कपड़े या दो चार जेवर पहिनकर निर्लज्जता प्रकट करती हैं वे गलेमें हार या हाथोंमें आभूषण पहिनकर उन्हें ओढ़नीसे नहीं ढकतीं । ढाँके कैसे ? उनकी तो यह इच्छा रहती है कि सब लोग गहने और हमारी सुन्दरताको देखें और तारीफ करें । हमारे अंगोंको दूसरे देख रहे हैं इस ओर उनका ध्यान ही नहीं रहता । बहुधा जलसा तमाशे या विवाह शादियोंमें अनेक स्त्रियाँ दूसरोंके घर जाकर ऐसी ही लीला किया करती हैं । यह बहुत बुरी बात है । ऐसी चालचलनसे बड़प्पन प्रकट न होकर उल्टा कमीनापन जाहिर होता है । अनेक स्त्रियाँ ऊपरसे बहुत लज्जावती मालूम पड़ती हैं, परन्तु वास्तवमें वे बड़ी बेशरम होती हैं । वे आत्मीय जनोंसे तो बातचीत करनेमें लज्जासे दब जाती हैं, परन्तु किसी अपरिचित व्यक्तिसे बार्तालाप करनेमें उन्हें जरा भी शरम नहीं मालूम होती । अन्तमें कुल-ललनाओंसे यही प्रार्थना है कि तुम कभी निर्लज्जता प्रगट मत करो । अपनी चाल ढालमें इतनी सावधानी रक्खो कि जिससे तुम्हारे

वसन भूषण तुम्हारे सिरपर सवार न हो जावें। बहुधा सच्चरित्रा स्त्रियोंको भी कभी कभी चाल ढालके दोषसे कलंक लग जाता है। उदाहरणके तौरपर कहता हूं—मान लो कि तुम किसी कार्यके लिये अपने किसी रिस्तेदारके घर पहुँची। वहांपर तुम अपने बराबरीकी कई निर्लज्ज युवतियोंके साथ सज धज कर यहां वहां फिरने लगी। हमने माना कि तुम सती साध्वी हो परन्तु याद रक्खो कि दुराचारी लोगोंके निकट सतीत्वका मूल्य बहुत थोड़ा है। अवसर पाकर वे तुमपर अत्याचार करनेसे न चूकेंगे। इस लिए अपनी चाल ढालकी ओरसे बहुत सावधान रहो।

गुप्तभेद और बातोंकी चपलता।

'रहिमन' निजमनकी व्यथा, मन ही राखो गोय।
सुन अठिलैं हैं लोग सब, बांटि न लैहैं कोय॥

मनके जो भाव अत्यन्त गूढ़ होते हैं, जिनके प्रगट होनेसे बहुत नुकसान होनेका डर रहता है, उनको बहुत सावधानीसे छिपा रखना चाहिये। मित्रोंको भी अपने गुप्तभेद बतलाना उचित नहीं। क्योंकि उन बातोंसे तुम्हारे हिताहितका जितना सम्बन्ध और उनके प्रगट हो जानेसे तुम्हें जितना भय, चिन्ता और उद्वेग हो सकते हैं उतना दूसरोंको नहीं हो सकता। आज तुम विश्वास करके जिसको अपने मनकी गुप्त बातें सुनाती हो, क्या भरोसा है कि वह उन बातोंको तुम्हारे समान गुप्त रक्खेगा? इससे तुम यह न समझना

कि मनके गुप्तभाव पतिसे भी न कहना चाहिये । नहीं, स्वामीसे छिपाने योग्य स्त्रीके पास कोई बात ही नहीं है । क्योंकि स्वामी और स्त्री एक हृदय हैं । इस विषयमें पहले कहा जा चुका है इससे अब इस जगह दुहरानेकी आवश्यकता नहीं है । इस देशकी स्त्रियाँ किसी भी बातको अपने मनमें नहीं रख सकती हैं, यह उनका एक बड़ा अवगुण है । वे सोचती हैं कि अपनी बातें साफ साफ कह देना अच्छा और सिधाईका लक्षण है; कपटी मनुष्य ही अपने मनकी बातें छिपा रखते हैं । स्त्रियाँ इस तरहके अंध विश्वासमें पड़कर कभी कभी बहुत बुरे काम कर बैठती हैं और कभी कभी अपनी ऐसी सिधाई दिखानेमें या तो वे संकटमें पड़ जाती हैं या उन्हें बहुत अपमान सहना पड़ता है । यह कैसे दुःखकी बात है? इसीको 'अपने हाथों अपने पैरपर कुल्हाड़ी पटकना' कहते हैं ।

देखा जाता है कि अनेक स्त्रियाँ अपने घरकी गुप्त बातें पुरा पड़ौसकी साधारण स्त्रियोंसे भी कहनेमें कुछ संकोच नहीं करतीं । ऐसी स्त्रियाँ घरकी शत्रु है । एक तरहकी स्त्रियाँ और होती हैं उनका स्वभाव होता है कि यदि घरमें कोई अधिक खावे, काम कम करे किसीसे कोई बुरा काम बन पड़े, देवरानी जिठानी आदि चोरीसे अच्छी चीजें खावें या सास ससुरसे कड़ुवे वचन कहें तो वे इन सब बातोंको दूसरे घरकी बहू बेटियोंसे कहनेको बैठ जाती हैं । उस समय वे ऐसी सीधी बन जाती हैं कि घरकी जिन गुप्तबातोंके प्रगट होनेसे बहुत बदनामी होनेका डर रहता है उन बातोंको भी सुना डालती हैं । ऐसी स्त्रियाँ घरका सर्वनाश करनेवाली हैं ।

कोई कोई स्त्रियाँ ऐसी मूर्खा होती है कि अगर घरमें किसीसे मनमुटाव हो जावे तो उनके ऐसे दोष जिनके कहनेसे उनका मरना होता है दूसरोंसे कहनेमें नहीं चूकतीं। परन्तु वे यह नहीं सोचतीं कि इसमें हमारी ही बदनामी होती है—इसमें हमारी ही नाक कटती है। घरमें हजार लड़ाई झगड़ा और मनोमालिन्य हो जानेपर भी अपने घरके छिद्र प्रकट करना मनुष्यपन से बाहिर है। चाणक्यने कहा है कि, "बुद्धिमान् लोग धनका जाना, पछतावा, गृहछिद्र और अपने अपमानकी बात कभी दूसरोंसे न कहें।" इस जगह यह कहना आवश्यक है कि इस देशकी स्त्रियोंमें अधिक और अनावश्यक बातचीत करनेकी बहुत बुरी आदत है वे दूसरोंकी बातोंमें अपना समय खोया करती है। यह दोष इतना फैल गया है कि वे उसे छोड़ नहीं सकतीं। अधिक बातचीत करना एक बड़ा दोष है क्योंकि जो अधिक वाचाल होती हैं उनकी बातोंपर किसीका विश्वास नहीं रहता। अनेक स्त्रियाँ दूसरोंकी बातें करनेमें अधिक प्रेम रखती हैं। इस कारण-बहुधा उनका दूसरोंसे बिगाड़ हो जाता है। यह बहुत बुरी बात है। बुद्धिमती स्त्रियोंको इस तरह अपने घरका काम छोड़कर दूसरोंकी बातें करनेमें समय न खोना चाहिये। केवल इसी एक कारण से पुरा पड़ौसमें शत्रुता उत्पन्न हो जाती है और पुरुषोंके हेलमेलमें अंतर पड़ जाता है। स्त्री यदि चपल और अधिक बोलनेवाली हो तो समाजमें पतिको लज्जित और अपमानित होना पड़ता है। बुद्धिमान् पति ऐसी स्त्रियोंसे प्रसन्न नहीं रह सकते। जिस स्त्रीके दोषसे समाजमें पतिको नीचा देखना पड़े वह स्त्री पतिघातिनी

है। एक बात और है वह यह है कि स्त्रियाँ किसीका दोष सुनकर उसे छिपा नहीं सकतीं। अगर यमुना यशोदाकी कोई बात सुन पावे तो वह शीघ्र ही गंगाके पास जाकर कह देगी परन्तु साथ ही सावधान कर देगी कि बहिन! खबरदार इसे किसीसे कहना मत। फिर मौका पाते ही गंगा भी अपनी चपलताके कारण यशोदासे कह देती है कि बहिन! मैंने तुम्हारी एक बात सुनी है, यमुना तुम्हारे विषयमें मुझसे ऐसा ऐसा कहती थी, परन्तु खबरदार मेरा नाम मत लेना। यशोदा सुनते ही आग बबूला होकर लड़नेको आई और यमुनाको दो चार बातें सुनाकर चली गई। पीछे चुगलखोरीकी बात खुलजाने पर गंगा और यमुनाका प्रेम सम्बन्ध छूटकर शत्रुता हो गई यही लाभ हुआ! ऐसी गुप्त बातें जिनके खुल जानेपर स्वामी, सास, ससुर आदिकी बदनामी होनेका डर हो कभी किसीसे भूलकर मत कहो। इस उपदेशका तुम्हें सदैव स्मरण रखना चाहिये।

विनय और शिष्टाचार।

विनय स्वभावका एक उत्तम भूषण है। यह गुण चरित्रको बहुत ही मधुर और मनोहर बना देता है। नम्रवचन कहनेवाली स्त्रियोंके मधुर वचनोंसे अमृत बरसता है। उनके मधुर व्यवहारसे सब लोग संतुष्ट रहते हैं। विनीत और कोमल स्वभाववाली स्त्रियोंपर स्वभावतः भक्ति और श्रद्धा होती है। ऐसी स्त्रियोंसे जैसा पतिको संतोष और परिवारको आनन्द मिलता है वैसा किसी दूसरेसे नहीं

मिल सकता। संसारमें ऐसी स्त्रियाँ पूजाके योग्य हैं। वे जितनी नम्र होती हैं वह उतनी ही आदरके योग्य हैं। नम्र स्वभाववाली स्त्रियाँ गृहस्थोंके घरको प्रकाशित करती हैं। सास ससुर आदि कुटुम्बी और पड़ोसी भी उनसे इतने संतुष्ट रहते हैं कि वे उनकी विपत्तिको अपनी विपत्ति समझकर उनकी भलाईके लिये प्राणपनसे चेष्टा करते हैं।

विनयवती स्त्रियोंका कोई शत्रु नहीं होता। उनके मीठे और नम्र व्यवहारसे पाषाण हृदय भी पिघल जाता है। यदि भूलसे उनसे कुछ गल्ती हो जावे तो घरवाले उसे क्षमा कर देते हैं। विनय रहित स्त्रियोंको इस तरह क्षमा मिलना कठिन है। नम्रता हर समय अच्छी होती है। अनेक स्त्रियाँ बहुधा इसको भूल जाती हैं अथवा इसे समझती ही नहीं इस कारण अपने कुटुम्बके किसी आदमीसे कुछ नम्र होने या अपनी हीनता स्वीकार करनेमें वे अपनी मानहानि समझती हैं। ऐसा सोचना बुद्धिमानीका काम नहीं है। छोटे हृदयवाली स्त्रियाँ देवरानी, जिठानी या सास ननदसे सिर ऊंचा करके चलनेमें अपनी बड़ी प्रशंसा समझती हैं। यह उनकी गल्ती है। उनके साथ अहंकार दिखानेसे वे तुमपर प्रीति करना छोड़ देती हैं। तुम उनके आन्तरिक प्रेम और श्रद्धा पानेकी अधिकारिणी हो परंतु इस तरह अहंकार दिखानेसे तुम्हें वह कदापि नहीं मिल सकती। पति यदि बड़े ओहदेपर नौकर हो या हुकूमत वाला हो तो अनेक स्त्रियोंका दिमाग ऊंचा चढ़ जाता है, फिर वे किसीसे नम्र व्यवहार करना नहीं चाहतीं। यह भारी अवगुण है। बड़ेकी पत्नी होनेमें तुम्हें इतना बड़ापन नहीं मिल सकता, जितना

थके तुम्हारे विनीत और नम्र होनेमें तुम्हें मिल सकता है। आज कल कुछ स्त्रियाँ पढ़ लिखकर सास आदिसे भी नम्रता और विनयका व्यवहार नहीं करतीं, वे समझती हैं कि मेरे समान पढ़ी लिखी और बुद्धिमती स्त्री संसारमें दूसरी नहीं है। मनमें इस तरहके विचार उठते रहनेसे वे बिलकुल उजड्ड और अभिमानिनी हो जाती हैं और सास आदिको तुच्छ समझने लगती हैं। यह बहुत बुरी बात है। जिस घरमें क्रोध करनेवाली, बुरे वचन कहनेवाली, कठोर स्वभावकी सास और विनय तथा नम्र स्वभाववाली बहू होती है उस घरमें कभी लड़ाई झगड़ा नहीं हो सकता। बहू अपनी कठिन सास ननदोंको मधुर बचनों और नम्र व्यवहारसे मंत्रसे वशमें किए हुए सर्पके समान वशीभूत कर सकती है, उसकी चतुराईसे कभी झगडा नहीं होता। अगर सास बहूके प्रति बुरा व्यवहार करे तो भी गृहलक्ष्मी अपनी सुजनता और मीठी बातोंसे लज्जित करके उसे सुशील बना लेती है। याद रक्खो, तुम जिसके साथ अच्छा वर्ताव करो वह भी तुम्हारे साथ सुजनता प्रकट किये बिना न रह सकेगा। जिन स्त्रियोंका स्वभाव कठोर और भाषण अप्रिय होता है वे गृहसुखोंकी मानो जड़ खोदती है, वे राक्षसी है। ऐसी स्त्रियोंसे घरमें कोई प्रसन्न नहीं रहता। पति उनके बुरे बोल चालके कारण सदैव दुखी रहता है।

स्त्रियाँ स्वभावसे ही कोमल होती हैं। उन्हें कर्कश और रूक्ष बातें कहना उचित नहीं। कठोरभाषिणी स्त्रियाँ बडी भयंकर होती हैं। जो स्त्रियाँ अपने कर्कश वाक्योंसे दूसरोंके चित्तको खेद पहुंचाती हैं उन स्त्रियोंको शास्त्रोंमें त्याग देनेका उपदेश दिया है।

महाभारतमें लिखा है कि " बुलानेपर जो स्त्री क्रोधित होकर उत्तर देती है वह दूसरे जन्ममें कूकरका शरीर पाती है।" मीठे वचनोंमें एक जादू कैसी शक्ति रहती है उससे सब आदमी वशमें किये जा सकते हैं। विशेष कर मधुर वचनोंसे शत्रु मित्र हो जाते हैं। गोस्वामी तुलसीदासजी ने कहा है—

'तुलसी' मीठे वचनतें, सुख उपजत चहुं ओर।
वशीकरण इक मंत्र है, परिहर वचन कठोर॥

प्रियवादिनी स्त्रियोंको सारा संसार अनुकूल है, परन्तु जो कठोर भाषिणी हैं उनसे सब लोग और यहांतक कि पति पुत्र भी अप्रसन्न रहते हैं। उनपर कोई प्रीति नहीं करता और न उनके कामोंसे कोई संतुष्ट ही रहता है। बडे घरोंकी अनेक स्त्रियॉं कठोरभाषिणी होती हैं वे अपने अधीनस्थ कुटुम्बियों और नौकरों चाकरों पर सदैव वाग्वाणोंकी वर्षा किया करती हैं। ऐसा करना अनुचित है। कई स्त्रियॉं अपने परम पूज्य पतिको भी कडुवी बातें सुनानेमें कुछ भय वा सकोच नहीं करतीं। ऐसी स्त्रियॉं कभी पतिकी प्यारी नहीं हो सकतीं। कडुवे वचन कहके पतिके चित्तको दुखाना मनुष्योंका काम नहीं—यह काम भयंकर राक्षसियोंका है।

विनय गुणोंको उज्ज्वल करता है, हृदयको मधुर और उदार बनाता है इस लिए विनयकी शिक्षा लेना स्त्रियोंका एक प्रधान कर्त्तव्य है। घरके मुखिया और गुरुजनोंके आश्रयमें रहकर उनकी आज्ञाके अनुसार चलना स्त्रियोंका परम धर्म है। उनकी इच्छाके विरुद्ध चलनेका दुस्साहस न करना चाहिये यह विनयका मुख्य

लक्षण है । अपनी बड़ाई और दूसरेकी निन्दा करके कभी अविनय-का परिचय मत दो । ढिटाई उद्धत स्त्रियोंका एक बड़ा दूषण है। पतिके समीप कभी ढिटाई प्रगट मत करो ।

स्त्रियोंको शिष्टाचारिणी होना बहुत जरूरी है । जो विनय तथा नम्रताका व्यवहार करती हैं शिष्टाचार उनके पीछे पीछे चलता है । जिसका जैसा आदर सन्मान करना उचित है उसका वैसा ही आदर सन्मान करो । सास, ससुर, स्वामी, ननद, जिठानी आदि पूजनीय जन तुम्हारे समीप आदरणीय है, कभी भूलकर भी उनका अनादर मत करो । यदि तुम अपनी दासीसे भी शिष्टाचार प्रकट न करोगी तो इसमें तुम्हारी ही नीचता प्रकट होगी । एक आदमी कुछ कह रहा हो उसकी बात पूरी होनेके प्रथम ही अपनी बात शुरू कर देना अशिष्टता है । इस देशकी स्त्रियोंमें यह दोष अधि-कतासे पाया जाता है—दूसरेकी बात काटकर अपनी कथा शुरू कर देती हैं । इस तरह किसीकी बात साफ साफ समझमें नहीं आती । जहाँ दस पांच स्त्रियाँ बैठी हों वहां एक खासा बाजार सा लग जाता है । पहलेसे जो कह रहा है उसकी बात जब तक पूर्ण न हो जावे तब तक मौन रहना शिष्टाचार है । किसीसे ढिटाई प्रगट मत करो । जब तुम किसीसे बातचीत कर रही हो तो धीरे धीरे और साफ साफ कहो । बातचीतके समय चंचलता प्रकट करना बड़ी भारी मूर्खता है । शिष्टाचारसे परिजनवर्गको संतुष्ट रखना चाहिये । गुरुजनोंके मुँहकी ओर देखकर बातचीत करना अनुचित है । नीचा मुँह करके बातचीत करना विनय और शिष्टा-चारका लक्षण है ।

स्त्रियोंका हृदय।

स्त्रियोंका हृदय अत्यंत कोमल और स्नेह तथा ममतासे पूर्ण होता है। परन्तु इस उत्तम गुणके होने पर भी उनके हृदयमें एक भारी दोष रहता है; वही दोष कभी कभी उनके सर्वनाशका कारण हो जाता है। स्त्रियोंका हृदय पानीकी लहरके समान अति वेगशाली और दुर्निवार होता है। इसी तरह उनकी विचारशक्ति बहुत निर्बल और मानसिक बल भी अति सामान्य होता है। हृदयके आवेग, विचारशक्ति-की दुर्बलता और मानसिक बलकी अति क्षीणतासे स्त्रियोंकी जैसी हानि होती है वैसी हानि किसी दूसरे कारणसे हो सकती है या नहीं ? इसमें सन्देह है। देखा जाता है कि स्त्रियाँ अपने हृदयकी प्रबलतासे कलंक-सागरमें गोता लगाने और पिशाचिनीका रूप धारण करनेमें कुछ भी नहीं डरतीं। इसी कारण दुष्टा स्त्री नीचसे नीच और नरककी रा-क्षसियोंसे भी निकृष्ट है। ऐसा कोई कुकर्म नहीं जिसे दुष्टा न कर सकती हो। इसी लिये शास्त्रकारोंने दुष्टा स्त्री और विषधर सर्पमें कुछ अन्तर नहीं बतलाया, अवसर पड़नेपर दुष्ट स्त्री अपने पतिको मार सकती है। कारण कि उनका मानसिक बल इतना क्षीण और निकम्मा हो जाता है कि अचानक उत्तेजनाके वश इस तरहके नीच कामोंमें प्रवृत्त होनेसे वे अपने हृदयके वेगको बिल्कुल नहीं रोक सकतीं और न आत्मसंयम ही कर सकती हैं। अतः स्त्रियाँ यदि अच्छी हुईं तो स्वर्गकी रानी और बुरी हुईं तो नरकके कीटोंसे भी निकृष्ट हो जाती हैं। और एक बार स्त्री-चरित्र दूषित हो जावे या उनके हृदयमें पाशविक प्रकृति अपना कुछ अधिकार जमा ले, तो फिर उनसे रक्षा पाना कठिन हो जाता है। चाहे उन्हें मारो, बाँधो या काटो मे

किसी तरह कुमार्ग नहीं छोड़ सकतीं, किसी तरह उनके हृदयका बेग नहीं थमता। उस समय वे तिनकेके समान पापके पूरमें बह जाती हैं; कितनी ही लज्जा तिरस्कार और आपत्ति क्यों न हो वे उसे सह लेती हैं परन्तु कुवासना और पाप प्रवृत्तिको नहीं छोड़ सकतीं। इस लिये वे स्नेह ममता आदि गुणोंसे भूषित होनेपर भी हृदयमें विष धारण करती हैं; स्त्री—स्वभावके अनुकूल गुणोंसे सुशोभित होनेपर भी आत्मसन्मान और कर्त्तव्यको एक दम भूल जाती हैं। उस समय आगामी घोर विपत्ति उन्हें भय नहीं दिखा सकती, अनादर और अपयशकी निष्ठुर पीड़ा उनके कोमल हृदयको कुछ भी पीड़ित नहीं कर सकती। जो स्त्री एक बार कुमार्गगामिनी हो जाती है फिर वह न कलंकसे डरती है, न समाजकी परवा करती है और न मृत्यु-भय ही उसे सता सकता है। अपनी प्राण-प्रिय संतानका मोह छोड़नेमें उसे कुछ भी कठिनाई या दुःख नहीं होता—इसका मुख्य कारण हृदयका आवेग है। इस सर्वनाशी हृदयके आवेगको दबानेमें सदैव यत्नवती रहना स्त्रियोंका आवश्यक कर्त्तव्य है। इस जगह कोई कोई कह सकते हैं कि ये बातें स्वभाव-सिद्ध होती हैं स्वभावके ऊपर किसीका वश नहीं चलता। परन्तु हम इस बातका समर्थन नहीं कर सकते। हमारा विश्वास है कि यदि वे स्वभाव-सिद्ध भी हों तो भी उनपर मनुष्यका हाथ है। योग्य रीतिसे शिक्षा प्राप्त करने और सुरक्षित रहनेसे स्त्रियाँ उन दोषोंसे बहुधा बच सकती हैं। अगर स्त्रियोंके हृदयका ऐसा प्रबल प्रवाह धर्मकी ओर झुकाया जावे तो उनके लिये स्वर्ग बहुत ही सहज और समीपवर्ती हो सकता है।

स्त्रियाँ अपने हृदयके प्रबल आवेगके कारण पुत्र कन्या आदि प्रेम पात्रोंको प्राणोंसे अधिक प्रिय और सर्वगुण सम्पन्न समझती हैं। वे कितना ही दोष क्यों न करें परन्तु वह उनकी नजरमें नहीं चढ़ता। उन्हें जो अप्रिय है वह सुन्दर होने पर भी कुरूप और गुणवान् होनेपर भी गुणहीन जँचता है। किसी कारणसे यदि वे किसीपर अप्रसन्न हो जावें तो उसमें सैकड़ों गुण रहनेपर भी वे उसे पानीमें देखने लगती है। दो दिन पहले जिनके गुणोंकी पक्ष-पातिनी थीं देखते हैं कि, आज वे उनकी दोषग्राहिणी होकर शत-मुखसे निन्दा कर रही है। स्त्रियाँ अपने मनकी इस दुर्बलताको छोड़ नहीं सकतीं। यह बात अच्छी नहीं है। इस तरह मनकी दुर्बलतासे वे शत्रुसे भी अपनी भीतरी बातें जाहिर कर देती हैं। स्त्रियाँ व्यक्ति-विशेषका सामान्य गुण देखकर या उसमें थोड़ा निजी रिश्ता निकलनेपर आनंदमें मग्न हो जाती हैं और फिर उसीका एक साधारण दोष या परभाव विदित होनेपर उन्हें मन ही मन अप्रसन्न और क्रोधित हो आनेमें भी विलम्ब नहीं लगता। बहुधा देखा जाता है कि क्षणभर पहले जिसे वे अपना शत्रु समझती थीं उसीको अब परममित्र और हितू समझ कर आत्मसमर्पण कर देती हैं। उससे 'तुम हमारे भाई हो,' 'तुम हमारे बन्धु हो,' 'तुम हमारे सब कुछ', 'तुम्हारे समान हमारा और कोई आत्मीय नहीं है,' इस तरह मीठी मीठी बातें कहके पहलेकी शत्रुताको मिटानेकी चेष्टा करती हैं। ऐसा करनेसे कभी कभी भारी अनिष्ट हो जाता है परंतु इस ओर न उनका ध्यान रहता है और न वे कुछ सोचती हैं। उनके सभी शत्रु हैं, सभी मित्र हैं। कई जगह देखनेमें आता है कि वे

शत्रुको मित्र समझ कर अपने हाथों अपना सर्वनाश कर बैठती हैं। आज जिसे शत्रु समझ कर बुराइयोंसे जिसका हृदय बेध डालती हैं कल उसीको मित्र मानकर मीठे बचनोंसे उसपर अमृत बरसाती है।

स्त्रियोंका हृदय जैसा आवेगमय वैसा ही विचारशक्ति हीन रहता है। वे जब जिस विषयके लिये ललचाती हैं, जब जो लहर उनके मनमें उठती है, वे उसे जब तक पूर्ण न कर लें तब तक उन्हें चैन नहीं पडती, व्याकुल हो जाती हैं। संसार रसातलको जाय, हजारों विपत्तियाँ और नुक़सान भले ही हों तो भी उनकी इच्छा पूर्ण होना चाहिए। हजार समझाओ, हजार रोको, युक्तिपूर्वक उसके दोष दिखाओ परन्तु वे कुछ नहीं सुनतीं, प्राण भले ही जाँय, पर उनके मनकी वासना पूर्ण होना ही चाहिये। युवतियो, तुम अपने मनमें सोचो कि इस तरह इच्छाके वशीभूत होकर जो चाहो वही मिले, ऐसा होना बहुत कठिन ही नहीं बरन् असंभव है। स्त्रियाँ यह नहीं सोचतीं कि कर्त्तव्य और इच्छा एक ही वस्तु नहीं है। ये इच्छाके वशीभूत होकर कर्त्तव्य और धर्मको पैरोंसे रोंधा करती है। ये सुख और विलासवासनाकी अत्यत अधिकताके कारण स्वामीका सर्वनाश कर बैठती है। स्त्रियाँ न समय देखती है, न अपनी हालतका विचार करती हैं, न अनुरोध विरोध और विघ्न बाधाओंको ही मानती है, जिस समय जो इच्छा उठती है उसकी पूर्तिके लिये पागल बन जाती हैं। देखो, राजनंदिनी सीता परम प्रतापी राजा दशरथकी वधू और श्रीरामचन्द्रजीकी पत्नी होकर भी सोनेके मृगको देख उसका लोभ न रोक सकी। सोनेका मृग होना कभी सम्भव नहीं है, वह तो राक्षसोंकी करामात थी। इसका कुछ विचार न

कर सीताने रामचन्द्रसे आग्रहपूर्व्वक कहा—" इस सोनेके मृगका चर्म ला दो।" निदान सीताका आग्रह देख कर रामचन्द्रजी उस सुवर्ण-मृगको मारनेके लिये चले गये। यहां पर दुष्ट रावणने कुटीर-में सीताको अकेली पाकर हरण किया। सीता दुष्ट रावणके हाथमें पड़कर गरुड़के नखोंसे विदीर्ण हुई नागिनीके समान विलाप करने लगी। सीताके विलापसे सारा वन करुणासे कांप उठा! वनभूमि आसु-ओंसे भीग गई! उसी दिनसे सीताके सारे सुखोंपर पानी फिर गया और दुखोंने आ घेरा। देखो, सोनेका मृग पानेके लालचने सीताको कैसी विपत्तिकी कीचड़में फँसा दिया। उन्होंने अपने कर्त्तव्यको भूलकर इच्छाके वशमें हो कैसा अनिष्ट किया! उन्हें किस बातकी कमी थी! वे स्वय पूर्ण लक्ष्मी थीं, उनका जन्मसे राजसुखोंमें पालन हुआ था, सुवर्ण उनके लिये तिनकेके समान था वे सोनेके मृगको देखकर भूल गई और उसकी बनावटको न समझ सकीं! हृदयके आवेगके कारण इच्छाके वशीभूत होकर वे अपनेको एक दम भूल गई और स्वतः अपने मुखसे अपने आपत्तिके दिनोंको बुला बैठीं। यदि वे इस तरह अपनी इच्छाके हाथ न बिक जातीं तो उन्हें ऐसी दारुण विपत्ति न उठाना पड़ती।

वर्तमान समयमें एकान्नवर्त्तिता अर्थात् एक कुटुम्बके अनेक लोगोंके एक साथ रहनेकी पद्धति प्राय. उठती जाती है। इसका मूल कारण स्त्रियोंका हृदय है। पहले कह चुके हैं कि स्त्रियाँ अपने हृदयकी अचानक उत्तेजनाके वशीभूत होकर स्वजनोंके सामान्य गुणोंसे सन्तुष्ट और सामान्य दोषोंसे रुष्ट हो जाती हैं। इसी दोषके कारण अगर परिवारके किसी आदमीसे उनका

मनमुटाव हो जावे, तो वे उससे बैर भँजानेकी गरजसे नाना तरहके बुरे उपायोंका सहारा लेती हैं। पतिको अलग हो जानेकी सलाह देती हैं, यदि पतिने उनकी बात न मानी तो वे रात दिन रोया करती हैं, बिना जल ग्रहण किये उपवास करती हैं। फिर क्या है उनके मुखपर हँसीका नाम निशान नहीं रहता, मनमें सुखको स्थान नहीं मिलता, केवल हृदयमें एक चिन्ता, एक ज्वाला, एक ध्यान, एक भावना, एकही रूपसे धधका करती है। इसी कारण बुद्धिमान कहते हैं कि स्त्रियोंकी बुद्धिसे प्रलय उपस्थित हो जाता है। "स्त्रीबुद्धिः प्रलयङ्करी।"

पाठिकाओ, तुम अपने हृदयकी ओर देखो, ये सब दोष तुम्हारेमें हैं। तुम्हारे हृदयमें ये दोष पानीके झरनोंके समान एक ओर बह रहे हैं। खबरदार प्राण रहते कभी न्याय मार्गका उल्लंघन मत करो अपने कर्त्तव्य पथको मत भूलो, धर्मकी ओर देखकर, अपनी अवस्था और समयका विचार कर, अपने बड़प्पनके अनुसार धैर्य, गंभीरता और स्थिर चित्तसे काम करो। बिना समझे बूझे मनकी एका-एक उत्तेजनासे समयका विचार किये बिना कोई काम मत करो। हमेशह अपने मनको ज्ञानके द्वारा माँजते और धर्मके द्वारा शासित करती रहो। किसी तरहकी मनमुरादीको हृदयमें स्थान मत दो। इच्छाकी प्रबलता, मनकी दुर्बलता और लालसाकी प्यासको त्यागनेमें सदैव कमर कसे रहो। यह बात सदैव ध्यानमें रखो कि अधिकता किसी बातकी अच्छी नहीं होती—"अति सर्वत्र वर्जयेत्"

पड़ोसियोंसे व्यवहार।

एक परिवारके आदमियोंमें मनमुटाव हो जानेसे संसार जिस तरह विषमय हो जाता है, उसी तरह पूरा पड़ोसमें बिगाड़ हो जानेसे भी अनेक अनेक उपद्रव और झगड़े हुआ करते हैं। जिनके साथ नित्य उठना बैठना पड़ता है उनके साथ वैरभाव होनेसे सुखकी आशा करना वृथा है। इस लिए पड़ौसियोंके साथ लड़ाई झगड़ा करना उचित नहीं है। कई झगड़ालू और उजड्ड स्त्रियाँ मामूली बातोंपर पड़ौसिनोंसे झगड़ा किया करती हैं। यह उनकी बड़ी गलती है। अनेक स्त्रियाँ ऐसे नीच स्वभावकी होती हैं कि अगर किसीके घरकी गाय आकर अनाजमें एक मुहँ मार जावे या घासका कौर खा जावे तो वे उसी समय आकाश पाताल एक कर डालती हैं। कोई छोटा बच्चा उनसे कुछ कहे या नुकसान कर दे तो वे उसीसे लड़नेको तैयार हो जाती है। इस तरह बिल्कुल सामान्य बातोंपर पड़ौसिनोंसे कलह मचाना बहुत ही अनुचित है। पड़ौसियोंसे हेलमेल न रखनेसे अक्सर आपत्तिमें फँसना पड़ता है। जो अपनी उजड्डतासे पड़ौसियोंको तुच्छ समझती है, उनकी विपत्तिमें सहायता और आनंदमें संतोष प्रकट नहीं करतीं, उनकी बड़ी दुर्दशा होती है। ऐसी स्त्रियोंको बुद्धिमती और दूरदर्शिनी नहीं कह सकते। बूढ़ी पड़ौसिनोंका आदर सन्मान करना उचित है, उनके सामने कभी निर्लज्जता, अशिष्टता और बेअदबी मत करो। क्योंकि वे तुम्हारी सासकी बराबरीकी हैं। जो तुम्हारी बराबरीकी हों

उन्हें बहिनके समान समझकर अपने मधुर व्यवहार और नम्रवचनोंसे प्रसन्न रक्खो । उन्हें कभी घमंड मत दिखाओ । उनके लड़के बच्चोंको अपनी संतानके समान समझो । अनेक स्त्रियाँ दूसरोंके लड़कोंपर केवल ऊपरी प्रेम दिखाकर उनकी माताकी प्रियपात्री बनना चाहती हैं–ऐसी कपट प्रीति रखना उचित नहीं । कपटता बहुत ही निन्दनीय है । इसी तरह पड़ोसियोंकी बदनामी करना भी अनुचित है।

युवतियो ! तुम उनसे इस तरहका व्यवहार करो जिससे वे तुमपर रुष्ट न होने पावें । अनेक स्त्रियाँ पड़ोसिनोंसे बातचीत करते समय बहुधा अपने पतिके दोषोंको कहा करती हैं । तुम कभी दूसरोंसे पतिके दोष मत कहो क्योंकि पति तुम्हारा गुरु है और गुरु-निन्दा करना महापाप है। कई स्त्रियाँ मनकी बात लेनेके लिये मीठी मीठी बातें कहके भुलाना चाहती है । तुम्हें ऐसी स्त्रियोंसे खूब सावधान होकर बातचीत करना चाहिये। ऐसी स्त्रियाँ केवल द्वेषकी बातें पूछनेके लिये ही आती है।

पड़ोसके पुरुषोंसे कैसा व्यवहार रखना चाहिये–अब इसी विषय का वर्णन करता हूं । जो पुरुष पतिसे उमरमें अधिक हो उसका उनके बड़े भाईके समान आदर सन्मान और भय रखना चाहिये । तुम सावधान होकर इस तरह चलो जिससे वे तुम्हें लज्जाहीन न समझें । कभी उनके सामनेसे मत निकलो और सदैव ऐसी होशियारी रक्खो कि जिससे वे तुम्हें बिना किसी खास कारणके न देख सकें। जो पतिसे बहुत छोटे हैं उनपर प्रेम रक्खो और किसी तरह उनके मनको मत दुखाओ । इनके सामने भी निर्लज्जता प्रगट

मत करो । जरूरी बातोंके सिवाय उनसे अधिक बात न करना चाहिये। इस बातका सदैव ध्यान रक्खो कि जिससे वे तुम्हारा किसी बातमें अपमान न करने पावें। कोई २ धनका घमंड रखनेवाली स्त्रियाँ पड़ौसकी गरीब स्त्रियोंको तुच्छ और घृणाकी दृष्टिसे देखती हैं। उनके साथ बैठने उठनेमें वे अपना अपमान समझती हैं—इन बातोंसे केवल नीचता और कमीनापन ही प्रकट होता है। गरीब पड़ौसिनोंकी यथाशक्ति सहायता करना और आपत्तिके समय उनसे सहानुभूति रखना उचित है। यदि धनके अभावमें वे कोई चीज तुमसे उधार माँगने आवें तो तुम्हें अपनी शक्तिके अनुसार उन्हें विमुख नहीं फेरना चाहिये। कोई ऐसी बात न कहना चाहिये जो उनके हृदयपर असर कर जावे। अनेक स्त्रियाँ गरीब स्त्रियोंसे लड़नेके समय अपने धनका घमंड बतलाकर बहुत बेजा बातें कहा करती हैं। ऐसी बातें करना मूर्खता है; क्योंकि सबकी अवस्था हर समय एक सी नहीं रहती। आज जो धनका अहंकार करता है कल वही द्वार द्वार पर भीख मांगते देखा जाता है। धन और जनका अभिमान करना वृथा है।

जातिवालोंके साथ हेल मेल और अच्छा बर्ताव रखना उचित है। उनमें कभी लड़ाई झगड़ा मत करो। जातिमें शत्रुता होनेसे अनेक आपत्तिएं आ जाती हैं। जिसका जातिमें प्रेमभाव रहता है उसका सब जगह आदर सन्मान और दबाव रहता है। दुःख सुखमें सब लोग सहायक रहते हैं। जातिवालोंसे सद्भाव रखनेमें जितना सुख और उपकार होता है उसका वर्णन करना कठिन है। तुम अपने पुरा–पड़ौसियों और जातिवालोंसे प्रेम सम्बन्ध बढ़ानेका सदैव उद्योग करती रहो।

गृह-सुखके शत्रु ।

गृहसुखके जितने शत्रु हैं उनमें कलह सबसे श्रेष्ठ है । कलहसे घरका सर्वनाश हो जाता है । सचमुचमें जिस जगह कलह है उसी जगह दरिद्रताका निवास रहता है । जिस घरमें सदैव वितंडा और झगड़ा होता रहता है उस परिवारमें कभी सुख शान्ति नहीं हो सकती–लक्ष्मीकी ऐसे घरपर सदा ही कुदृष्टि रहती है । प्रायः बिना पढ़ी लिखी स्त्रियाँ लड़ने भिड़नेमें बहुत चतुर होती हैं; वे साधारण बातोंपर झगड़ा बढ़ाकर महाभारत मचा देती हैं । क्षमा और धीरज इन दो गुणोंके न होनेसे कलह उत्पन्न होता है । कटुवचन कहनेवाली और कलह करनेवाली स्त्रियाँ पतिको साक्षात् विपद् स्वरूप हैं । बहुधा इनके दोषसे परिवारका सर्वनाश हो जाता है । झगड़ालू स्त्रियोंमें सैकड़ों गुण रहनेपर भी वे " कौएके गलेमें मणिमाला " के समान हँसीके योग्य हैं । और वे गुण उन स्त्रियोंकी ठीक वैसी ही शोभा बढ़ाते हैं जैसे कि, कौएके गलेकी मणिमाला । ऐसी स्त्रियाँ किसीको भली नहीं होती, सास, ससुर, पति, देवर आदि कोई भी उन्हें स्नेहकी दृष्टिसे नहीं देखता । शान्तस्वभाव सबको प्रिय है । जो स्त्रियाँ हमेशा 'दांता किटकिट' करनेमें अपना समय बिताती हैं वे कभी शान्त स्वभावकी नहीं हो सकतीं, उनका स्वभाव बहुत तेज और मनमुरादी हो जाता है । उनके मनमें सुख और चैनको जगह नहीं मिलती हमेशह अशान्तिकी आग जला करती है । इसका फल यह होता है कि कलहकी कृपासे उनके मनकी प्रसन्नता सदाके

लिए बिदा माँग जाती है। ऐसी स्त्रियाँ अपने कुटुम्बियोंसे हिलमिल कर सुख शान्तिसे नहीं रह सकतीं। क्योंकि उनको कटु और कर्कशवचनोंके बोलनेकी आदत पड़ जाती है। लड़नें भिड़नेमें कटु वचनोंकी बहुत आवश्यकता पड़ती है; क्योंकि इसके बिना प्रतिपक्षीको हरा देना कठिन काम है। गाली देना, कड़वे और कर्कश-वचन कहना ही कलह करनेवाली स्त्रियोंके मुख्य हथियार है; यही उनकी अमोघ शक्ति है। कटु वचनोंके साथ साथ झूठी बातें लाचार होकर कहना ही पड़ती हैं; इससे यह बात सहज ही जानी जाती है कि, लड़ने भिड़नेवाली स्त्रियाँ सहज ही कठोर और झूठ बोलनेवाली होती हैं। जिन स्त्रियोंको क्रोध अधिक होता है और जो क्षमा करना नहीं जानतीं, ऐसी स्त्रियाँ ही लड़ाई झगड़ोंसे अधिक प्रीति रखती हैं। झगड़ालू स्त्रियोंका स्वभाव ऐसा बुरा होताहै कि वे समय असमय कुछ नहीं देखती, छोटी छोटी बातोंपर भी झगड़ा किये बिना उन्हें चैन नहीं पड़ती। इनमें यह विशेषता रहती है कि वे लड़ाईमें कभी नहीं हारतीं। यदि दुर्भाग्यसे हार जावें तो क्रोधके मारे उनको रात दिन रोने रोते जाता है आसुओंसे जमीन भींग जाती है परन्तु किसी तरह उनके मनका क्रोध शान्त नहीं होता। उस समय उनके मनकी दशा ऐसी बुरी हो जाती है कि वे आत्मघात करनेसे भी नहीं डरतीं। ऐसी दशामें अनेक स्त्रियाँ कपड़ोंको फाड़कर या आभूषणोंको तोड़ फोड़कर अपने क्रोधकी हद दिखाती हैं बारंबार अपनी छाती और सिरको पीटकर अपने दुर्भाग्यकी निन्दा करती हैं। ऐसी स्त्रियाँ ही घरको बदनाम करती हैं।

एक और बड़ा दोष यह है कि उनकी लड़ाईके समय कोई क्यों न आवे वे उससे विपक्षकी बुराई कहे बिना नहीं रहतीं। यहां तक कि जिन बातोंसे घरके लोगोंकी बदनामी प्रकट होती हो उन्हें भी कह डालती हैं। वे दो एक मनगढंत झूठी बातें मिलाकर विपक्षकी बुराई प्रकट करनेमें कमी नहीं करतीं। लज्जा उनके पास नहीं आने पाती—ऐसी कोई बात नहीं जिसे वे न कह सकती हों। हमारी जान पहिचानकी एक स्त्रीका स्वभाव ठीक ऐसा ही है। उसमें इतना अधैर्य और क्रोध है कि किसीसे झगड़ा शुरू होते ही वह पागल बन जाती है। जो मुँह आता है वही कहने लगजाती है, उसके पास छोटे बड़े किसीका लिहाज नहीं है; वह किसीकी बात नहीं मानती, सारे दिन लड़नेपर भी उसे जरा थकावट नहीं होती। उसकी चिल्लाहटसे आकाश फटता है, लड़नेके समय उसकी मान मर्यादा और बुद्धि एक बार ही छूमंत्र हो जाती है। सचमुचमें ऐसी झगड़ालू स्त्री साक्षात् डाकिनी है। जब वह लड़नेपर कमर कसती है तो वह पुरुषोंके समान सीधी गालियां देती है, जिसे कोई कह नहीं सकता, जिसके कहनेमें शरम होती है वह सहज ही कह डालती है। यदि उस समय कोई आफतका मारा उसके पास पहुँच जावे तो वह उसके कानोंको बहरा कर देती है। उसे लाचार हो कानोंपर हाथ रख कर भागना पड़ता है। मुँह बनाकर अनेक बातें कहती है जिसे सुनकर ज्वर चढ़ आता है। यदि वह एक बात सत्य कहे तो पचास झूठ बोलती है। अपने चरित्रोंको दिखलाकर शत्रुओंसे हँसी कराती है तोभी वह अपनी जीभको नहीं रोकती। उसकी लड़ाईका तमाशा देखनेके

लिये गाववालोंकी एक खासी भीड़ लग जाती है। केवल उसी स्त्रीके दोषसे उसके घरवालोंको सदैव अनेक आपत्तियाँ भोगनी पड़ती है। उस स्त्रीके साथ किसीका बनाव नहीं रहता। और न वह एक दिन सुखसे रोटी खा सकती है। ऐसी स्त्रिया सचमुचमें स्त्रीकुलमें निन्दनीय और घृणाके योग्य हैं।

आज कल स्त्रियाँ पढ़ी लिखी होती जाती हैं। प्रायः पढ़ी लिखी स्त्रियाँ लड़ाई झगड़ा करना बिलकुल पसंद नहीं करतीं। युवतियो! तुम कभी किसीसे कलह मत करो। क्योंकि कलहसे विपत्ति और हेलमेलसे सुख होता है। यह पहले हीं कह चुके हैं कि कटु वचन कहनेवाली झगड़ालू स्त्रियाँ घरकी कुलक्ष्मी हैं, यह बात झूठ नहीं है। जिस परिवारमें हमेशह खटपट बनी रहती है उस परिवारमें सुख शान्ति कहाँ?

लड़ाई झगड़ेमें उनका सर्वनाश हो जाता है। स्त्रियोंके आपसके विरोधसे भाई भाईमें विरोध पड़ जाता है—आपसी कलह बड़ा भयंकर और सर्वनाशक है। किसी कविने कहा है—

फूट उपजे जौन कुल, सो कुल बेगि नसाय।
युग बाँसनकी रगड़तैं, सिगरो बन जर जाय॥

जब आपसकी फूट और लड़ाई झगड़ोंसे घरमें विरोधकी आग सुलगने लगे, तो उस समय उसे बड़ी सावधानी और चतुराईसे शान्त करना चाहिये। नहीं तो उस भयंकर विरोधकी अग्निमें घर तो जल ही जाता है—परन्तु प्राणोंपर भी आ बनती है। जिसमें बिलकुल मनुष्यपन नहीं है जो हृदयसे शून्य है ऐसा मूर्ख पति ही अपनी

लड़नेवाली स्त्रीको ताड़ना नहीं देता; बल्कि उसे किसी दूसरी तरहसे इस काममें सहायता पहुँचाता है। ऐसा करना बहुत बुरा है। ऐसे मूर्ख पति इस बातको नहीं सोचते कि इससे भयंकर सर्वनाशकी जड़ जम जाती है। एक बार लड़ने भिड़ने या गाली देनेकी आदत पड़ जानेसे फिर वह आदत आसानीसे नहीं छूटती। अगर वे अपनी इच्छासे इस बुरी आदतको न छोड़ दें तो ऐसी झगड़ालू स्त्रियोंको ताड़ना देनेसे क्या लाभ? क्योंकि और लोग इनके इस रोगको कहाँ तक मिटा सकते हैं? जिन स्त्रियोंका स्वभाव कुछ शान्त होता है उनको समझा बुझाकर किसी तरह सुधार सकते हैं, उनकी मति गति बदल सकते हैं; परन्तु जो स्त्रियाँ बिलकुल नीच स्वभाववाली और क्रोधकी अवतार ही हैं उन्हें हजार समझाओ बुझाओ वे कुछ नहीं सुनतीं, उनपर कुछ असर नहीं पड़ता—वे कलहको नहीं छोड़ सकतीं। युवतियो! तुम कलहकारिणी स्त्रियोंकी बातोंपर कभी कान मत दो क्योंकि ये लड़ाई झगडाकी जड़ (बुनयाद) ही ढूँढती फिरती हैं।

बिना लड़ाई झगड़ा किये और बिना कटु वचन कहे ही प्रतिपक्षीको मीठी मीठी गहरी बातोंसे इस तरह लज्जित और परास्त कर सकते हैं—कि वह मुँह उठाकर फिर बात न कर सके। मानलो कि तुम देवरानीके किसी बड़े अपराधसे क्रोधित हो उठी। यदि उस समय तुम उससे लड़ाई झगड़ा न करो और न कटु वचन ही कहो, बल्कि मधुर वचनोंसे उसके दोषोंको दिखा दो, तो तुमपर उसको ऐसी श्रद्धा बढ़ जायगी कि वह तुम्हें अपना हितू समझकर तुम्हारा सन्मान करने लगेगी। तुम्हारी अधीनतामें रहकर तुम्हारी आज्ञाका पालन

करेगी और तुम्हारा यह व्यवहार उसे बहुत मधुर मालूम पड़ेगा। यदि तुम उसके अपराधको क्षमा न करके उससे लड़नेको तैयार हो जाओ या गालियाँ दो तो याद रक्खो कि वह भी तुम्हारे साथ लड़े और गालियाँ दिये बिना न रहेगी। जो पहले तुमसे मुँह उठाकर बात न कर सकती थी, जो तुम्हें आदरकी दृष्टिसे देखती थी और तुम्हें डरती थी वही तुम्हारे दोषसे तुम्हारा अपमान किये बिना न रहेगी। अयोग्य काम करनेसे तुम स्वतः अपने दोषोंसे अपमानित होओगी और तुम्हारे मनमें व्यर्थ ही दुःख पहुँचेगा। क्योंकि कलहसे हृदय फटने लगता है मनकी शान्ति एक दम लोप हो जाती है। लड़ाई झगड़ासे तो यही लाभ है।

जो स्त्रियाँ अपने समस्त परिवारसे मधुर वर्ताव रखती हैं वे घरकी मालकिन होकर बहुत आनंद पाती हैं. यदि घरकी सब स्त्रियाँ ईर्षा, द्वेषको छोड़कर परस्पर हेलमेलसे रहें तो घरमें कभी कलह न आ सके। सब ही बड़े आनंदसे रहें। जिन्होंने कलह करके उसका फल भोगा है वे जानती हैं कि कलह कितना भयंकर और हानि-कारक है।

कलहका मुख्य कारण स्वार्थी होना और सहनशीलताकी कमी है। जिन स्त्रियोंमें सहनशीलता नहीं है और जो सदैव अपने ही सुखमें मग्न रहती हैं, दूसरोंके सुख दुःखकी ओर जिनका बिलकुल ध्यान नहीं रहता, जो हृदयकी बहुत छोटी हैं वे स्त्रियां छोटी छोटी बातोंपर सदैव लडा भिड़ा करती हैं। ऐसा करनेसे उन्हें कितना नुकसान पहुँचता है इस ओर उनका खयाल नहीं दौड़ता। कलहसे शरीर-को जो हानि पहुँचती है उसकी भी उन्हें कुछ खबर नहीं। अनेक

स्त्रियाँ रातदिन लड़ लड़कर बीमार हो जाती हैं, परन्तु वे यह बात नहीं जानतीं कि लड़ने और क्रोधमें जलनेसे ही हमारा स्वास्थ्य बिगड़ गया है। यदि वे यह बात जान भी लें तो भी इसके लिये कलह करना नहीं छोड़तीं। अनेक स्त्रियाँ घरका खाकर दूसरोंसे लड़ती रहती हैं वे और बड़ी अपराधिनी हैं पड़ोसियोंसे कलह और विवाद करना उचित नहीं है। बहुधा देखा जाता है कि लड़कोंके आपसमें लड़नेपर उनके मा बाप भी लड़ने लगते हैं यह बड़े शरमकी बात है। लड़कों लड़कोंमें मारपीट या गाली गलौच होनेपर उनके घरवालोंको झगड़ा न करके अपने अपने लड़कोंको ताड़ना देना उचित है। नहीं तो लड़के भी तुम्हारे विवाद और कलहसे कठोर स्वभाव और कलहप्रिय हो जावेंगे।

आमदनी और खर्च।

घरकी आमदनी और खर्चका हिसाब केवल पुरुषोंको ही रखना चाहिये ऐसा नहीं है। स्त्रियोंको भी इस काममें पुरुषोंको सहायता देना चाहिये। किस तरह खर्च करनेसे संसारमें चलाव चलता है, किस तरह नहीं चलता, किस हिसाबसे खर्च करके अपनी इज्जत रह सकती है, कम खर्चसे संसार चलता है या नहीं इत्यादि बातों-पर स्त्रियोंको ध्यान देना उचित है। जिस रीतिसे दो पैसे बच जावें उसके लिये हमेशह कोशिश करना चाहिये। स्त्रियोंको खर्चसे हमेशह बचे रहना चाहिये उन्हें अपव्यय करना उचित नहीं। बल्कि अगर

तुम पतिको अधिक खर्च करते देखो तो उनको नम्रताके साथ समझा दो और हमेशाह उनपर ऐसी नजर रक्खो कि जिससे वे अपव्यय (फिजूल खर्च) न करने पावें। अपने आवश्यक कामोंके खर्चके पीछे जो कुछ बच रहे उसकी बड़ी सावधानीसे रक्षा करो। अच्छी स्त्रियोंमें एक विशेष गुण रहता है कि वे रसोईमें थोड़ी थोड़ी चीजोंके द्वारा ही नाना तरहकी उत्तम खानेकी चीजें बना कर खर्चकी बचत कर सकती हैं। इस लिये मेरी रायके अनुसार अपने घरके रोजीना खर्चका भार स्त्रियोंके ऊपर रखना अच्छा है। यदि उनके हाथमें घरके रोजीना खर्चका भार रहे तो वे थोड़े खर्चमें बहुत अच्छी तरहसे अपना घर चला सकती हैं। जिस वस्तुके न होनेसे किसी तरह काम नहीं चलता उसी आवश्यक वस्तुके खरीदनेमें रुपया खर्च किया जाय—बेकाम और बिना जरूरतकी चीजोंमें रुपया खोना बहुत अनुचित है।

आजकल स्त्रियोंमें कमखर्ची करना तो दूरकी बात है परन्तु उनकी शौकीनी ऐसी बढ़ती जाती है कि वे नाना तरहसे व्यर्थ खर्च करके पतिको आफतमें फँसाया करती हैं। नाना तरहकी सुन्दर और भड़कीली विलास सामग्रीको देखकर उनका मन इतना मोह जाता है कि अपनी अवस्था और भविष्यका उन्हें कुछ खयाल नहीं रहता, कुछ भी हो उन चीजोंके खरीदे बिना उन्हें चैन नहीं पड़ती। विलायतसे हर तरहकी मनको लुभानेवाली विलासकी चीजें आती हैं और हमारे देशकी गृहलक्ष्मियें उन सबको खरीद खरीदकर अपना घर सजाती हैं। ये चीजें ऐसी नहीं हैं कि इनके बिना काम न चलता हो—फिर केवल दिखावटी चीजोंमें व्यर्थ खर्च करना

कहाँ तक उचित है इसे तुम स्वयं अपने मनमें सोच सकती हो। एक दोष और यह है कि उन्हें कोई भी देशी चीज पसंद नहीं. आती। बिलायतसे जो कुछ आवे वही उनके लिये सुन्दर और मनोहारी. है—उसीकी ओर उनका मन खिंचता है। सचमुचमें इससे हमारा बड़ा अनिष्ट हो रहा है, इस अनिष्टकी ओर हम एक बार भी नजर उठाकर नहीं देखते। पति विदेशमें नौकरी करता है जब स्त्री पतिको चिट्ठी लिखती है तो वह सब बातोंके पहले एक न एक वस्तुकी फरमायश (मांग) अवश्य लिखती है। यहां अभागे पतिकी मौत ही है, वह शरीरको सुखाकर, रक्तको पानी पानी करके जो दस रुपया पैदा करता है उससे बाजार खर्च, घरू खर्च और अनेक आवश्यक खर्च करके जो कुछ थोड़ा सा बचता है उससे उस बेचारेका निजी जेब खर्च ही पूरा नहीं होता—फिर स्त्रीकी फरमायशकी चीजें कहाँसे खरीदे ? यदि नहीं खरीदता तो गृहलक्ष्मी असंतुष्ट हुई जाती है—कैसी कठिनाईका समय है ? निदान लाचार होकर उधार चीजें खरीद कर बेचारेको अपनी स्त्रीका मन रखना पड़ता है। आजकल लड़कियोंमें अच्छे अच्छे गहने और अच्छे अच्छे कपड़े पहिरनेकी आदत बढ़ती जाती है। अगर उनको अपनी इच्छानुसार चीजें न मिलीं तो वे पतिसे अप्रसन्न हो जाती हैं। स्त्रीको वस्त्राभूषण बनवानेमें पति ऋण सागरमें डूब मरे यह कैसे शोककी बात है। बहुधा देखनेमें आता है कि वसन भूषणोंसे प्यार रखनेवाली स्त्रियोंके कारण पतिको बहुत आपत्तियाँ और दुःख सहन करना पड़ते हैं। स्त्रियाँ जान बूझ कर भी अनजानके समान काम करती हैं। पतिको सैंकड़ों अड़चनें क्यों न हों परन्तु स्त्रीको उत्तम कपड़े और जेवर

अवश्य चाहिये। ये बातें अबोध लड़कियोंके समान हैं। जो स्त्रियाँ पहिरने ओढ़नेके लिये पतिको कष्ट पहुंचाती हैं–उन्हें अप्रसन्न करती हैं वे यथार्थमें पतिसे बैर रखती हैं। स्त्रियाँ यदि नग जेवर न पहिनें तो क्या उनका मान घट जावे? नहीं, कभी नहीं। पतिभक्ति और सच्चरित्रता ही उनके सच्चे गहने हैं। सोने चांदीके साधारण जेवरोंके साथ उनकी तुलना नहीं की जासकती। लज्जा ही उनके पहिरनेके कीमती वस्त्र हैं–रेशमी ऊनी या सूती सुन्दर कपड़े उसके सामने फीके पड़ जाते हैं। इसी लिये कहते हैं कि उत्तम कपड़ा, उत्तम गहने न पहिनकर, जिससे दो पैसा बचे, जिससे संसारमें अच्छी तरह चलाव चले उसी रीतिसे चलना उचित है। जब जैसा समय हो उसी तरह चलना चाहिये। अवसर पड़े रूखा सूखा खाकर मोटे कपड़े पहिन कर अपना निर्वाह करनेहीमें सौभाग्य समझना चाहिये। जिसके पास धन है जिसका पति अतुल सम्पत्तिका स्वामी है–वह लाखोंका गहना पहिने। हम तुम गरीबोंको उनकी देखा देखी करना शोभा नहीं देता। यदि तुम सौभाग्यसे धनवान्‌की पत्नी हो, तो तुम्हें अपव्यय करने और अतिशय विलासिनी बननेकी हम राय नहीं देते। समय और अपने घरकी हालतका विचार करके अपने सम्मानको भलीभाँति रखकर खर्च करना उचित है।

हमारे देशी किसानोंकी स्त्रियाँ बहुत, मेहनती और कमखर्च करनेवाली होती हैं–इस काममें वे प्रशंसा पाने योग्य हैं। वे जब जैसा देखती हैं तब वैसा ही करती हैं। बहुधा सारे दिन मेहनत करके वे शामको घर लौटती हैं और मामूली खा पीकर बड़े आनंदसे

रहती हैं। वे न तो गहने चाहती है और न कीमती कपड़े ही। कौड़ी कौड़ीसे पतिके घरको भरना, रूखी सुखी रोटी खाना और मोटे कपड़े पहिरना इसीको वे सब कुछ समझती हैं, इसमें वे सुखी रहती हैं। यदि तुम किसान स्त्रियोंकी ओर आँख उठाकर देखो तो तुम्हें मालूम होगा कि वे पतिको कहाँ तक सहायता पहुँचाती हैं, कितना कमाती हैं और सारे दिन शीत घाम सहकर कितना काम करती हैं। वे वस्त्र आभूषणोंसे सज धज कर पॅावपर पाँव रख कर बैठना नहीं जानतीं। चांदनी रातमें भी वे दो चार स्त्रियॉ मिलकर धान कूटती हैं, दाल दलती हैं; और घरके आवश्यक आवश्यक कामोंको पूरा करती हैं। वे स्वतः अपने हाथोंसे घरको छीपती पोतती हैं, गोबर कूड़ा करती हैं और घरके आसपास बारोंमें कई तरहकी तरकारियां लगाकर घरके एक बहुत जरूरी खर्चको बचा लेती हैं। यदि साधारण दशाकी स्त्रियॉ भी इन कामोंमें अपना अपमान न समझकर अपने घरपर तरह तरहकी तरकारियाँ, फल, मिर्च आदि अनेक नित्य खानेके काममें आनेवाली चीजोंको पैदा किया करें तो घरका बहुत पैसा बच जाया करे। इन चीजोंके पैदा करनेमें बहुत कम मिहनत पड़ती है, और इन कामोंमें अपमानकी कोई बात नहीं है—घरका काम करनेमें अपमान किस बातका? जो अपमान समझती हों वे इस कामको नौकरों चाकरोंसे करा सकती हैं। परन्तु यह काम उनके भरोसे छोड देना उचित नहीं है तुम्हें उनकी देखरेख रखना उचित है। हमें भरोसा है कि तुम सब इन बातोंपर ध्यान देकर अपने घरके रोजीना खर्चको अवश्य कम करनेका उपाय करोगी।

वधूका कर्त्तव्य।

वधू (बहू) का कर्त्तव्य बहुत बड़ा है, किन्तु आज कलकी वधुएं उसे बिल्कुल नहीं जानतीं। विवाहके दिनसे वधूके कंधेपर उसका भार रक्खा जाता है और उसी दिनसे उसे उस भारको उठाना पड़ता है। वधूका मुख्य काम सास ससुरकी सेवा करना है। अपने माता पिता जैसे पूज्य हैं, सास ससुर भी उसी तरह पूजनीय हैं। माता पिता और सास ससुरमें कुछ भेद नहीं। जो वधू सासपर भक्ति नहीं रखती, उनका कहना नहीं मानती वह वधू, वधूनामके योग्य नहीं वह स्त्रीसमाजमें निन्दाके योग्य है। उसके बुरे स्वभावके कारण घरमें अनेक विघ्न और आपत्तियां उठ खड़ी होती हैं। स्त्रीका गुरु पति है और पतिके गुरु उसके माता पिता हैं। जो स्त्री पतिके परम गुरु अर्थात् माता पिताके मनको किसी तरह दुखाती या खेद पहुंचाती है वह सचमुचमें स्त्रीनाम-धारिणी राक्षसी है। देखा जाता है कि बहुधा अनेक कुटुम्बोंमें सास बहुओंके बीच खटपट रहती है। न बहुए सासका आदर सन्मान करती हैं और न सासें ही बहुओंपर वैसी प्रीति रखती हैं और न उसे अपनेके समान समझती हैं। यह बड़े कुलकलंककी बात है। कुलवधुओ! तुम सदैव अपने सास ससुरकी आज्ञामें चलो और उन्हें अपने माता पिताके समान मानो।

इसके पीछे वधूका कर्त्तव्य यह है कि, उसे जेठको देवताके समान, देवरको पुत्रके समान, और जिठानी देवरानीको अपनी सगी-

बहिनके समान समझना चाहिये। जेठ, देवर, ननद आदिके लड़के बच्चोंको अपनी संतानके समान समझ कर उनपर मनसे प्यार रखना चाहिये। जो बधुएं इन बातोंको नहीं मानतीं वे कुलक्ष्मी हैं। बधुओंको हमेशह ऐसी सावधानीसे चलना चाहिये कि जिससे पति और उनके कुटुम्बियोंके नाममें किसी तरहका कलंक न लगने पावे। जिन कामोंसे घरकी बदनामी या नुकसान होनेका डर हो उन्हें कभी भूल कर न करना चाहिये। विलासिताको विषके समान त्याग देना उचित है। नम्रता, विनय, शिष्टाचार, स्वार्थहीनता और लज्जाशीलता आदि गुणोंके द्वारा परिवारके सुख और सुयशको बढ़ाना चाहिये। बधूको कभी किसीसे लड़ना भिड़ना उचित नहीं है बल्कि धीरज और सहनशीलताके द्वारा सबसे हेलमेल रख कर परिवारकी भलाईके लिये कोशिश करना उसका मुख्य कर्तव्य है। कई एक बधुएं अपने घरको नहीं सँभालतीं, ऐसा करना बहुत मूर्खताका काम है। घरकी कौन वस्तु बिगड़ रही है, कौन बाहर पड़ी है इत्यादि बातोंपर ध्यान देना उसका मुख्य काम है। बधूको चाहिये कि वह अपने घरके हर एक कामको देखे और सास या घरके जेठोंसे सलाह लेकर उन कामोंको करे। बधू घरकी लक्ष्मी है यदि वह कुलक्ष्मी हुई तो घरका सत्यानाश न होगा? हे कुलबधुओ! तुम इस समय बधू हो, तुम्हें अपना कर्त्तव्य समझ लेना बहुत जरूरी है। अपने कर्त्तव्यको जानकर उसके अनुसार काम करना तुम्हारा परम धर्म है।

जो बधू पतिके आगे सास ससुरकी बदनामी करती है वह बहुत नीच स्वभावकी है। बधुओंमें यह दोष अक्सर देखा जाता है कि वे

पतिसे सास ससुर वा गुरुजनोंकी झूठी निंदा किया करती हैं।
ृसका परिणाम बहुत बुरा होता है। बधुओंके ऐसे चरित्रसे घरमें
कलहकी आग जल उठती है। अनेक बधुएं ऐसी लक्ष्मी होती हैं
कि वे पिताके घर जाकर भी सास ननद आदिकी बुराई प्रगट
करती हैं। सास दुःख देती है, घरमें कोई अच्छी चीज आवे तो
वह मुझे खानेको नहीं देती, इससे सदैव लड़ा करती है, हम उसकी
आखोंके कांटे हैं इत्यादि बातें कहनेवाली बधुएं स्वभावसे ही पापि-
नी हैं। ऐसी बधुओंको ताड़ना देना उचित है। ऐसी स्त्रियोंकी
इज्जत न ससुरालमें रहती है और न माता पिताके घर ही। क्यों-
कि वे अपने ही मुखसे अपनी कम कदरी करके लोगोंकी नजरोंसे
गिर जाती हैं। मूर्ख माता पिता लड़कीकी बातोंपर विश्वास करके
उसे ससुराल नहीं भेजते। ये बातें कहां तक सच हैं इसकी जाँच
किये बिना ही वे अपने सम्बन्धियोंसे मनबिगाड़ कर लेते हैं।
यह कैसी मूर्खता है ? कुछ समझमें नहीं आता।

बधूको सहनशील होना उचित है। अगर सास ननद या घरकी
जेठी स्त्रियॉ बधूसे कुछ बुरा भला कहें तो उसे चुपचाप सहन करना
चाहिये। उनकी बराबरी करके उनसे बदला लेना उचित नहीं है।
क्योंकि वे तुम्हारा हित चाहनेवाली हैं वे तुमसे जो कुछ भला
बुरा कहती हैं वह तुम्हारी भलाईके लिये ही कहती हैं।

आजकलकी बधुएं जरा सी बात सहन नहीं करतीं, वे कुछ भी
बुरा भला कहनेपर नागिनीके समान फुंकारने लगती हैं। ये सब
बातें बधुओंके लिये कलंकस्वरूप हैं। जिन स्त्रियोंमें इनमेंसे एक भी

दोष हो उन्हें उन दोषोंको बहुत शीघ्र छोड़ देना चाहि
उन्हें अपने सास ससुर पति और समस्त परिवारके लोगों
बनना चाहिये ।

लड़कियोंके प्रति कर्त्तव्य ।

छुटपन ही शिक्षाका यथार्थ समय है । इस समय लड़कियोंकी सुशिक्षा और चरित्रगठन न होनेसे बड़ी होने पर उन्हें अनेक कष्ट भोगना पड़ते हैं । लड़कियोंको कैसी शिक्षा देना चाहिये, उनका चरित्र कैसे उत्तम बनाना चाहिये । इन बातोंका ज्ञान घरकी प्रत्येक जेठी स्त्री और विशेष करके माताको होना चाहिये । आज हम इसके संबंधमें दो चार उपदेश देते हैं । लड़कियोंको उमर ५ या ६ वर्षकी होते ही उनसे घरके छोटे छोटे काम कराना चाहिये । वर्णमालाकी शिक्षाके साथ साथ उन्हें थाली लोटा आदि बर्तनोंका माजना सबेरे और शामके समय घरको झाड़ना बुहारना, दीपक जलाना, छोटे छोटे बच्चोंको खेल खिलाना आदि कामोंकी क्रम क्रमसे शिक्षा देना चाहिये । ऐसा करते करते वे बड़ी होनेपर मेहनती और काम काजमें चतुर हो जाती है । लड़कियोंको ऐसे काम न देना चाहिये जिनमें अधिक परिश्रम पड़े या जो उनकी ताकतके बाहिर हों । वर्तमान समयमें इस देशके भले आदमियोंकी लड़कियाँ मेमसाहबाकी पोषाक पाहिन, पाँवमें जूता और मोजा चढ़ाकर दादी (पितामही) फूफी माता या दूसरोंकी गोदीमें चढ़ी चढ़ी दिन बिताती

हैं। उनका घरवालोंमें पैर रखना कठिन है। घरवाले यह समझकर कि घरू काम करना दास दासियोंका काम है, उनको घरके कामोंसे सर्वथा दूर रखते हैं। छुटपनकी ऐसी शिक्षासे बड़ी होने पर वे खासी मेमसाहबा बन जाती हैं घरके छोटे छोटे काम उनको पहाड़से दिखने लगते हैं। दुर्भाग्यसे यदि वे धनवानके घर न व्याही गईं तो उनका सारा जीवन बड़े कष्टसे व्यतीत होता है। ऐसी दशामें वे निर्धन पतिसे घृणा करने लगती हैं। इसी लिये कहते हैं कि लड़कियोंको 'सोनेकी पुतली' न बनाकर उन्हें छुटपनहीसे घरके छोटे छोटे काम सिखानेका प्रयत्न करना चाहिये।

संतानपर माता पिताका स्वभावहीसे अधिक प्रेम होता है। अनेक लड़कियाँ अधिक लाड़ प्यारसे आलसी, सुकुमार, अधिक सुखकी अभिलाषा करनेवाली और काम काज करनेसे विमुख हो जाती हैं। स्नेहके कारण उनका अधिक आदर करना और उनकी प्रत्येक बात वा हठको पूरा करना बहुत अनुचित है। उनपर अपना ऐसा डर बनाये रखना चाहिये कि जिससे वे किसी काममें तुम्हारी बातोंको न टाल सकें। लड़कियोंको माता पिताके आधीन रहकर काम करना उचित है। जिस कामको माता पिता रोकें उन कामोंको उन्हें छिपकर भी न करना चाहिये। लड़के लड़कियोंको सुशील और सदाचारी बनाना माता पिताका मुख्य काम है। उन्हें इस कामसे विमुख न होना चाहिये।

लड़कियोंके चरित्रपर उनके आगे होनेवाली संतानोंकी बुराई भलाई निर्भर है। कारण कि अच्छी मातासे अच्छी और बुरी ... बुरी संतान पैदा होती है। देहातकी लड़कियाँ हमेशह

इस मुहल्लेमें उस मुहल्लेमें लड़कोंके साथ खेला करती हैं। लड़कियोंको इस तरह स्वाधीनता पूर्वक फिरने देना उचित नहीं। इस तरह उनमें अपनी इच्छाके अनुसार घूमने फिरनेकी आदत पड़ जानेसे फिर वे इस आदतको सहज ही नहीं छोड़ सकतीं, बड़ी होनेपर भी उनकी यह आदत ज्योंकी त्यों बनी रहती है। यह बहुत बुरी बात है। इसके सिवा उन्हें हमेशह लड़कोंके साथ खेलने कूदने देना हिलने मिलने देना भी उचित नहीं। ऐसा करनेसे उनमें लड़कों कैसे साहसादि गुण आजाते हैं और छुटपनसे ही उनके स्त्री-सुलभ-गुणोंकी जड़ मारी जाती है। लड़कोंके साथ खेलते रहनेसे कई लड़कियाँ इतनी उपद्रवी और लज्जाहीन हो जाती हैं कि वे पुरुषोंसे झूमझपटकर अपना आनंद प्रकट करती हैं। मेरी समझमें यह बात अच्छी नहीं। बहुतेरे अपनी लड़कियोंमें ऐसे अवगुण देखकर भी उनको ताड़ना नहीं देते, यह उनकी भूल है। लड़कियोंको छुटपनसे ही लज्जाशीलता निष्कपटता और सत्य बोलनेकी शिक्षा देना उचित है।

अनेक माताएं अपनी लड़कियोंको कई तरहसे झूठकी शिक्षा दिया करती हैं। जब कोई पड़ौसिन किसी लड़कीको अपने घरसे कोई चीज मातासे मंगाले आनेको भेजती है तो माता लड़कीसे कहला देती है कि वह वस्तु हमारे घरमें बिलकुल नहीं है। यद्यपि लड़की यह बात अच्छी तरह जानती है कि वह चीज हमारे घरमें रक्खी है। झूठ सिखानेकी यह कैसी अच्छी रीति है? अनेक माता पिता अपनी लड़कियोंसे यह कह कर कामपर चले जाते हैं कि अमुक वस्तु घरके भीतर रख दो, अगर कोई उसे मांगनेको आवे तो

कह देना कि वह टूट गई है या उसे दूसरा आदमी ले गया है, घर-पर नहीं है। कुलवधुओ! सोचो कि इस तरह प्रपंचना सिखानेसे भविष्यमें लड़कियां सत्यभाषिणी कैसे रह सकती हैं? ऐसी कुशिक्षाका यह परिणाम होता है कि लड़कियाँ अनेक कामोंमें माता पिताको भी धोखा देने लगती हैं।

जब कन्या १०।१२ वर्षकी हो जावे तो उसे ससुराल जानेके पहले ही घरके कामोंमें चतुर और उत्तम चरित्रवाली बना देना चाहिये। जो लड़कियाँ पित्रालयमें माता पिताके दोषसे सुशिक्षिता और चरित्रवती नहीं होतीं वे ससुरालमें जाकर घृणा, तिरस्कार और दुखःभोगा करती हैं। इसलिए लड़कियोंको उनकी आगेकी भलाईका ध्यान रखकर छुटपनसे ही बड़ी सावधानीसे शिक्षा देना चाहिये। लड़कियोंको विलासिता सिखाना उचित नहीं। उन्हें ऐसी शिक्षा देना चाहिये कि जिससे वे काम काजमें चतुर, मिहनती सुशीला और धर्म कर्म में तत्पर हो जावें।

लड़कियोंको उनका विवाह होनेके पहले ही लिखने पढ़नेके साथ साथ नाना तरहकी पाक-प्रणाली अर्थात् रसोई बनानेका काम सिखा देना चाहिये। ससुर जेठ पति और परिवारके गुरुजनोंको भोजनके समय कैसे परोसना चाहिये, ससुराल जाकर पतिके कुटुम्बियोंसे कैसा व्यवहार करना चाहिये इत्यादि बातोंकी शिक्षा देना उचित है। लड़कियोंकी सज्जनता कामकाजमें चतुराई आदिकी परीक्षाका स्थान पतिगृह या ससुराल है। उस जगह उसे अपनी बाल्यकालकी शिक्षाका फल भोगना पड़ता है। जो इस परीक्षामें पास हो जाती हैं, वे लक्ष्मीवधू हैं। माता पिताको चाहिए कि वे शास्त्रीय उपदेश

देकर लड़कियोंको नीति सिखावें और उनके आचार विचारोंकी ओर विशेष ध्यान रक्खें । यदि कोई बालिका कोई अयोग्य काम करे तो उसका ऐसी मीठी बातोंसे तिरस्कार करना उचित है कि जिससे वह लज्जित हो जावे और फिर आयंदा ऐसे बुरे काम करनेका विचार न करे। लड़कियोंको बिल्कुल निडर न कर देना चाहिये । क्योंकि ऐसा करनेसे उसका परिणाम अच्छा नहीं होता ।

महाराज मनु कहते है कि मुखसे फूँककर आग जलाना, जो वस्तुएं जलाने योग्य नहीं है उन्हें अग्निमें जलाना, दोनों पैरोंको अग्निमें तपाना तथा अग्निको लॉघ जाना अनुचित है । सबेरे और संध्याके समय भोजन करना, गमन करना और सोना मना है । धरतीपर लिखना काँसेके बर्तनमें पैर धोना, फूटे बर्तनमें भोजन करना अयोग्य है । पुरुषोंके पहले भोजन करना, धम धम शब्द करते चलना और जोर जोरसे बात चीत करना स्त्रियोंके लिये भारी दूषण है। माताको चाहिये कि लड़कियोंको इन सब बातोंकी शिक्षा देवे । जिससे वे कभी कोई बुरा काम न करें इसके लिये उन्हें खूब सावधान कर देना उचित है ।

जिस तरह लड़कियोंको घरके प्रत्येक कामोंकी शिक्षा देना उचित है उसी तरह उनको शिल्पविद्याकी शिक्षा देना भी बहुत आवश्यक है । लड़कियोंको मोजा गुलूबन्द आदिका बुनना, चोली, कुरता, कमीज, टोपी कपड़ोंका सीना आदि रोज काममें आनेवाली सहज सहज सिलाईका काम अवश्य सिखा देना चाहिये । यह काम बहुत कम मिहनतसे थोड़े समयमें सिखाया जा सकता है ।

गंभीरता ।

स्त्रियोंको गंभीर होना चाहिए; चंचलता बहुतेरे दोषोंकी जड़ है। चंचल स्वभावकी स्त्रियाँ अपने किसी भी कामको पूरा नहीं कर सकतीं । वे अपनी चंचलताके कारण कभी कभी ऐसा अनुचित काम कर बैठती हैं कि जिससे घरवालोंको बहुत हानि और बदनामी उठाना पड़ती है । चंचल स्त्रियोंके स्वभाव-दोषसे घरकी इज्जत बचाना कठिन हो जाता है । इस कारण ऐसी स्त्रियोंको परिवारके लोग अच्छी नहीं समझते और उनसे घृणा करते हैं। चपला स्त्रियोंमें एक दोष और यह होता है कि वे थोड़े ही सुखसे आल्हादित और थोड़े ही दुःखसे अधीर हो जाती हैं । इस कारण वे इस दु.ख सुखपूर्ण संसारमें कभी सुखसे नहीं रह सकतीं। चपल स्वभावकी स्त्रियोंके हृदयमें सुख विषका काम करता है। चंचलताके दोषसे स्त्रियोंके हृदयकी मधुरता नष्ट हो जाती है । मधुरता नष्ट होनेसे गंभीरता भी बुराईका कारण बन जाती है । अतएव स्त्रियोंके हृदयमें मधुरता और गंभीरता दोनों चाहिये। गंभीरता न होनेसे स्त्रियोंको पद पद पर हानि उठाना पड़ती है । क्योंकि उनका हृदय अत्यंत आवेगमय होता है यदि उनमें गंभीरता न हो तो वे थोड़ी ही उत्तेजनासे कुमार्गकी ओर झुक जावें ।

हे कुलवधुओ ! तुम गंभीर बनना सीखो, जो काम करना हो पहले उसके गुणदोषोंका विचार करके फिर उसे करो । हृदयकी चंचलताके वशमें होकर किसी काममें एक दम प्रवृत्त मत होओ । इसी तरह आमोद प्रमोदमें अधिक लिप्त रहना अच्छा नहीं है । क्योंकि

अधिक आमोद-प्रियता अंतःकरणको संकीर्ण करके गुप्तरीतिसे पापमार्गकी ओर ले जाती है। इस तरहका अतिरिक्त आमोद-प्रमोद ही दुर्बलहृदया स्त्रियोंके सर्वनाशका मुख्य कारण होता है।

कई स्त्रियाँ ऐसे चंचल स्वभावकी होती हैं कि अगर उनसे कोई आदमी आकर कह देवे कि अमुक स्त्री तुम्हारी निन्दा करती थी तो वे क्रोधमें आकर निन्दा करनेवालीको दुःख पहुंचानेके लिये अनेक खरी खोटी बातें सुनाती हैं। ऐसा करना बहुत अनुचित है। अनेक स्त्रियोंका स्वभाव ऐसा निन्दनीय होता है कि वे इसकी निन्दा उसके पास और उसकी निंदा इसके पास सुनाती फिरती हैं। ऐसी स्त्रियोंकी बातोंपर कभी विश्वास न करना चाहिये। जो स्त्रियाँ गंभीर नहीं होतीं वे अपनी जरा सी निन्दा सुनकर आग बबूला हो उठती हैं। तुमको कभी ऐसी चंचलता न करना चाहिये, क्योंकि चंचल स्वभाव व्यक्तिको कभी सुख शान्ति नहीं मिल सकती।

सद्भाव।

स्त्रियोंको सबके साथ सद्भाव (अच्छा बर्ताव) रखना उचित है। अपने परिवारकी सास, ननद, जिठानी आदि स्त्रियोंसे सद्भाव न रहनेसे घरमें कई तरहकी तकलीफें और अड़चनें उठाना पड़ती हैं। सद्भावसे सबको अपना बना सकते हैं। सबके साथ सद्भाव रहनेसे जो आनंद मिलता है उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। जो आदमी सबसे सद्भाव रखना जानता है उसकी ओर कोई

आँख उठाकर नहीं देख सकता। दुधमुँहे बच्चेसे लेकर बूढ़े तक उसके वशमें होकर उसके गुणोंके पक्षपाती बन जाते है। हमारी कुलबधुओंमेंसे बहुतसी ऐसी हैं जो सद्भावके द्वारा संतुष्ट रखना नहीं जानतीं। क्या यह बात उनके लिये कलंककी नहीं है? कई स्त्रियाँ ऐसी नीच स्वभावकी होती हैं कि वे ननद, देवरानी आदिपर स्नेह नहीं रखतीं, साधारण बातोंपरसे लड़कर उनके साथ मन मुटाव कर लेती हैं। अनेक स्त्रियाँ घरकी दासियोंसे लड़ा करती हैं और उनके साथ अयोग्य बर्त्ताव रखती है। तुम्हें साधारण नौकरों चाकरोंसे लड़ना भिड़ना उचित नहीं—जिन्हें तुम खाना कपड़ा देकर पालती हो, जो तुम्हारी दासी है, जिनसे तुम आदर सन्मान पानेके योग्य हो उनके साथ लड़ना झगड़ना या बुरा बर्त्ताव रखना क्या तुम्हें शोभा देता है? क्या वह दासी तुम्हारे प्रेम और दया पानेकी अधिकारिणी नहीं है? यदि दासीसे कोई काम बिगड़ जावे तो उसे अनुचित रीतिसे झाड़ना देना उचित नहीं। कई स्त्रियाँ क्रोधान्ध होकर अपने घरवालोंसे ऐसा कठोर कर्कश व्यवहार करती है कि जिसे सुनकर खेद होता है। परिवारमें सबसे सद्भाव रखना उचित है, सामान्य कारण या बिना कारणके ही किसीसे शत्रुता कर लेना उचित नहीं। परिवारके जिन लोगोंके कारण तुमको क्रोध उत्पन्न हुआ हो उनको तुम मीठी मीठी बातोंसे तो रुला सकती हो परन्तु क्रोधित होकर उनका तिरस्कार करनेमें शत्रुता ही बढ़ती है।

जो स्त्रियाँ परिवारमें सद्भाव (अच्छा व्यवहार) नहीं रख सकतीं वे बहुधा कलहकी आगमें जला करती हैं। जो स्त्रियाँ सबके दु:खसे दुखी होती हैं, और सबको अपने समान समझकर उनपर

प्यार रखती हैं वे ही स्त्रियाँ घर और बाहर सब जगह अपने अपने उत्तम व्यवहारसे आनंद बरसाती हैं। अगर तुम अपनी जेठानी-की असाध्य बीमारीके समय उनकी मन लगाकर सेवा सुश्रूषा करो-- उनके लड़के, लड़कियोंका अपनी संतानके समान लालन पालन करो तो वह भी तुम्हारी विपदके समय तुम्हारे काम आवेंगी। किसी कविने कहा है कि--

जो निजहित औरनतें चाहो,
तिन सग तैसई रीति निबाहो।

तुम दूसरोंमे जैसा व्यवहार चाहती हो तुम्हें चाहिये कि तुम पहले उनके साथ वैसा ही व्यवहार करो। जो आदमी सहज ही अपना थोड़ासा उपकार कर देता है उसके प्रति अपनी भक्ति आप ही आप बढ़ती है। देखो जिसे तुम बहिन कहके संबोधन करोगी वह भी तुम्हें बहिन बनाकर तुमपर स्नेह रक्खेगी। तुम जिसका मान रक्खोगी वह भी तुम्हारा रक्खेगा। नीतिमें कहा है कि तुम जिससे अच्छा व्यवहार चाहती हो तुम्हें पहले उसके प्रति अच्छा व्यवहार करना चाहिये। तुम अपने सद्व्यवहारके द्वारा सबको सुखी कर सकती हो। यदि अपने पड़ौसकी यशोदा, जमुना, गंगा आदिके साथ सद्व्यवहार रक्खो तो वे भी तुम्हारे साथ उत्तम व्यवहार रक्खेंगी। देखो, सीता अशोकवनमें भयंकर राक्षसियोंके बीच रहती थी, परन्तु उनके सद्व्यवहारके कारण वे सब राक्षसी सीताके चरणोंमें बिक गई थीं। सीताने अपने गुणोंसे शत्रुओंको मित्र बना लिया था। इस लिये यह बात निश्चय जानो कि सद्भावका कोई शत्रु नहीं है। सद्भाव मनुष्यको आपत्तिसे छुटाता है, सद्भावके सामने कठोर हृदय

मनुष्योंका मन भी नव जाता है । संसारमें ऐसा पाषाण तुल्य कठोर और असार कौन है जो सद्भावके विमल रससे परिप्लुत न हो जाय ! संसारी लोगोंके लिये सद्भाव नित्य उपयोगमें आनेवाली वस्तु है । जिस घरमें सद्भाव नहीं है उसमें सुख कहां ? जिन स्त्रियोंके हृदयमें सद्भावकी कमी है वे केवल दुःख असंतोष और नाना तरहकी अड़चनें भोग कर अपनी जिन्दगी पूरी करती हैं । जिनके समीप सद्भावको स्थान नहीं मिलता वे पति प्रेम-जनित निर्मल सुख शान्तिकी अधिकारिणी नहीं हो सकतीं । सीताने वाल्मीकि मुनिके तपोवनमें रहकर अपने उत्तम व्यवहारसे वनके पशु और जंगलके वृक्षोंको भी अपने वशीभूत कर लिया था ।

वह सरलहृदया और स्नेहकी साक्षात् मूर्त्ति थी । वनके पशु पक्षी भी उनके स्नेहको पाकर बड़े आनंदसे रहते थे । जिस समय वह तपोवनके वृक्षोंको स्नेहपूर्वक जल सींचती थी उस समय वे संतानवती न होकर भी संतानके प्रेमसे पैदा हुए अपूर्व सुखका अनुभव करती थी । हरिणके बच्चे पुत्रके समान आकर स्नेहमयी सीताकी गोदकी शोभा बढ़ाते थे, सीता बड़े स्नेहसे उनके शरीरके ऊपर हाथ फेरती थी । उनके संग्रह किये हुए यज्ञ-कुशोंको वे निर्भय होकर चरते थे । जैसे स्नेहमयी माताके निकट पुत्रोंको कुछ भी भयका कारण नहीं रहता, वे निर्भय होकर हँसते हँसते अभया जननीके समीप आकर अंचल पकड़कर खींचते हैं, और आनंदित होकर माताकी गोदमें बैठकर धींगमधींगी करते हैं, ठीक इसी तरह वनके पशुपक्षी भी कोई सीताको चरणोंको चाटते थे, कोई सामने और कोई कोई उनकी बाजुओंकी ओर जा बैठते थे। सीता मानो

उनके जीवनकी अवलम्बन थी। कोई सीताके सामने बैठा उनके मुँह-की ओर देख रहा है और कोई कोई उनके हाथ से फल मूल छीन-कर खा रहा है। अहा! कैसा मधुरभाव है। देखो, स्नेह और अच्छे व्यवहारसे वनके पशु पक्षी मनुष्योंके वशमें हो जाते हैं।

सन्तोष.

सन्तोषसा साधन है न अन्य।
सन्तोष ऐसा धन है न अन्य॥
सन्तोषके भक्त बनो अनन्य।
सन्तुष्ट हैं सिद्धि सदैव धन्य॥

कमलाकर।

सुखकी इच्छा रखनेवालोंको हमेशह संयत चित्त और संतुष्ट रहना चाहिये। कारण कि संतोष सुखकी और असंतोष दुःखकी जड़ है। खेदकी बात है कि भारतवर्षमें दरिद्रतासे जकड़े हुए अनेक घरोंमें संतोषहीन स्त्रियोंने अब भी दुःख और बेचैनीको आश्रय दे रक्खा है। ऐसी स्त्रियाँ न पतिकी अवस्थाका विचार करती हैं और न देशकी गरीबी और दुर्दशाकी ओर ध्यान देती हैं, वे पतिकी साधारण आमदनी और संसारिक सुख भोगोंमें केवल असंतोष ही प्रकट करती हैं। अगर स्वामी स्त्रीकी मांगके अनुसार सुख विलास-की चीजें न खरीद दे तो पत्नी इससे अपने ऊपर पतिका कम प्रेम समझ कर रुष्ट हो जाती है—यह बहुत अनुचित है। स्त्रीको उत्तम उत्तम कपड़े और गहने पहने देखकर किसे अच्छा नहीं लगता?

पति अपनी हैसियतके अनुसार स्त्रीको अच्छा खिलाने पिलाने और पहिराने ओढ़ानेमें कभी कसर नहीं रखता। अपनी हैसियतके अनुसार सुखोंकी इच्छा करनेसे असंतोषकी आगमें नहीं जलना पड़ता। संतोष सबको रखना चाहिए। जिसके मनमें संतोष है वह हर समय सुखी है। सन्तोष पारसके समान है। रोगियोंकी असह्य वेदना, दरिद्रोंका अटल तिरस्कार, दुःखियोंके हृदयकी असह्य मर्मवेदना और शोकातुर पुरुषोंके हृदयविदारक शोककी अग्निको संतोषकी शीतलता एकदम दूर कर देती है—संतोषसे सब रोग शोक ठंडे पड़ जाते हैं। जिस घरमें संतोष रहता है वही घर सच्चा सुखी है। संतोष सबको अमृत दान करता है। उसकी दयामय दृष्टिमें छोटा, बड़ा, अमीर गरीब सब एक समान हैं। जो संतोषका सहारा लेता है वह उसपर दयादृष्टि करके सुखी बना देता है। सन्तोषका आश्रय हर एक मनुष्यको लेना चाहिये। जिसका अंतःकरण शान्त, सरल और निर्मल है वही संतोषरूपी स्पर्शमणियां पारसको प्राप्त कर सकता है। चिरसंतोष किसीको नहीं मिलता। संसारमें विपत्ति ही संतोषका मुख्य शत्रु है। जो आदमी विपत्तिके समय अधीर होकर अपने जीवनको भाररूप समझने लगते हैं उन्हें कभी संतोषरूपी अमृतका स्वाद नहीं मिल सकता। सबके दिन सदैव एकसे नहीं जाते—संसारमें रहकर एक न एक दिन सबको विपत्तिका सामना करना पड़ता है। परन्तु विपत्ति भी हमेशाह नहीं रहती। ऐसा सोचकर धीरज रखके विपत्तिके साथ मुकाबला करनेसे, विपत्तिसे बहुत जल्दी छुटकारा मिल जाता है। विपत्तिसे डरो तो वह तुम्हारा पीछा पकड़ेगी और हिम्मत रखकर उसका सामना करो तो वह स्वयं डर

कर भाग जायगी। विपत्तिमें व्याकुल होकर हमेशाह बेचैन रहनेसे हृदय फट जाता है और उत्साह उद्यम आदि सभी बातें धीरे धीरे लोप हो जाती हैं।

जिसकी जैसी अवस्था (हालत) हो उसको उसी अवस्थामें संतुष्ट रह कर अपनी उन्नतिके लिये उपाय करना चाहिए। जो मनुष्य अपने घरमें इच्छित वस्तुएँ न रहनेके कारण असन्तुष्ट रहते हैं वे केवल निराशाकी अग्निमें जला करते हैं, सुखशान्ति उनसे सैकड़ों कोस दूर रहती है।

थोड़ेमें संतुष्ट रहना चाहिये। जो स्त्रियाँ थोड़ेमें संतुष्ट नहीं रहतीं उन्हें जन्मभर दुःख भोगना पड़ता है। पति थोड़ा बहुत जो कुछ पैदा करता हो स्त्रीको उसीमें संतुष्ट रहना उचित है। नहीं तो वह पतिके कष्टका कारण बन जाती है। तुम्हारी सखी मनोरमाका पति २००) माहवारी तनख्वाह पाता है, इस लिये वह अच्छा खाती पीती है उसे सब तरहके सुभीते है। रुपयोंकी तंगी कैसी होती है इस बातको वह स्वप्नमें भी नहीं जानती। परन्तु तुम्हारा पति २०) की एक साधारण नौकरीपर है, उसके पास बाप दादोंकी जायदाद भी नहीं है। इस लिये तुम मनोरमाके समान अच्छा खाना पीना और पहिरना ओढ़ना नहीं कर सकती। तुम्हारा पति तुम्हारे लिये एक मोहनमाला भी नहीं बनवा सकता। इस कारण तुम उससे अप्रसन्न रहो अथवा उससे विरक्त हो जाओ तो क्या तुम्हारा यह काम पत्नीके योग्य है? कभी नहीं। स्वामीकी प्रसन्नतासे यदि एक बार भी खानेको मिले तो तुम्हें उसीमें संतुष्ट रहना चाहिये। और

जिस रीतिसे दो पैसा घरमें आवें उन कामोंमें पतिको सहायता देना तुम्हारा मुख्य कर्त्तव्य है।

संतोष सदैव सबको सुखी करता है। भगवान् जिसे जब जिस अवस्थामें रक्खे उसे उसी अवस्थामें संतुष्ट रहना चाहिये। अपने बुरे दिनोंके स्मरणसे जब मनमें असंतोष उत्पन्न हो तो उस समय हमें यह सोचना उचित है कि कई आदमी हमारी अपेक्षा भी अधिक दुःखी है और उन्हें हमसे भी अधिक कष्ट भोगना पड़ता है। ऐसा विचार करते ही फिर असंतोष नहीं रह सकता। परन्तु इस बात पर हमेशह ध्यान रखना चाहिये कि अपनी अवस्थामें संतुष्ट रहकर हमें उसकी उन्नतिमें कभी उदासीनता प्रगट न करना चाहिये। सब मनुष्योंको अपनी अपनी उन्नति करनेके लिये सदैव कोशिश करते रहना चाहिये। इस काममें किसी तरहकी शिथिलता या आलस्य करना अनुचित है।

कैसी स्त्रीशिक्षाकी जरूरत है ?

वर्तमान समयमें भारतवर्षमें जिस रीतिसे स्त्री-शिक्षा प्रचलित है उससे आगे भलाई होनेके लक्षण नहीं दिखाई देते। शिक्षा एक बात है और दिखाऊ शिक्षा दूसरी बात है। आजकल इस देशकी स्त्रियाँ बहुधा दिखाऊ शिक्षाके फेरमें पड़कर अवनतिकी ओर जा रही हैं। पुरुषोंके दोषसे और दूषित शिक्षा प्रणालीके कारण अनेक स्त्रियोंका अधःपतन हो जाता है। यह बात अच्छी नहीं है। बहुतेरी स्त्रियाँ काली लकीर खींचना

जानते ही अपनेको विद्यावती वा सरस्वती का अवतार समझने लगती हैं। ऐसी दशामें वे " अल्पविद्या भयंकरी " हो उठती हैं। क्रोध, द्वेष, आलस्य, अभिमान आदि दोषोंसे दूषित होकर परिवारके सुखमें विष घोल देती है। जिस शिक्षासे भारतीय स्त्रियोंको आत्म सम्मान और कर्त्तव्य ज्ञान उत्पन्न हो, जिस शिक्षासे उनके उत्तम चरित्रके निर्मल प्रकाशसे घर बाहर और देश सुशोभित हो, उनकी जिस शिक्षासे पवित्रतासे घरमें स्वर्गीय सौन्दर्य्य प्रस्फुटित हो, जिस शिक्षासे वे अपने कुटुम्ब और अड़ौस पड़ौससे सद्व्यवहार रख कर सबको सुखी बना सकें, मेरी रायमें ऐसी स्त्री शिक्षाकी आवश्यकता है। जिस शिक्षासे स्त्रियाँ गृहकर्म और संतान पालनमें चतुर होकर जीवनको उन्नत और सुखमय बना सकें इस समय ऐसी ही शिक्षाकी जरूरत है। इसके सिवाय स्त्रियोंको और दूसरी शिक्षाकी आवश्यकता नहीं। जिस शिक्षासे उनके हृदयपर शिक्षाका प्रभाव न पड़े उस शिक्षासे क्या लाभ ? सुशिक्षासे मनकी वृत्तियां निर्मल होती हैं, अंतःकरण प्रशस्त और उदार बनता है, कर्त्तव्यज्ञान पैदा होता है, चपलता दूर होती है, और चरित्र उन्नत होता है। यदि शिक्षाका फल ऐसा न हुआ तो देशमें शिक्षा प्रचारके बहाने स्त्रियोंका सिर पचाना व्यर्थ है। हे भारतीय बहिनो! इस समय तुमने जो साधारण लिखना पढ़ना सीखा है वह अच्छा है, परन्तु उसके साथ साथ तुम्हें गृहकार्य, संतान पालन, गृहिणीपना इत्यादि नित्य उपयोगी विषयोंको भी अवश्य सीखना चाहिये। स्त्रियोंको पुस्तकगत विद्याकी आवश्यकता नहीं है। वर्तमान समयमें बहुतेरी स्त्रियाँ थोड़ा बहुत लिखना पढ़ना सीखकर वा शिशुकक्षाकी पहली

पुस्तक पढ़कर ही अभिमानिनी हो जाती हैं। घरके बड़े बूढ़ोंकी बातोंपर वे कान नहीं देतीं, पतिका कहना नहीं मानतीं, भला बुरा कुछ नहीं सोचतीं, लज्जा उनके पास नहीं आने पाती, जो मन भाता है वही करती हैं। इस तरहकी स्वेच्छाचारिता (मनमुरादी) को हम कभी अच्छी नहीं कह सकते।

एक स्त्री कहती है कि, एक दिन मुझे भी अल्पविद्यासे लाभ न होकर हानि उठाना पड़ी थी। परन्तु भगवानकी कृपासे मुझे बहुत दिनोंतक लोकनिंदा, सासका तिरस्कार तथा पतिका कोप नहीं सहना पड़ा। मैं दो चार अच्छी अच्छी स्त्रीशिक्षाकी पुस्तकें पढ़कर सचेत हो गई। मैंने पुस्तकोंके उपदेशोंको पढ़कर उनके अनुसार चलना प्रारंभ किया। धीरे धीरे मेरे सब दोष दूर होगये और मैं बहुत कुछ सुधर गई। सास ससुर मेरी सुधरावटको देखकर मुझे दोनों हाथोंसे आशीर्वाद देने लगे, पतिके मनका कष्ट दूर हो गया और उस दिनसे वे मुझपर अधिक स्नेह करने लगे। एक दिन उन्होंने मेरे सुधारके उद्योगको देखकर बड़े स्नेह और गंभीरताके साथ कहा— " आज हम स्वर्गकी आधी सीढ़ियोंपर पहुँच गये है, जिस दिन तुम उत्तम चरित्रवाली, कर्त्तव्य पालनमें तत्पर, घरूकामोंमें सुचतुर और घरके लोगोंको शरद् पूर्णमासीके चन्द्रमाके समान आनंद देनेवाली हो जाओगी उस दिन मानो हमें स्वर्गका राज्य मिल जावेगा, उसी दिनसे हमारे जीवनरूपी आकाशमें पूर्णचंद्रका उदय होगा। " भारतीय ललनाओ! आजसे तुम ऐसी शिक्षा ग्रहण करनेकी कोशिश करो कि जिससे तुम स्वतः सुखी होओ और अपने स्वामीको स्वर्गीय सुखसे सुखी कर स्त्रीजीवनको सार्थक बना सको। वह शिक्षा

कौन है ? यदि तुम इस अध्यायको भलीभाँति सुनो तो तुम्हें मालूम हो जायगा।

इस तरहकी शिक्षासे लड़कियोंका बहुत कुछ कल्याण हो सकता है। शिक्षासे अंतःकरण स्वच्छ होकर झूठे विश्वास दूर हो जाते हैं। सुशिक्षा चंद्रमाके समान हृदयको प्रफुल्लित और विकसित तथा चरित्रको उज्ज्वल करती है। चरित्रकी उन्नतिके लिये सुशिक्षाकी बहुत आवश्यकता है। जो शिक्षा चरित्रको उन्नत, निर्मल और आदर्श न बना सके उस शिक्षाको कदापि शिक्षा नहीं कह सकते। जिस शिक्षासे चित्त चंचल हो विलास वासना और सुखासक्ति पैदा होकर हृदय मलिन हो ऐसी शिक्षा विषके समान त्यागने योग्य है। वर्तमान समयमें बहुधा लड़कियाँ पढ़ लिखकर विलासिनी हो जाती हैं— कंगालिनी भारतीय स्त्रियोंको विलासिता शोभा नहीं देती। विलासिनी स्त्रियाँ गृहस्थके मार्गमें कांटोंके समान हैं। तुम्हें अपनी विलास वासनाओंके पूरी करनेके लिये पतिको दुःखकी कीचड़में फँसाना उचित नहीं है। अनुचित विलास वासना और अतिशय सुखेच्छा लोगोंका सर्वनाश कर डालती है। उनका आदर, सन्मान, धन, दौलत. विद्या बुद्धि आदि सभी बातें नष्ट हो जाती हैं।

वर्तमान समयमें भारतवर्षमें स्त्रीशिक्षाका प्रचार दिनपर दिन बढ़ता जाता है। अधिकांश लोग अपनी स्त्री, कन्या बहिन आदिको शिक्षिता बनानेकी कोशिश कर रहे हैं। यह बहुत खुशीकी बात है। परन्तु ऐसे समयमें हम लोगोंको देश, काल और पात्रका विचार करके इस कामको करना चाहिये। और प्रचलित शिक्षण पद्धतिमें

जो दोष हों उन्हें निकाल कर फेंक देना चाहिये। जो शिक्षा लड़कियोंको दी जावे उसके परिणामपर अवश्य ध्यान रखना चाहिये।

फुरसतके काम।

घरके कामोंको भली भांति पूरा करके जो समय बचे उस समयको अच्छी अच्छी पुस्तकोंके पढ़ने, अच्छे विषयोंपर बात चीत करने और नीतियुक्त मनोरंजनके कामोंमें बिताना चाहिये। बहुतेरी स्त्रियाँ अपने घरका काम पूरा करके फुरसतके वक्तको बहुधा उठने बैठने या सोनेमें खोती है। यदि वे चाहें तो उस समयमें अच्छी पुस्तकोंके पढने, अच्छे विषयोंपर बात चीत करने या आमोद प्रमोद करनेके सिवा और भी कई ऐसे ही उपयोगी काम कर सकती हैं कि जिनसे घरमें चार पैसोंकी आमदनी हो सकती है। अच्छी पुस्तकोंका पढ़ना या सद् विषयोंपर बात चीत करना जैसा जरूरी है, वैसे ही वे काम भी जरूरी हैं कि जिनसे घरके खर्च-की बचत हो। बहुतेरी स्त्रियाँ पुस्तक पढ़ने या दो चार चिट्ठियां लिखनेमें ही अपनेको बड़ी मेहनती या कर्त्तव्यनिष्ठ समझने लगती हैं। ऐसी स्त्रियाँ ही विलसिनी, मेहनतसे डरनेवाली और सुखाभि-लाषिणी बन जाती है। उनसे कोई भी मेहनतका काम नहीं हो सकता। घरके छोटे छोटे काम भी उन्हें पहाड़से दिखने लगते हैं। युवतियो! तुम विलासिनी बनकर कभी ऐसी आपत्तियोंको मोल न लेना। इस देशकी स्त्रियोंको बाबूगिरी शोभा नहीं देती। तुम्हारा यह देश दिनपर दिन दरिद्र होता जाता है। ऐसी दशामें विलासिता

और बाबूगिरी स्त्री पुरुष दोनोंको छोड़ देना चाहिये। सो दो सौ रुपया तनख्वाह पानेवाला बाबू जैसा बाबू होता है उसकी स्त्री भी वैसी ही निठल्ली और मेहनतसे जी चुरानेवाली होती है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि शिक्षा और समाजके दोषसे ही लोगोंकी ऐसी दुर्गति हो रही है।

बहुतेरे आदमी जातिकी उँचाई बड़ाईके खयालसे छोटे कामोंके करनेमें अपनी मानहानि या कुलको कलंक समझकर निठल्ले, आलसी और दूसरोंके गलग्रह बन जाते हैं। इसी तरह कई स्त्रियाँ भी अपनी जातिके अभिमानके कारण लज्जा रहित होकर दूसरोंके टुकड़े खाकर जीती हैं। अगर लोग जातिके व्यर्थ अभिमानको छोड़कर जितनी मेहनत उनसे हो सके उसके अनुसार शिल्पविद्या सीख कर थोड़ा बहुत पैदा करने लगें तो फिर उन्हें दूसरोंका गलग्रह होकर न रहना पड़े। अवकाशके समयमें स्त्रियोंको सीना पिरोनाका काम करना उचित है। कुरता, टोपी, कमीज, मोजा, गुलूबन्द, दस्ताने, पंखा आदि, स्त्रियों तथा लड़कों बच्चोंके कपड़े और नित्य व्यवहारकी चीजोंको घरकी स्त्रियाँ यदि स्वतः घरपर तैयार कर लें तो बहुत पैसोंकी बचत होनेके साथ साथ हर एक चीजके लिये बारंबार बाजारको न दौड़ना पड़े। इन चीजोंके बनानेमें न जाति घटती है और न कुछ बदनामी ही होती है। काम करना बुरा नहीं। घरके आसपासकी जगहमें थोड़ीसी मेहनतसे नित्य खानेपीनेकी तरकारियां आदि चीजें पैदा की जासकती हैं

किस्सा कहानियोंके कहने या नाटक उपन्यासोंके पढ़नेमें जो समय व्यर्थ नष्ट किया जाता है, यदि उसे अच्छे कामोंमें

कमावें तो लाभ होनेके साथ साथ चित्त भी प्रसन्न रहे। काम करनेवालोंको जो प्रसन्नता प्राप्त होती है वह निठल्ले या आलसियोंको स्वप्नमें भी नहीं मिल सकती। हमेशह काम काजमें लगे रहनेसे मनमें किसी तरहकी बुराई नहीं पैदा होती। जो लोग हाथ पांव सकोड़कर बैठे रहते हैं और काम काजको विपत्ति समझते हैं उनके मनमें आप ही आप बुराईयाँ पैदा हो जाती हैं, और वे अपने मनमें अस्वाभाविक संकल्प विकल्प करके अपने हाथों अपना घात कर बैठते हैं। कहावत प्रसिद्ध है कि "बैठे ठालेको बुराई ही बुराई सूझती है" इसलिये निठल्ले बैठे रहने या बुरी तरहसे समय खोनेकी अपेक्षा अपनी शक्तिके अनुसार कोई न कोई छोटा मोटा काम करते रहना बहुत उत्तम है। विधवा स्त्रियोंको चाहिये कि वे सिलाई वगैरहका काम सीखकर अपने निर्वाह योग्य पैसा पैदा किया करें। बहुतेरी विधवा स्त्रियाँ अपनी भौजाईकी झिड़की या फटकार सहकर भाईके आश्रयमें रहके अपने दिन बिताती हैं। यदि वे इन सब कामोंको सीख लेवें तो उन्हें भौजाईका तिरस्कार न सहना पड़े और न उन्हें दूसरेके मुँहकी ओर ताकनेकी जरूरत पड़े। वे अपना खर्च स्वतः चला सकें। बड़े खेदकी बात है कि भारतवर्षके स्त्री पुरुष दोनों ही दूसरोंके गलग्रह होने या भीख मांगकर अपना पेट भरनेकी अपेक्षा मेहनतके कामोंको नीचा और अपमानकारक समझते हैं। इन्हीं दोषोंके कारण आज भारतवासियोंके शरीरपर कपड़ा नहीं है, उनके पेटमें अन्न नहीं है और न उनकी दुर्गतिका कुछ ठिकाना है। भगवान् इन्हें न जाने कब सुबुद्धि देगा।

कुलवधुओ, तुम्हें अवकाशके समयमें शिल्पविद्या सीखना चाहिये। इस काममें तुम अपने घरवालोंसे सहायता ले सकती हो। सिलाईकी कल खरीदकर अपनी लड़कियोंको सीनेका काम सिखाओ। लड़कियोंके इस काममें चतुर होनेपर उनके द्वारा बहुत लाभ हो सकता है। हमारी राय है कि भारतवर्षमें यह काम घर घर प्रचलित हो और घरके पुरुष स्त्रियोंको इस काममें सहायता देवें। ऐसी रीतिसे खर्चकी बचत होनेके साथ ही जो स्त्रियाँ परिश्रमके नामसे डरती हैं तथा रातदिन बैठी बैठी लड़ाई भिड़ाई करती रहती हैं वे बहुत जल्दी सुधर सकती हैं। उनको इन कामोंमें लगा कर तुम थोड़े ही दिनोंमें देखोगे कि आलसी, बुरे स्वभाववाली और झगड़ालू स्त्रियाँ भी कैसी नेक और काम करनेवाली हो गई हैं। अब केवल तुम्हारी सजधज और शृंगारसे काम न चलेगा, अब तुम्हें काम करनेवाली बनना चाहिये। हमें भरोसा है कि आजसे तुम अपने अवकाशके समयको हमारे उपदेशके अनुसार उपयोगी कामोंमें लगाओगी और परिश्रमी बनकर सच्चे सुखकी अधिकारिणी बनोगी।

शरीर रक्षा।

सफाईसे रहना स्वास्थ्यरक्षा (तन्दुरुस्ती) की जड़ है। शरीरको स्वच्छ रक्खे बिना कोई मनुष्य निरोगी नहीं रह सकता। हमारे देशकी अनेक गृहलक्ष्मियाँ स्वच्छ कपड़े पहिरने तथा सफाईसे रहनेवालोंको शौकीन या ठाठपसन्द कहकर उनकी हँसी उड़ाती है। परन्तु वे स्वतः सफाईसे न रहनेके कारण कई रोगोंसे ग्रसित-

रहती हैं। शरीरमें अगणित रोमकूप या रोमरन्ध्र हैं। उनके द्वारा शरीरके भीतरका दूषित अंश सदैव बाहर निकला करता है। शरीरको साफ न रखनेसे वे रोमकूप मैलसे बंद हो जाते हैं और शरीरके भीतरका बिकार बाहर नहीं निकलने पाता। इस कारण अनेक रोग पैदा होते हैं। चमड़ेका ऊपरीभाग अर्थात् बारीक झिल्ली हमेशाह मरकर बेकाम हुआ करती है। स्नान करते समय शरीरपर हाथ फेरनेसे वह मैलके रूपमें निकल जाती है। यदि शरीरको साफ न करो तो वह सब मैल दूर न होकर शरीरहीमें रह जाता है और अनेक रोग पैदा करता है। जिस तरह शरीरको साफ रखना उचित है उसी तरह खानेकी चीजोंको स्वच्छ रखना भी बहुत आवश्यक है। मैली चीजें खाने पीनेसे बीमारी पैदा होती है। रसोईघर और रसोई बनानेके बर्तन हमेशाह साफ रखना चाहिये, जिससे उनमें मैल न जमने पावे। रहनेका मकान दिनमें दो बार साफ करना चाहिये। घरमें या उसके आसपास मैली या सड़नेवाली चीजें पड़ी रहनेसे घरकी वायु दूषित हो जाती है, जिससे कभी कभी बीमारी पैदा हो जाने की आशंका रहती है। स्वच्छ घर देखनेमें जैसा सुन्दर मालूम पड़ता है वैसा ही रहनेमें भी स्वास्थ्यप्रद होता है। घरकी हर एक वस्तु स्वच्छ रखना चाहिये। इस काममें तुम्हें कभी आलस्य करना उचित नहीं है।

कई स्त्रियाँ मैले कपड़े पहिने रहती हैं। मैले कपड़े पहिरनेसे मनमें प्रसन्नता नहीं रहती बल्कि एक तरहकी ग्लानि और उदासी छा जाती है। ऐसी उदासीसे स्वास्थ्यको बहुत नुकसान पहुँचता है। कई स्त्रियाँ मैले बिछौनेपर सोने या बैठने उठनेमें कुछ संकोच

नहीं रखतीं वे मानो मैलेपनसे प्रेम ही रखती हैं। वे इस बातको नहीं जानतीं कि ऐसा करनेसे शरीर मैला होता है और उससे बीमारियाँ पैदा होती हैं। गरमीके दिनोंमें अनेक स्त्रियोंके शरीरसे बहुत दुर्गन्धि आने लगती है—इसका कारण मैलेपनसे रहना और मैले कपड़े पहिरना है। अगर वे स्नान करते समय शरीरको खूब मलकर साफ कर डाला करें तो फिर दुर्गन्धि न आवे। सफाईसे रहना कुललक्ष्मी होनेका चिन्ह है। जो स्त्रियाँ मैलेपनसे रहती हैं उन्हें सब जगह अपवित्रता ही अपवित्रता दिखाई देती है। मैले-पनसे रहनेवालोंको बहुधा दाद, खाज, खुजली आदि घिनौने रोग हो जाते हैं। मैले लोगोंके पास बैठने या उनके कपड़ोंका उपयोग करनेसे अनेक बीमारियाँ हो जाती है। स्त्रियोंको चाहिये कि वे सदैव सफाईसे रहें।

धन, जन और जीवन इन तीनोंमेंसे जीवन सबसे श्रेष्ठ है। सब लोग सुख स्वच्छन्दतासे अपना जीवन व्यतीत करना चाहते हैं। यदि जन्मभर कठिन रोगोंसे छुट्टी न मिली तो फिर धन, जन और जीवन-से क्या लाभ हुआ? जब तक शरीर निरोगी न हो तब तक संसारकी किसी वस्तुसे सुख नहीं मिल सकता। स्वास्थ्य (तन्दुरुस्ती) अमूल्य धन है, इस धनके सामने रुपया पैसा, हीरा मोती आदि सब तुच्छ हैं। जो लोग स्वास्थ्यरक्षाके नियमोंको नहीं पालते वे शीघ्र ही बीमार पड़ जाते है। अगर बीमारी बढ गई तो फिर वैद्य डाक्टरों और दवा दारूमें सैकड़ों रुपये खर्च करना पड़ते हैं। दुर्भाग्यसे यदि इतने पर भी बीमारी अच्छी न हुई और असमयमें मृत्यु होगई तो घरवालोंके कष्टका ठिकाना नहीं रहता। ऐसी

हालतमें, धन और जन दोनोंसे हाथ धोना पड़ता है। पहलेसे तन्दुरुस्ती पर ध्यान न देनेसे पीछे बड़ी बड़ी अड़चनें आ जाती हैं। बहुत करके इस देशकी स्त्रियाँ अपनी तन्दुरुस्तीकी ओरसे बहुत लापरवा और उदासीन रहती हैं। स्वास्थ्य बिगड़नेसे जो जो तकलीफें और दुःख भोगना पड़ते हैं उनकी ओर उनका ध्यान ही नहीं जाता। वे हमेशह बीमारीका दुःख सहन किया करती हैं। परन्तु आगेके लिये उसके बचावका कुछ भी उपाय नहीं करतीं। जो आदमी बीमार पड़ता है उसके दुःखका तो ठिकाना नहीं रहता। परन्तु उसके घरवालोंको भी रात दिन चिन्ता और दुःख उठाना पड़ता है। अपने शरीरकी रक्षा किस तरह करना चाहिये इसके विषयमें दो चार बातें लिखना आवश्यक है। परन्तु इस जगह उसका पूरा पूरा वर्णन नहीं किया जा सकता। तुमको स्वास्थ्यरक्षा संबंधी पुस्तकें पढ़कर इस विषयकी जानकारी प्राप्त करना चाहिये। इस विषयकी बाल स्वास्थ्यरक्षा, आरोग्यविधान, धात्रीविद्या आदि पुस्तकें पढ़ना लाभकारी है। इन पुस्तकोंके पढ़नेसे स्वास्थ्यरक्षा सम्बन्धी कई एक बातें मालूम हो जावेंगी।

शरीरकी रक्षाके लिये भोजनकी आवश्यकता होती है। भोजनकी वस्तुएँ पौष्टिक और स्वच्छ होना चाहिये। पौष्टिक भोजनोंसे हमारे शरीरमें बल पैदा होता है। चांवल, दाल, दूध, तरकारी, फल, मूल आदि जिन चीजोंको हम–प्रतिदिन खानेके काममें लाते हैं उनको भलीभाँति पका करके खाना चाहिये। भोजनके समय बहुत सावधानी रखना चाहिये। बहुत जल्दी जल्दी भोजन करना उचित नहीं। प्रत्येक ग्रासको खूब चबा चबाकर खाना चाहिये। भूखसे कम या

अधिक भोजन करना अनुचित है। जिन्हें अधिक खानेका अभ्यास हो उनकी तो बात दूसरी है। परन्तु जिन्हें ऐसा अभ्यास न हो और अगर वे परिमाणसे अधिक भोजन कर लें तो उन्हें उसी समय कष्ट भोगना पड़े। अधिक खाजानेसे कई लोग मर भी जाते हैं। बिना इच्छा या किसीके आग्रहसे अधिक भोजन करना उचित नहीं। बहुतेरी स्त्रियाँ किसी किसीपर अधिक प्रेम करके बडे आदर और आग्रहके साथ उनको अधिक भोजन करा देती हैं। ऐसा न करना चाहिये। ऐसे आदर और प्रेमसे लाभ न होकर उल्टा नुकसान पहुँचता है। प्रति दिन एक सा भोजन और लगातार गरिष्ठ चीजें न खाना चाहिये, ऐसा करनेसे पाचनशक्ति कमजोर पड़ जाती है। इस लिये भोजनमें सदा अदल बदल करते रहना चाहिये। बहुत देरसे पचनेवाली, तीखी चरपरी और तेलकी चीजें खाना हानिकारक है। माताको बालकोंके खानेपीनेकी ओर भी खूब ध्यान रखना चाहिये। जिससे वे अखाद्य और हानिकारक चीजें न खाने पावें। परिमित भोजन करनेवाले निरोगी और दीर्घजीवी होते है। अपनी भूखके अनुसार भोजन करनेसे शरीर हल्का और फुर्तीला बना रहता है, अजीर्ण पास नहीं फटकने पाता। इस देशकी स्त्रियोंको बासी भोजन खानेका अधिक अभ्यास रहता है और वे इस तरह अखाद्य अन्नको खाकर अक्सर बीमार भी हो जाती हैं। पीनेका जल बिल्कुल निर्मल और साफ गाढ़े कपड़ेसे छना हुआ होना चाहिये। प्यास लगने पर थोड़ा थोड़ा पानी पीना उचित है। अधिक पानी पीनेसे पाचन क्रिया अच्छी तरह नहीं होती। बहुधा स्त्रियाँ जब परिश्रम करते करते थक जाती हैं और शरीरसे पसीना निकलने लगता है उस

समय पानी पी लेती हैं। जिस समय परिश्रमके कारण पसीना निकल रहा हो उस समय पानी पीनेसे अनेक भयंकर रोग हो जाते हैं। कई आदमी परिश्रमके पीछे एकदम जल पी लेनेसे मर गये हैं। इस लिये *परिश्रमके पीछे कुछ समय विश्राम करके पानी पीना चाहिये।* रसोईके काममें भी साफ पानी काममें लाना चाहिये। मैला पानी पीने या रसोईके काममें लानेसे उदरामय आदि प्राणघातक रोगोंके हो जानेका डर रहता है।

हमारे सांस लेने और छोड़नेसे वायु दूषित होती है। घरकी वायुकी अपेक्षा बाहरकी हवा अधिक निर्मल होती है। इस लिये *घरमें बाहरकी हवा आने और भीतरकी दूषित हवाके निकलनेका* पूरा पूरा प्रबन्ध रहना चाहिये। शरीर, कपड़े, घर द्वार और घरकी सब वस्तुएं साफ रखनेसे अचानक किसी बीमारीके होनेका भय नहीं रहता। रहनेके घरमें बेरोक टोक धूप आना चाहिये। हवा और धूप बखूबी आनेके लिये घरमें कई दरवाजे और खिड़कियां होना उचित है। हमारे देशकी स्त्रियाँ खिड़कियोंकी उपयोगिता नहीं जानतीं। जिनके घरोंमें खिड़कियां लगी होती हैं वे उन्हें बिना जरूरतके शायद कभी खोलती ही नहीं। कई स्त्रियाँ खिड़कियोंके ऊपर घरकी सामग्री रख देती हैं और उन्हें हमेशह बन्द रखती हैं। इन सब बातोंका मुख्य कारण यह है कि वे स्वास्थ्यरक्षा संबंधी बातोंको बिलकुल नहीं जानतीं। घरकी जाजम, तोषक, बिछौने, ऊनी वस्त्र आदि वस्तुओंको निदान हफ्तेमें एक बार अवश्य धूप दिखाना चाहिये। यदि वे मैली हों तो उन्हें धोकर स्वच्छ कर डालना चाहिए।

नहानेका पानी भी साफ होना चाहिये। जिस तालाब या नदीका पानी गदला हो, जिसमें गाय बैल आदि बैठते हों या मैले कपड़े धोये जाते हों उसमें स्नान करना योग्य नहीं। नहानेके पीछे शरीरको टुवाल या मोटे साफ कपड़ेसे पोंछना चाहिये। बालोंको प्रति दिन साफ करना चाहिये। सिरमें साबुन डालनेसे बाल ऐंठ जाते है और सिरका मैल भी अच्छी तरह नहीं निकलता। सूखे आंवलोंको पीस कडुवे तेलमें पकाकर सिरमें डालनेसे बाल बहुत साफ और नरम हो जाते हैं। चिकनी मिट्टी या दही भी बालोंमें डालनेके लिये अच्छा है। आज कल शहरोंमें और विशेषकर पढ़ी लिखी स्त्रियोंमें साबुनका प्रचार बढ़ता जाता है। साबुन लगानेसे शरीरकी कांति क्षीण होती है और उसमें खर्च भी अधिक पड़ता है। इस कामके लिये उबटन बहुत उपयोगी है। इसके लगानेसे सब मैल दूर हो जाता है और शरीरकी कांति बढ़ती है। साबुनके सामने इसका खर्च कुछ नहीं है।

माताको संतानकी तन्दुरुस्तीका पूरा खयाल रखना चाहिये। छोटे बच्चोंके शरीरको दिनमें दो तीन बार धो देना चाहिये, जिससे उनके शरीरमें मैल न रहने पावे। बहुतेरी स्त्रियां बरसातके दिनोंमें अपने लड़कोंको पानीमें भींगते देखकर उन्हें नहीं रोकतीं। वे स्वतः पानीमें भीगी भीगी घरका काम करती रहती है। ऐसा करनेसे अचानक सरदी या ज्वर हो जाता है। भीगे कपड़े पहिरनेसे दाद हो जाती है। इस लिये हमेशह सूखे कपड़े पहिनकर शरीरको ठंडसे बचाते रहना चाहिये।

निरोगी रहनेके लिये अच्छी नींदका आना बहुत जरूरी है।

अच्छी नींद न आनेसे किसी काममें मन नहीं लगता, आलस्य और उदासी छाई रहती है। नींद न आनेसे कई रोग पैदा हो जाते हैं और यहां तक कि लोग मर भी जाते हैं। नींद न आनेके कई कारण हैं। दिनको सोनेसे फिर रातको अच्छी नींद नहीं आती। अधिक चिन्ता, भय, क्रोध आदिके कारण भी नींद नहीं आती, इस लिये क्रोध, चिन्ता, द्वेष, शोक, भय और खेद आदि न करना चाहिये। हाथ पांव धोकर सोना चाहिये। धरतीपर सोना बुरा है। सोनेका पलंग न बहुत ऊँचा हो और न बहुत नीचा। इसी तरह बिछौना भी न बहुत नरम और न बहुत कठोर हो। सोते समय मुँह ढक कर सोना हानिकारक है, क्योंकि मुँह ढक कर सोनेसे जो दूषित वायु सांसके द्वारा छोड़ी जाती है वही फिर फिर सांसके द्वारा भीतर जाती है—इससे रोग पैदा होते हैं।

क्रोध, द्वेष, शोक, चिन्ता और भय स्वास्थ्यको बहुत नुकसान पहुँचाते हैं। हमेशह क्रोध करते रहनेसे उमर घट जाती है, शोक और दुःखमें बहुत अधीर होनेसे बहुतेरे पागल हो जाते हैं, बहुतेरी स्त्रियाँ अधिक भयसे अचेत हो जाती हैं। इसलिये इन बातोंसे हमेशह बचे रहना चाहिये। लड़कोंको भय दिखाना उचित नहीं; क्योंकि ऐसा करनेसे वे डरपोक हो जाते हैं।

शरीरकी रक्षाके लिये शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकारके परिश्रम करना चाहिए। क्योंकि शरीरके जिस भागसे काम नहीं लिया जाता वह बेकाम हो जाता है। बिना विश्राम अधिक परिश्रम करना भी बहुत हानिकारक है। इस लिये शारीरिक परिश्रम हो या मानसिक हो—तीन चार घंटा लगातार करनेके पीछे एक घंटे आराम

अवश्य करना चाहिये। लगातार मेहनत करनेसे स्वास्थ्य बिगड़ जाता है।

इस देशमें सूतिकागृह (संतान पैदा होनेकी जगह) की ओर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। वहाँ हवाका आना जाना एकदम रोक दिया जाता है। वहांकी जमीन भी बहुधा गीली रहती है। प्रसूता स्त्रियाँ उसी गीली जमीनपर सोती रहती हैं। इससे बहुत नुकसान पहुँचता है। घरकी स्त्रियोंको सूतिकागृहकी खूब सावधानी रखना चाहिये। वहांकी जमीन सूखी हो और हवा आनेके लिये यथेष्ट मार्ग हो पर उसमें अधिक हवा और ठंडका आना बंद रखना उचित है।

बीमारी होते ही सावधान हो जाना उचित है। किसी रोगको छोटा समझकर लापरवा रहना बड़ी मूर्खता है। क्योंकि छोटासे छोटा रोग भी बढ़ जानेपर बड़ा भयंकर हो जाता है और उससे प्राण जानेका डर रहता है। शरीर अस्वस्थ होने या कुछ सरदी वगैरह मालूम पड़नेपर गरम पानीसे नहाना चाहिये। अगर घरके किसी आदमीको कोई बीमारी हो जावे तो उसकी बड़ी सावधानीसे दवा-दारू करना चाहिये, विलम्ब करना उचित नहीं है। अनेक स्त्रियाँ रोगको साधारण समझकर दवाई नहीं करतीं परन्तु पीछे बहुत खर्च करनेपर भी उनकी जान बचाना कठिन हो जाता है।

हे कुललनाओ! तुमको अपनी स्वास्थ्यरक्षासे उदासीन होना उचित नहीं। आशा है कि, तुम इन उपदेशोंको पढ़कर सदैव याद रक्खोगी और उनके अनुसार चलनेमें कभी भूल वा सुस्ती न करोगी।

संतान-पालन ।

बच्चोंकी रक्षाका सारा भार माताओंके ही ऊपर है। माता ही बच्चोंकी एक मात्र सहायक और अवलम्बन है। बालक जन्म लेते ही माताकी गोदका आश्रय पाकर और माताके स्तनका दूध पीकर पलता और बड़ा होता है। बच्चोंके लालन पालन और उनकी शिक्षाका सारा भार माताके ऊपर है। माता ही बच्चोंकी शिक्षयित्री (शिक्षा देने वाली) और प्रतिपालन करने वाली है। हमारे देशकी स्त्रियाँ संतान पालनमें बहुत बेसमझ होती हैं। सच पूछो तो उन्हें संतान-पालनकी कोई शिक्षा ही नहीं दी जाती। इसके कारण संतानको जो हानि पहुचती है वह किसी तरह पूरी नहीं हो सकती। संतान-पालन एक बहुत कठिन और बड़ी जिम्मेदारीका काम है। माताको हमेशाह इस काममें सावधान रहना चाहिये। जिस तरह अनसीखे (अपटु) कुम्हारके हाथके बने हुए कुडौल बर्तन एक बार सूख जानेपर फिर सुडौल नहीं किये जा सकते, उसी तरह अपढ़ संतान पालनमें अनभिज्ञ और बुरे चरित्रवाली माताके दोषसे बच्चोंके कोमल हृदय बुरे बिढंगे हो जाते हैं और उनके अंतःकरणमें नाना तरहकी कुशिक्षाएँ जड़ पकड़ जाती हैं। बड़े होनेपर फिर वे किसी तरह नहीं सुधर सकते। छुटपनके बुरे संस्कारोंका फल उन्हें जन्म भर भोगना पड़ता है।

लड़कोंको अच्छा खिलाने पिलाने, अच्छा पहिराने ओढ़ाने और सब तरहकी आपत्तियोंसे बचाये रहनेमें ही संतान पालनका काम पूरा नहीं हो सकता। संतानको सुचरित्र, विद्वान्, मेहनती और

लोकमें आदरणीय बनाना चाहिये। ऐसा किये बिना उनका मनुष्य जन्म सार्थक नहीं हो सकता। सब आदमी अच्छी और सुशील संतानकी इच्छा करते हैं—मूर्ख और दुश्चरित्र संतान कोई नहीं चाहता। मूर्ख और दुराचारी संतानसे मातापिताका सुख और नाम नहीं बढ़ता—बल्कि उनको अपनी बुरी संतानके कारण दुःख अपमान और आपत्तियाँ सहना पड़ती हैं। मान लो कि तुम्हारे लड़केने चोरी करना सीखा। यदि तुम उसे ताड़ना न दोगे तो उसे धीरे धीरे इस कामका अभ्यास हो जायगा और मौका पाकर वह बड़ी बड़ी चोरियाँ भी करने लगेगा। एक दो बार तो वह चोरी करके बच भी सकता है परन्तु जब अंतमें पकड़ा जाकर उसे सजा मिलेगी तब तुम्हें कितना कष्ट और निन्दा सहना पड़ेगी ? यहा तक कि फिर तुम्हें लोगोंमें अपना मुँह दिखाना भी कठिन हो जायगा। तुम अपने मनमें अच्छी तरह विचार कर देखो कि दुराचारी और मूर्ख संतानके द्वारा कितना दुःख, अपयश और बिडम्बनाएं भोगनी पड़ती है। दाम्पत्य-प्रेमके अमृतफल स्वरूप सुशील और सुशिक्षित संतानके द्वारा माता पिताको जितना आनद, उत्साह और समाजमें यश मिलता है उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। इस जगह अब इस बातका विवेचन किया जाता है कि संतानको सच्चरित्र और सुशिक्षित कैसे बना सकते हैं।

चारित्र विषयक अध्यायमें कह चुके हैं कि माताके चरित्र ही बच्चोंकी शिक्षाके ग्रंथ हैं। माताके चरित्रमें जो कुछ गुण दोष होते है बच्चे भी उन्हींका अनुकरण करने लगते हैं। इस लिए यदि माता अच्छे

चरित्रवाली, सती साध्वी और दयावती हो तो उसकी सतान भी सदाचारी, दयालु, न्यायी और कर्त्तव्यनिष्ठ होती है। बच्चोंके कोमल हृदयपर माताके चरित्रकी जैसी छाया पडती है उसीके अनुरूप बच्चोंका हृदय भी बन जाता है। बच्चा अपनी माताको जो कुछ करते देखता है जो कुछ कहते सुनता है वही गुप्त रीतिसे वह भी सीख लेता है। माता उसके कोमल हृदयमें जैसी शिक्षाका बीज बोती है उसे जन्म भर उसी शिक्षाका फल भोगना पडता है। बहुधा देखा जाता है कि मातामें जो गुण दोष होते हैं ठीक वे ही उसकी सतानमें भी उतर आते हैं। अगर सतान माताके गुणोंको न सीखे तो उसके दोषोंको अवश्य सीख लेती है। अत सतानके भावी जीवनकी भलाई-के लिये माताको सतानवती होनेसे पहले ही चरित्रवती सुशिक्षिता होना चाहिये। यदि माता सती साध्वी और मधुर बोलनेवाली न हो तो उसकी सतान भी सुचरित्र और मधुर भाषिणी नहीं हो सकती। यह बात बहुत मोटी है कि अपने स्वत अच्छे हुए बिना दूसरेको अच्छा बनाना कठिन ही नहीं बरन असभव है। इस लिये सतानमें मनुष्यत्व लानेके लिये जिन जिन शिक्षाओंकी आवश्यकता पडती है उन सब विषयोंको माताको सतानवती होनेसे बहुत समय पहले सीख लेना चाहिये। किस रीतिसे सतानको सुशिक्षित बना सकते हैं, किन किन उपायोंसे सतानके नैतिकबलकी वृद्धि हो सकती है, कैसी सगतिसे बच्चोंका चरित्र नहीं बिगडता, किस रीतिसे उनका स्वास्थ्य अच्छा और शरीर सबल रह सकता है, कैसी शिक्षासे सतानके मनमें बुरे कामोंसे घृणा और अच्छे कामोंसे प्रीति उत्पन्न होती है—माताको इन सब बातोंका ज्ञान प्राप्त करना

अति आवश्यक है। कई स्त्रियाँ संतान पालनको एक साधारण काम समझती हैं —यह उनकी बड़ी भूल है। संसारमें संतान पालनके समान कठिन काम बहुत थोड़े हैं।

गर्भावस्थाके समय माताको बहुत होशयारीसे रहना चाहिये। क्योंकि उस समय माताके मनकी गति मति जैसी रहती है उसका असर उसको संतानके ऊपर पड़ता है। इस विषयको '*गर्भवतीका कर्त्तव्य*' नामक अध्यायमें विशेष रूपसे लिखेंगे। संतानके पैदा होने पर माताको और भी सचेत हो जाना चाहिये। क्योंकि उस समयसे संतान रक्षाका काम प्रारंभ हो जाता है। माताको उसी समयसे बड़ी सावधानीसे अपने बच्चेकी देखरेख और रक्षा करना चाहिये। उसे स्वतः खूब सावधानीसे चलना चाहिये जिससे उसका चरित्र किसी दोषसे दूषित न होने पावे और न किसी स्वाभाविक भावसे उसकी मति गति ही विकृत होने पावे। दूध पीनेवाला बच्चा क्या सीख सकता है और उसमें शिक्षा ग्रहण करनेकी शक्ति कहा से आई? -यह विचार बिलकुल ठीक नहीं। इस विषयकी एक बहुत ही उपदेश पूर्ण कहानी है " एक बार एक स्त्रीने किसी विद्वान्से पूछा कि महाराज, मेरे एक पुत्र है उसकी उमर इस समय ४ वर्षकी है, बतलाइये अब कितनी उमर होने पर उसे शिक्षा देना प्रारंभ करूं?" यह सुनकर विद्वान्ने कुछ हँस कर उत्तर दिया कि, " यदि तुमने उसे अभी तक शिक्षा देना प्रारंभ नहीं किया तो तुमने बहुत भारी भूल की। संतानके पैदा होनेके प्रथम ही उसकी शिक्षा प्रारंभ कर देना चाहिये। नहीं तो संतान विद्वान् अपने कर्तव्यको समझनेवाली और क्षमताशाली नहीं हो सकती।" कुलमहिलाओ!

इस कथाका सारांश यह है कि माताको संतानवती होनेके पहले ही सुशिक्षिता हो जाना चाहिये। क्योंकि बच्चे छुटपनसे माताके समीप जो शिक्षा पाते है उन्हें जन्मभर उसीका फल भोगना पड़ता है। अतएव संतानकी भलाईके लिये माताका सुशिक्षिता और चरित्रवती होना बहुत जरूरी है।

जन्मकालसे ही बच्चोंको जरूरतके अनुसार शिक्षा देना सुरू कर देना चाहिये। लड़कोंके रोने मचल जाने या ऊधम मचानेपर माता उन्हें 'जूजू,' 'हौआ' आदिका भय दिखाती है ऐसा करनेसे संतानके भावी सत्साहसकी जड़ कट जाती है और वे डरपोक हो जाते है। बहुतसी स्त्रियाँ झूठी बातें कहकर लड़कोंको असत्यता, शठता आदिकी शिक्षा देती हैं। एक उदाहरण देनेसे यह बात साफ समझमें आ जावेगी। बच्चे जब अच्छा खाना या अच्छा कपड़ा चाहते हैं या और कोई दूसरी बातोंपरसे रोते या हठ करते है तो उसे घरके लोग कई तरहका झूठा लोभ दिखाते हैं— जैसे आकाशसे चंदा ला दूंगा या स्वर्गकी परी बुला दूंगा इत्यादि कपटकी बातोंमें उसे भुला देते हैं। इन बातोंसे बच्चे झूठ बोलना और धोखा देना सीख जाते हैं। सतानको झूठकी शिक्षा देना बड़ी मूर्खताका काम है। छुटपनमें उनके कोमल हृदयपर ऐसी बुरी नीतिका असर पड़नेसे वह जड़ पकड़ जाती है और फिर जन्म भर दूर नहीं हो सकती। लड़कोंको यह बात अच्छी तरह समझा देना चाहिये कि कौन काम अच्छा है और कौन बुरा है। यदि वे कभी कोई अनुचित काम करें तो उन्हें स्नेह पूर्वक ताड़ना देना चाहिये। हजार नुकसान होने पर

भी बुरे कामोंको कभी आश्रय मत दो । बहुतेरे लोग अपनी प्रसन्नताके लिये लडकोंसे गालियाँ या अश्लील बातें कहलाते हैं । यह बहुत बुरी बात है । ऐसा करनेसे वे बहुत बिगड़ जाते हैं, जिसको मन चाहा उसीको गाली देने लगते है । घरवाले उनकी इन बातोंको सुन सुन कर बहुत खुश होते है । जब लड़के किसी बड़े आदमीको गाली देते या मार देते हैं तो उनके माता पिता इस बातको हँसीमें उड़ा देते है और कहने लगते है कि लडके तो ठहरे इनमें इतनी बुद्धि कहां ?

ऐसी लापरवाही करनेसे लड़कोंकी आदत बिगड़ जाती है । योग्य ताड़नाकी कमीसे वे ऐसे उजड्ड और दुराचारी हो जाते है कि फिर किसीसे नम्र होकर नहीं चलते, जो मनमें आता है वही करते हैं । बहुधा देखा जाता है कि लडकों लड़कोंकी लड़ाईमें उनके माता पिता भी आपसमें लड़ने लगते है । परन्तु खेद है कि वे अपने लडकोंके दोषोंको नहीं देखते । वास्तवमें पीछेसे ये सब बातें लड़कोंके सर्वनाशका कारण बन जाती है। लड़कों लड़कोंके लड़नेपर यदि उनके माता पिता आपसमें झगड़ा न करके अपने अपने लडकोंको ताडना देवें, उनपर अपना क्रोध प्रकट करें और आगे न लडनेके लिये सख्त ताकीद कर दें तो बहुत अच्छा हो । माना पिताको इस बात पर विशेष ध्यान रखना चाहिये कि जिससे सुकुमार बुद्धिके बालकोंके मनमें कोई बुरी बात प्रवेश न कर जाय । माताको चाहिये कि वह अच्छे कामोंके करनेमें लड़कोंका उत्साह बढ़ावे, बहुतसे नीतिवाक्योंको मुखाग्र याद करादे शिष्टाचार और सच बोलनेके लिये उपदेश देवे; वह

इस तरह विनय, नम्रता, बडप्पन और आमोद प्रमोदमें नित्य काम आनेवाली बातोंको हमेशाह सिखाया करे । अपने बच्चोंपर ऐसी देखरेख और ताडना रखना चाहिये कि जिससे वे प्रेम और स्नेहसे लालित पालित होकर हमेशाह सुमार्गपर चलें । अनेक लडके ताडना-की कमीमे उपद्रवी ऊधमी हो जाते हैं—ऐसे लडकोंको न कोई चाहता और न उन पर प्यार ही रखता है । उपद्रवी लडके हाथमें लाठी लेकर कभी इसको कभी उसको मारा करते हैं—उनके माता पिता खडे खडे यह सब तमाशा देखते रहते हैं परन्तु उन्हें जरा नहीं दबाते । समझ पडता है कि वे ऐसे कामोंको बुरा नहीं समझते । ऐसे लडके बडे होनेपर बहुत उत्पाती हो जाते है, सब आदमी उनके सहज ही शत्रु बन जाते हैं । यथार्थमें माता पिताके दोषसे ही लडके इस तरह बिगड जाते हैं । यदि उन पर माता पिताकी तेज नजर रहे तो वे कभी नहीं बिगड सकते । मूर्ख माता पिता इस बातको नहीं समझते कि दुष्ट सतान होनेसे कैसे कैसे अनिष्ट होते हैं, जो हो, हमारा तुमसे विशेष अनुरोध है कि तुम अपनी सतानको सद्गुणी बनाकर सपूतकी माता बनो । सपूत कुलका भूषण और कुपूत कुलका कलक है ।

यदि वशकी मान मर्यादा और नेकनामी बढानेकी इच्छा हो, यदि सपूतके द्वारा समाजमें बडाई पाना हो, तो तुम स्वत साध्वी और चरित्रवती बनकर सतानकी भलाई करो । उनको सत्य-प्रिय, न्यायी और सत्साहसी बनानेकी कोशिश करो । यह मत समझो कि उनको बुरे कामोंसे बचाये रहनेमे ही वे चरित्रवान् हो जावेंगे—चरित्रवान् होकर मनुष्यकी बडी पदवीको पावेंगे ।

इसी लिये कहते हैं कि संतानका चरित्र उन्नत करने और उनके मनमें ज्ञानका बीज बोनेकी जैसी जरूरत है वैसी ही उनको अच्छे कामोंमें उत्साह देनेकी भी जरूरत है। दूसरे-के दुःखमें सदय होना, निःस्वार्थ परोपकार करना, दयालुता सरलता आदि सद्गुणोंकी लड़के लड़कियोंको शिक्षा देना बहुत आवश्यक है संतान-पालनका काम कुछ खेल तमाशा नहीं है। इसपर संतानके भावी हिताहितका सारा दारोमदार है। इस काममें खूब सावधान रहना चाहिये। बहुतेरी स्त्रियाँ लड़के लडकियोंको अनुचित काम करनेपर मार लगाया करती हैं, ऐसा करनेसे उनका डर दूर हो जाता और फिर वे माता पितासे भी नहीं डरते। संतानको ताड़ना देना चाहिये इसका मतलब यह नहीं है कि निर्दयी होकर उन्हें खूब मारना पीटना चाहिये। क्या बिना मारे पीटे ताड़ना नहीं हो सकती? बुरे काम करनेपर उनका तिरस्कार करना और आगेके लिये फिर कभी वैसा काम न करें इसके लिये उनके मनमें भय पैदा कर देना ही यथार्थ ताड़ना और उत्तम शासन है। इसके सिवाय उनके अच्छे कामोंपर संतुष्ट होकर उनकी प्रशंसा करना चाहिये और अच्छे कामोंमें उनका उत्साह बढ़ानेके लिये इन्हें इनाम देना चाहिये। परन्तु इस बातका खयाल रक्खा जावे कि वे कहीं अपनी अधिक बड़ाई सुनकर अहंकारी न हो जावें। अधिक ताड़ना और अधिक प्रशंसा या प्रेम प्रगट करना अच्छा नहीं है।।

हे कुलबधुओ! मालूम पड़ता है कि तुम इस बातको अच्छी तरह समझ गई होओगी कि संतानको उत्तम शिक्षा देकर जैसे चाहिये वैसे उत्तम चरित्र, कार्यदक्ष और सज्जन बना सकते हैं।।

माता पिताके मनमें अपनी सुयोग्य सतानको देखकर एक अपूर्व आनदकी लहर उठती है। क्योंकि बुद्धिमान् और चरित्रवान् सतानके द्वारा वशका नाम उज्ज्वल और माता पिताके गौरवकी वृद्धि होती है। इस लिये तुम्हें अपनी अपनी सतानको निरोगी, सुशील और सद्गुणी बनानेकी कोशिश करना उचित है—माता पिताको इस कर्ममें लापरवाही या उदासीनता दिखाना कभी उचित नहीं है। जो स्त्रियाँ अपनी सतानको उत्तम शिक्षा देने और सदाचारी बनानेमें ढील या आलस्य करती हैं वे कुपुनकी माता होकर लोकनिंदा और अनेक दु ख भोगती हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

गृह-कर्म्म ।

पुरुषोंका काम समाज सेवा और स्त्रियोंका काम गृह सेवा करना है। स्त्री घरकी लक्ष्मी है। गृह-लक्ष्मी बिना घरका काम कभी सम्पन्न नहीं हो सकता। गृहस्थाश्रममें जितनी सुख शाति है वह सब गृह-लक्ष्मीके सद्गुणोंका फल है। घरके कामोंसे पुरुष बिल्कुल अनभिज्ञ होते है, इस लिये वे घरके कामोंका सारा भार स्त्रियोंके ऊपर छोड देते हैं, और उनके इस काममें कभी किसी तरहकी रोक टोक नहीं करते है। जब स्त्रियोंके ऊपर ही घरके कामोंका सारा भार और हिताहित निर्भर है, तो उन्हें घरके कामोंकी पूरी पूरी सभाल रखना बहुत उचित और जरूरी है। उमरमें बडी, बुद्धिमती, अच्छे चरित्रवाली, घरूकामोंमें चतुर और गभीरप्रकृतिकी

स्त्री ही गृहिणी नामके योग्य है । जो स्त्रियाँ अपने ही सुख और स्वार्थकी ओर ध्यान रखती हैं, जो दूसरोंको सुखी करके सुखी होना नहीं जानतीं, जो दूसरोंके सुख और सुभीतेके लिये अपनी थोड़ीसी हानि देखकरके अपनेको अभागिनी समझती हैं वे स्त्रियाँ गृहिणी (घरकी मालकिन) के पदके बिलकुल अयोग्य हैं । उनके द्वारा परिवारका सुख सौभाग्य नहीं बढ़ता, बरन् उल्टा घट जाता है । जो स्त्रियाँ दूसरोंको सुखी करके आप सुखी होती हैं, जो दूसरोंको खिलाकर आप खाती है, जो दूसरोंके सुख और सुभीतेके लिये अपने सुख और सुभीतोको छोड़ देती हैं ऐसी स्त्रियोंके घरकी मालकिन होनेपर ही परिवारके लोगोंको सुख शान्ति मिलती है । इसलिये गृहिणी (घर चलानेवाली) का निःस्वार्थ होना अपने व्यक्तिगत स्वार्थका परिवारके स्वार्थमें विसर्जन कर देना अति आवश्यक है ।

गृहिणी (घरकी मालकिन) का कर्त्तव्य बहुत भारी है । घरकी बुराई सब तरहसे गृहिणीके ऊपर निर्भर है । गृहिणी यदि घरू काम काजोंमें चतुर न हो तो घरको पद पदपर हानि उठाना पड़े । गृहिणीमें जिन सब गुणोंके रहनेकी जरूरत है यदि वे गुण उसमें न हों तो घर स्मशान (मरघट) बन जावे । गृहिणीमें क्षमा, दया, कर्त्तव्यज्ञान, सरलता, सत्यनिष्ठा, दूसरोंके दुःखमें शामिल होना इत्यादि गुण अवश्य होने चाहिये, गृहिणीको कभी कोई अयोग्य काम न करना चाहिये, यदि कभी भूलसे कोई अनुचित काम हो जावे तो उनसे उस कामके करनेका खेद प्रकट करके आगेके लिये सचेत हो जाना चाहिये । घरकी मालकिनको अपनी रक्षा

करना जानना चाहिये। क्योंकि घर भरकी रक्षा और प्रबंध करना जिसका काम है यदि वह अपनी आप रक्षा न कर सके तो फिर दूसरोंकी रक्षा करनेमें कैसे समर्थ हो सकेगी? अगर घरकी स्वामिनी खुद अपनेको बुरे कामोंसे न रोक सके तो फिर वह घरके दूसरे लोगोंको अयोग्य काम करते देख कर कैसे रोक सकेगी? इस लिये गृहिणीमें आत्मरक्षा (अपनी रक्षा आप करना) और आत्मशासन (अपने चित्तको वशमें रखना) इन दो गुणोंका होना बहुत जरूरी है।

गृहिणीके अनेक कर्त्तव्य हैं, परन्तु उनमेंसे ये दो मुख्य हैं— घरका प्रबंध ठीक ठीक रखना और थोड़े खर्चमें अच्छी तरह गृहस्थी चलाना। जितनी आमदनी हो उसके अनुसार खर्च करके थोड़ी बहुत बचत निकालना चाहिये। ऐसा करनेसे आगे दुःख नहीं भोगना पड़ता। प्रायः हर जगह देखनेमें आता है कि बहुतेरे भरे पूरे घर अपव्यय या फिजूल खर्चीके कारण थोड़े ही दिनोंमें तबाह हो जाते हैं। गृहस्थोंका कई कारणोंसे अपव्यय होता है—उनमेंसे कुछ ऐसे हैं कि जो किसी तरह टल ही नहीं सकते। उन कामोंमें अपव्यय लाचार होकर करना पड़ता है और कुछ ऐसे हैं कि जो यत्न करने पर टाले जा सकते हैं। घरकी स्वामिनी यदि सावधानी रक्खे और बुद्धिमानीसे काम करे तो बहुतेरे कामोंमें अपव्यय अर्थात् व्यर्थ खर्च न हो। प्रतिदिन घरमें क्या खर्च होता है, किस चीजके अधिक खर्च कर डालनेमें पीछे तंगी होती है, किस वस्तुकी आवश्यकता है, किस वस्तुके न होनेसे भी काम चल जाता है, घरकी कौन कौनसी चीजें असावधानीसे बिगड़ जाती हैं, कौन कौन खाने पीनेकी

चीजें कम खर्च करने या दो दिन ठहर कर खर्च करनेसे घरका चलाव भली भांति चला जाता है—गृहिणीको इन सब बातोंका ज्ञान होना चाहिये। कई चीजें ऐसी होती हैं कि हर समय उनकी जरूरत नहीं पड़ती, परन्तु कभी कभी अचानक आधी रातको उनकी आवश्यकता पड़ती है—ऐसी चीजोंको संग्रह करके रख छोड़ना चाहिए। ऐसा करनेसे समयपर तकलीफ नहीं उठाना पड़ती और उन चीजोंसे बहुत काम निकल जाता है। जरूरतके समय वस्तुएँ अधिक मूल्य पर भी कठिनाईसे मिलती हैं। कौन वस्तु किस तरह खर्च होती है, कौन असावधानीसे पड़ी है, किस वस्तुके बिगड़नेका भय है, घर साफ है या नहीं, घरकी कौन वस्तु किस जगह रखना अच्छा है इत्यादि बातोंपर गृहिणी-का ध्यान हमेशह रहना चाहिये। घरू कामोंमें सिलसिलेकी बड़ी जरूरत है। सिलसिलेसे काम करनेसे वह सहज और थोड़े समयमें सिद्ध हो जाता है। बेसिलसिलेके काममें अनेक विघ्न और अड़चनें आती हैं। कोई भी काम हो, बिना सिलसिलाके वह भली भाँति नहीं हो सकता। जिस वस्तुको जहां पर रखनेमें सुभीता हो उसे उसी जगह रखना चाहिये। चीजोंको यहां वहां बेसिलसिले रख देनेसे मौके पर उन चीजोंके ढूंढनेमें हैरान होना पड़ता है और बहुत सा समय उस वस्तुके खोजनेमें व्यर्थ चला जाता है। कभी कभी तो समय पर उन चीजोंके न मिलनेपर बहुत नुकसान हो जाता है। इस लिये सब कामोंका सिलसिला और प्रबंध रखना बहुत जरूरी है। घरकी स्वामिनीको इन सब बातोंकी अच्छी तरह देख रेख रखना चाहिये।

नहीं तो पद पदपर नुकसान उठाना पडता है। घरकी सब बुराई भलाई गृहिणीके सिरपर रहती हैं। घरकी चलानेवाली स्त्री और नाव चलानेवाला केवट इन दोनोंके सिर पर एकसी जोखिमका काम है। केवट अगर बुद्धिमान् और चतुर हो तो वह बडे बडे तूफानोंसे भी नावको बचा लेता है। इसी तरह अगर गृहिणी घर चलानेमें चतुर हुई तो घर नष्ट नहीं होने पाता। जिस तरह नौका सम्बंधी सब बातोंकी ओर यदि केवटका ध्यान न रहे तो बडी बडी आपत्तियां और प्राणोंपर आफत आ जाती है, इसी तरह अगर गृहिणी घरके सब कामोंकी ओर नजर न रक्खे तो घरकी सत्यानाशी होनेमें कुछ सन्देह नहीं है। उसे देखना चाहिये कि घरके सब आदमी अपना अपना काम अच्छी तरह करते हैं या नहीं। रसोई घरका प्रबंध उसे स्वत कर देना चाहिये। बाजारसे जो जो चीजें आवें उसे गृहिणीको खुद देखना चाहिये और उनका हिसाब रखना चाहिये। जिन चीजोंके खाने पीनेसे लडके बच्चों या घरके दूसरे आदमियोंको विकार होनेका डर हो उन चीजोंको घरमें न आने देना चाहिये। कई लोग खाने पीनेकी चीजें कम कीमती खरीद लाते हैं। कहावत प्रसिद्ध है कि 'सस्ता सौदा माल खराब'। ऐसी खराब चीजोंके खरीदनेमें उस समय कुछ पैसोंकी बचत तो अवश्य दिखती है; परन्तु पीछे जब उन सडी घुनी चीजोंको खाकर कोई घरका आदमी बीमार पड जाता है तो उसके अच्छा करनेमें सैकडों रुपया खर्च हो जाते हैं। खाने पीनेकी चीजोंको स्वच्छ रखनेकी ओर गृहिणीका पूरा पूरा ध्यान रहना चाहिये। घरमें किसी आदमीको कोई बीमारी

हो जावे तो उसकी सेवा खुशामद और दवा दारू करनेमें गृहिणीको किसी तरहका विलम्ब नहीं करना चाहिये। वैद्य रोगीके लिये जिस तरहका पथ्य बतलावे गृहिणीको ठीक उसी तरहका भोजन तैयार कर देना चाहिये। घरकी दूसरी स्त्रियोंके ऊपर इस कामको टाल देना उचित नहीं। कई स्त्रियाँ छोटे कामोंकी देखरेख नहीं करतीं, वे यह कह कर बैठ रहती हैं कि ये काम हमारे न देखनेपर भी चलते हैं। ऐसी सुस्ती करना अनुचित है। घरकी स्वामिनीको घरके प्रत्येक कामपर दृष्टि रखना चाहिये। नहीं तो एक छोटेसे कामके बिगड़नेपर भी कभी कभी बड़ी बड़ी आपत्तियाँ आ जाती हैं।

जिसके ऊपर घरका सारा भार है उसे चंचलता शोभा नहीं देती। घरकी स्वामिनीका स्वभाव अगर चपल हो तो घरमें कोई उसका डर नहीं मानता और न उसकी आज्ञाका पालन ही होता है। इससे घरके कामोंमें बहुत गड़बड़ होती है। इस लिये गृहिणीको अपने सन्मान और बड़प्पनका विचार रख कर घरके लोगोंसे ऐसा बर्ताव करना चाहिये कि जिससे घरके सब लोग उसका भय मानें और आदर करें। अपने नौकरों चाकरोंकी काममें ढील पोल देख कर अनेक स्त्रियाँ उन्हें गालियाँ देने लगती हैं। परन्तु अगर गाली और कटु वचन न कहके मीठी मीठी बातोंसे उनका तिरस्कार किया जावे तो क्या ही अच्छा हो? दास दासियोंपर अन्याय और अत्याचार करनेसे काम नहीं चलता, उन्हें मधुर वचनों द्वारा ताड़ना देना चाहिये।

गृहिणीका एक कर्त्तव्य और है। वह यह कि उसे लड़कियोंके कोमल हृदयोंपर अच्छे भाव और ऊँचे आदर्शोंके चित्र अंकित कर

देना चाहिये । छुटपनमें उनपर अच्छा प्रभाव डाल देनेसे वे आगे भी अच्छे मार्ग पर चली जाती हैं फिर उनके बिगड़ जानेका भय नहीं रहता । इस लिये गृहिणीको उनकी शिक्षाकी ओर अधिक ध्यान रखना चाहिये । उनको हमेशह बुरे कामोंसे बचा कर अच्छे कामोंमें लगाये रहना उचित है । घरके वयो ज्येष्ठ पुरुष स्त्री आपसमें जब कोई गुप्त बात चीत करते हों तो लड़कोंको वहां न आने देना चाहिये ।

गृहिणीका कर्त्तव्य बहुत बड़ा है । उसको अच्छी तरह निबाहनेके लिये बहुत चतुराईकी जरूरत पड़ती है । गृहिणीमें धीरज और सहनशीलताका गुण होना अति आवश्यक है । गृहिणी लड़के बच्चोंकी एकमात्र स्नेहमयी माता और शिक्षा देनेवाली, तथा घरकी बघू दास दासी आदिकी स्वामिनी (मालकिन) है । उसे सब पर एक समान स्नेह, ममता आदर और वात्सल्य रखना चाहिये । परिवारके किसी आदमीका चरित्र अगर बुरा हो तो उसे सुधारनेके लिये गृहिणीको उपदेश देना चाहिये । केवल उपदेश देकर ही शान्त न हो जाना चाहिये बल्कि बुरेको भला बना कर छोड़ना चाहिये ।

गर्भवतीका कर्त्तव्य और नवजात शिशुपालन ।

गर्भावस्थाके समय कौन कौन नियमोंका पालन करना चाहिये, और किस तरह सावधानी रखना चाहिये, इन सब बातोंका ज्ञान

प्रत्येक स्त्रीको होना चाहिये। गर्भावस्था स्त्रियोंके लिये एक बड़े संकटका समय है। बड़े खेदकी बात है कि इस देशकी बहुतेरी स्त्रियाँ इन बातोंको बिलकुल नहीं जानतीं कि गर्भके समय किन किन नियमोंका पालन करना उचित है। इसी अज्ञानताके कारण उन्हें बहुधा समय पर बहुत कष्ट भोगना पड़ता है या संतानके सुखसे बंचित होना पड़ता है।

स्त्रियोंको गर्भावस्थाके समय सब तरहसे सावधान रहना चाहिये। उनको ऐसे समयमें अधिक परिश्रम करना, उपवास करना, गरम वा भारी भोजन करना, दिनको सोना, रातको जागना, चिन्ता शोक, डर और दुःखसे व्याकुल होना, गाड़ी आदिपर सवारी करना, दूर स्थानको जाना इत्यादि बातें बिलकुल छोड़ देना चाहिये। अनेक गर्भिणी स्त्रियाँ कई कारणोंसे शारीरिक वा मानसिक परिश्रम करके पीछे बहुत नुकसान उठाती हैं। बहुतेरी स्त्रियाँ ऐसी मूर्खा होती हैं कि वे गर्भावस्थाके समय कठिन कठिन विषयोंकी पुस्तकें पढ़ती हैं। स्त्रियोंको ऐसे समय अधिक मानसिक परिश्रम करना उचित नहीं। क्योंकि गर्भावस्थाके समय अधिक मेहनत करनेसे संतानके स्वास्थ्यपर धक्का पहुंचता है। नीतिकी मन बहलानेवाली सहज पुस्तकोंके पढ़नेमें कुछ हानि नहीं है।

गर्भवतीको सदैव प्रसन्न मन रहना चाहिये, किसी तरहके बुरे बिचारों द्वारा मनको मलिन करना उचित नहीं। उन्हें इन बातों-पर सदैव ध्यान रखना चाहिये कि जिससे उनके मनमें शोक, दुःख, भय और क्रोध होकर किसी तरह मन चंचल न होने पावे। अगर घरकी किसी अचानक घटनासे या परिवारके किसी आदमीपर

एकाएक विपत्ति टूट पड़नेसे मनको कोई भारी चिन्ता उठ खड़ी हो तो उस समय गर्भवतीको व्याकुल न होकर किसी तरह अपना मन बहलानेका उपाय करना चाहिये। दूसरे आदमियोंसे बात चीत करनेमें प्रायः दुःख कम मालूम पड़ता है। जिस तरह गर्भवतीका मन प्रसन्न रहे उसे उसी रीतिसे चलना चाहिये। ऐसे समयमें कलह या लड़ाई झगड़ा कभी भूल कर भी न करना चाहिये। अच्छी दशामें लड़ने भिड़ने और क्रोध करनेसे शरीर थर थर कांपने लगता है, क्रोधकी अधिकतासे हृदय धड़कने लगता है, फिर भला गर्भावस्थाके समय क्रोधादि करनेसे कितना नुकसान न पहुंचता होगा इस बातको बुद्धिमती स्त्रियाँ आप ही सोच सकती हैं।

गर्भवती स्त्रियोंका मन बहुत चलता है। उनके मनमें कई तरहकी अभिलाषाएं उठती हैं, कई तरहकी चीजें खानेकी इच्छा होती है, देखनेमें सुन्दर लगनेवाली वस्तुओंके देखने और मनको प्रसन्न करनेवाले उपभोगोंके भोगनेकी इच्छा होती है। गर्भवतीकी इच्छाएं पूरी करना उचित है। नहीं तो गर्भके बालकको हानि पहुचती है। गर्भवतीकी इच्छाए अगर पूरी न की जावें तो गर्भस्थ बालकको बहुत हानि पहुँचती है। जैसे अगर गर्भवतीको सुन्दर चीजोंके देखनेकी इच्छा हो और वह पूरी न की जावे तो बालक नेत्ररोगी होगा। इत्यादि। इस तरह गर्भवतीकी अभिलाषाएं पूरी न होनेसे बालक बौरा, गूगा, बहिरा, खोडा, अधा विकृतनेत्र, विकृत अंग, या अधूरे शरीरका हो जाता है। अगर गर्भिणीका स्वभाव चचल हो तो उसकी संतान भी चचल स्वभावकी होगी। गर्भवतीका जैसा चरित्र होगा उसकी संतान भी उसीके समान होगी। इस लिये

गर्भवतीको अपनी संतानकी भलाईके लिये बड़ी सावधानीसे चलना चाहिये।

गर्भावस्थामें खाने पीनेकी चीजोंसे अरुचि पैदा हो जाती है। मन हमेशह मचलाया करता है। भोजनमें ठीक ठीक रुचि नहीं रहती। ऐसी दशामें पौष्टिक, जल्दी पचनेवाला स्वादिष्ट भोजन करना चाहिए।

गर्भवती स्त्रियोंको सदैव इतनी बातोंसे बचना चाहिये—दुर्गंधका सूंघना, भयंकर डरावनी या बुरी लगनेवाली वस्तुओंका देखना, जो बात मनको अच्छी न लगती हो उसका कहना सुनना वा सोचना, कर्कश और दुःख पहुंचानेवाली बातोंका सुनना, कठोर आसनपर बैठना, शरीरमें तेलकी अधिक मालिश करना, जोर जोरसे शरीरको मल कर स्नान करना, ऊँचाईपर चढ़ना या कूदना आदि। ऊपर लिखे हुए काम गर्भिणीको न करना चाहिये। क्योंकि उनके करनेसे गर्भ गिरजाने या उसके नष्ट हो जानेका डर रहता है। बहुतेरी स्त्रियाँ गर्भावस्थाके समयमें भी तीखी, चरपरी, कसैली वा नमकीन चीजें खाया करती हैं। इन चीजोंके खानेसे गर्भस्थ बालकको बड़ी हानि पहुँचती है। गर्भवती स्त्रियोंको अच्छी नींद आनेकी बहुत आवश्यकता है। रातको अच्छी नींद आनेके लिये उन्हें दिनका सोना छोड़ देना चाहिये। क्योंकि दिनका सोना छोड़े बिना रातको अच्छी नींद नहीं आ सकती। दिनको सोनेसे आलसी संतान पैदा होती है। अधिक रात तक जागना भी हानिकारक है। इसी तरह अधिक मेहनत या अधिक शोक या चिन्ता

गर्भके बालकका बड़ा अनिष्ट करती है। बहुतेरी स्त्रियाँ धोती बिछा कर जमीनपर ही सो रहती हैं—जमीन चाहे सूखी हो चाहे गीली इसका उन्हें कुछ विचार नहीं रहता। कई एक स्त्रियाँ रसोई घरमें जब चाहे तब सो जाती हैं—ऐसा सोना बुरा है। गर्भवतीको गीलेमें या नमीकी जगहमें न सोना चाहिये। सोनेके लिये पलंग या चारपाई अच्छी होती है। अगर जमीन पर ही सोना पड़े तो पयाल आदि बिछा कर सोना उचित है। सोनेके लिये रातका समय बहुत अच्छा है। कमसे कम ६।७ घंटे अवश्य सोना चाहिये।

सबेरे और शामके समय स्वच्छ हवा सेवन करनेसे गर्भवती स्त्रियोंको बहुत लाभ पहुँचता है। अगर रहनेके घरमें निर्मल वायुके आने जानेका अच्छा सुभीता हो, तो घरमें धीरे धीरे टहलकर हवा लेनेसे भी बहुत फायदा पहुँचता है।

सूतिकागृह (बालक पैदा होनेका घर) के संबंधमें स्वास्थ्य-रक्षा नामके अध्यायमें जो कुछ लिखा है उसका पालन करना चाहिये। सूतिकागृहमें नमी अर्थात् सीड़ रहनेसे पैदा हुए बालकको बहुत हानि पहुँचती है। उस घरमें रात भर आग जलती रहना चाहिये। वहांपर बहुत ठंडी हवा भी न आना चाहिये घरकी जेठी स्त्रियोंको सूतिकागृह सब तरहसे अच्छा और उपयोगी बनाना चाहिये।

एक डाक्टर साहबने सुप्रसिद्ध सरस्वती मासिक पत्रिकामें एक लेख लिखकर बच्चों और प्रसूता स्त्रियोंके संबंधमें कई जानने योग्य

---

१ डाक्टर यू. एल. देसाई एम. डी. भूतपूर्व सिविलसर्जन कैंपकालौनी, हाल लखनऊ।

बातें प्रकट की हैं। उस लेखका कुछ अंश नीचे दिया जाता है। उनकी रायमें बालकोंकी अधिक मृत्यु होनेके कुछ कारण ये हैं—

१ गर्भवती स्त्रियोंकी शरीर रक्षापर ध्यान न देना।

२ प्रसव कालमें प्रसूता स्त्री और बच्चाकी रक्षाके संबंधमें दाईयों और डाक्टरोंकी भूलें।

३ प्रसव हो चुकनेपर प्रसूता स्त्री और बच्चाके खाना पानकी लापरवाही।

४ बच्चेकी हर तरहकी बिमारियोंके इलाज करनेमें माता पिताका अज्ञान और वैद्यों तथा डाक्टरोंका आलस्य।

गर्भणीकी शरीर रक्षा—इस देशके कई प्रान्तोंमें यह रीति थी कि स्त्रीके गर्भणी होनेपर उसे उसके माबापके भेज देते थे। क्योंकि गर्भणी स्त्रियोंका पतिके पास रहना गर्भ विकृतिकारक है। इसके सिवा वह ससुरालमें प्रचलित रीतियोंके अनुसार अधिक परतंत्र रहती है; उसे सामर्थ न रहने पर भी काम करना पड़ता है; इच्छाके विरुद्ध भोजन मिलता है। और यदि वह ससुरालवालोंके व्यवहारसे दुःखी एवं रुष्टा रही, तो गर्भस्थ शिशुके मस्तिष्कपर बुरा असर पड़ता है। इस लिये ऐसा उपाय होना चाहिये जिससे गर्भवती स्त्रीको स्वच्छ हवा मिल सके, उसका चित्त सदा प्रसन्न रहे, उसके उपर बहुतेरे घरेलू कामोंका बोझा न पड़े, उसके पास ऋतुके अनुकूल पहिरने ओढ़नेके वस्त्र रहें, उसे पुष्टिकारक और हलका भोजन मिले। जिस घरमें सास बहूका झगड़ा होता हो, जहां देवरानी जिठानीमें मन-मुटाव रहता हो, जो कुटुम्ब कलहसे परिपूरित हो, उस घरमें

जन्म लेनेवाला बालक दीर्घायु हृष्ट पुष्ट और प्रतिभाशाली नहीं हो सकता। इस लिये गर्भणी स्त्रीको पिताके घर भेजनेकी रीति बहुत अच्छी है। वहा वह प्राय इन समस्त दोषोंसे बची रहती है।

प्रसूति कालमें प्रसूतास्त्री और बच्चाकी रक्षा—कभी कभी प्रसव वेदना प्रसूति कालसे आठआठ दसदस दिन पहले ही होने लगती है। यह वेदना सच्ची और झूठीके भेदसे दो प्रकारकी होती है। बहुतसे डाक्टर या दाइयाँ सच्ची और झूठी वेदनाको ही सच्ची समझकर दस्तन्दाजी कर बैठती हैं। इससे बहुत हानि होता है। बकरी, गाय, भैंस, हिरणी, बिल्ली आदि पशुओंमें अप्राकृतिक प्रसूति कदाचित ही देखी जाती है। स्वाभाविक रीतिसे प्रसव होनेमें कोई लिखने योग्य तकलीफ नहीं होती है। प्रसव हो चुकनेपर एक घटेके भीतर दाइयोंको अपना कर लेना चाहिये। इस समय दो काम बहुत आवश्यक है—नालच्छेदन, और प्रसूतिके शरीरकी रक्षा। नालच्छेदन हो चुकनेपर बच्चेके पेटपर पतले तने बस्त्र एक टुकडा बाध देना चाहिये और उसको नहलाते समय ऐसी सावधानी रखना चाहिये जिससे नाल न खिंचे। प्रसव हो चुकनेपर सभी कपडे बिछौने २।३ घटे बाद बदल देना चाहिये। प्रसूतिकागारमें खूब शान्ति रहने दो, प्रसूता स्त्रीको खूब सोने दो, उसके सोनेमें किसी तरहकी बाधा मत डालो।

प्रसूतास्त्री और बच्चाका खानपान—प्रसूतास्त्रीके खानपानमें बहुत सख्ती रक्खी जाती है। उसे ६ दिन तक हलका भोजन देना चाहिये। क्योंकि तीसरे चौथे दिन प्रसूतास्त्रीके स्तनोंमें दूध उतरनेमे

उसे ज्वर आ जाता है, अगर भोजन हल्का न दिया जाय तो ज्वर कुपित होनेका भय रहता है।

बचेको माताका दूध सबसे अच्छी खुराक है। परन्तु बहुत दिनोंके अनुभवसे मेरा यह सिद्धान्त है कि यहाँकी स्त्रियोंका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। इस लिये उनका दूध भी निर्विकार नहीं होता। जन्मते ही बचेको गायका दूध पिलाना चाहिये और फिर कभी गायका और कभी माताका, ऐसी अदल बदल करते रहना चाहिये। दूध पिलानेमें शीशी बोतल आदिका उपयोग करना ठीक नहीं है। क्योंकि उसको साफ रखना कठिन है। इस लिये चांदीके चमचेसे दूध पिलाना अच्छा है। ९ महीने तक बचोंको जितना दूध हो उतना ही गरम पानी मिलाकर पिलाना चाहिये। उसमें थोडासा मीठा मिला देनेसे उसका स्वाद माके दूधमे मिल जाता है।

ज्यों ही माताको रजोदर्शन होने लगे त्यों ही बच्चेको दूध पिलाना बंद किया जाय। गर्भवती स्त्रीका दूध तो भूलकर भी न पिलाना चाहिये। जिनके बच्चे बहुधा जीते नहीं हैं उनको चमचेसे गायका दूध और बीच बीचमें माताका दूध पिलानेमें भूल न करना चाहिये। दूधमें आधा गरम पानी मिलानेसे वह कभी बच्चेको विकार नहीं कर सकता।

बचोंका इलाज—यह काम बहुत कठिन है। बच्चोंकी सारी बीमारिया पेट और आंतोंमें गडबड होनेसे होती है। माताके खान पान पर भी बच्चेकी नीरोगता और जीवन अवलम्बित है। बच्चोंको केलोमेल, जालप, सेंटोनाईन, ब्रोमाइडस इन चार दवाईयोंको छोड़-

कर और कोई भी अंग्रेज़ी तेज दवाईयोंके देनेकी हम राय नहीं देते हैं। चमचे भर अंडीका तेल बच्चोंकी सब बीमारियोंको दूर करता है। देशी दवाईयोंमें—सनाय, काला नमक, छोटी पीपल, आंवला, गंधक आदि औषधियां बच्चोंको हितकारक हैं। एक वैद्यने लिखा है कि बच्चोंके लिये " दश वैद्यो समोत्रह्निः दशमाता हरीतकी।" बच्चेके पेटपर बनस्पतियोंके पत्तोंसे सेंक करना दश वैद्योंके बराबर और छोटी हड़ (हर्र) का सेवन करना दश माताओंकी सेवा सुश्रुषाके समान है।"

विविध हितोपदेश।

स्त्रियोंको कोई काम अपनी स्वाधीनतासे न करना चाहिये। स्त्रियोंकी स्वाधीनता अच्छी नहीं होती। क्योंकि उनका हृदय बहुत दुर्बल और आवेगमय होता है। उनके मनमें भली या बुरी जैसी उमंग उठती है उस उमंगको वे अपनी शक्तिसे दबा नहीं सकतीं। इस कारण स्त्रियोंकी स्वाधीनतासे बहुधा हानि ही हुआ करती है। उनकी खुदमुख्तारीसे उनका सर्वनाश होजाता है। भगवान् मनु उपदेश देते हैं " कि स्त्रियोंको बाल्यकालमें पिताके वशमें, जवानीमें पतिके वशमें और पतिके मरनेपर पुत्रके वशमें रह कर उनकी सलाहसे प्रत्येक काम करना चाहिये।"

हे कुलवधुओ! तुम्हें सहनशील होना उचित है। अगर पति या सास ससुर तुमसे कुछ भला बुरा कहें तो तुम्हें उनके

कहनेका बुरा न मानकर उनके उपदेशके अनुसार चलना चाहिये। क्योंकि वे तुमसे बहुत बड़े हैं—और उनका अनुभव ज्ञान भी तुमसे बहुत भारी रहता है। जिन बातोंकी भलाई बुराईको तुम नहीं समझ सकतीं उन्हें वे सहज ही जान लेते हैं। उनके उपदेशके अनुसार चलनेमें तुम्हारी भलाईके सिवा बुराई नहीं हो सकती।

घरके काम काजोंकी तुममें अच्छी योग्यता होना चाहिये। घर-की वस्तुओंको साफ रखकर उन्हें जिस जगह रखना ठीक हो उसी जगह रक्खो। तुमको हाथ खोल कर खर्च न करना चाहिये, बल्कि तुम्हें कम खर्चीकी आदत डालना चाहिये। जिन कामोंके करनेमें तुम्हारी आत्मा संतुष्ट हो तुम्हें उन्हीं कामोंको करना उचित है। अपनी अंतरात्माके विरुद्ध कभी काम मत करो। आचार और सुलक्षणोंसे उमर, मनचाही संतान और अक्षय धनकी प्राप्ति होती है—परन्तु कुलक्षणोंसे विनाश हो जाता है। तुम्हें सत्य और मधुर वचन बोलना चाहिये, ऐसे वचन जो सत्य होने पर भी दूसरोंको प्रिय लगनेवाले न हों अथवा जो दूसरोंको प्रिय लगनेवाले हों पर सत्य न हों—कभी मत बोलो। सत्य और दूसरोंको प्रिय लगनेवाले वचन बोलना चाहिये।

सूर्यके उदय और अस्त होनेके समय भोजन करने रास्ता चलने और सोनेकी मनाई है। समय हो या असमय (गैरवक्त) हो जिस समय गृहस्थके घरपर अतिथि आवे उसे उसी समय भोजन कराना चाहिये। अतिथि सेवासे पुण्य, धन और यशकी प्राप्ति होती है। तुम्हारे घरपर जब कोई अतिथि आवे तो तुम्हें उसकी भली भांति सेवा करके उसे हर तरहसे आराम पहुंचाना चाहिये।

सती कौन है ? जो पवित्र हृदयवाली स्त्री पतिके सुखसे सुखी, पतिके दुःखसे दुखी और पतिके गौरवसे गौरववाली होती है, जो स्त्री पतिके विरहसे व्याकुल और पतिकी मृत्युसे मृतप्राय हो जाती है, जो स्त्री अपने मन और प्राणोंको पतिके चरणोंमें अर्पण कर देती है और जो पतिके प्रेममें सदैव मग्न रहती है—वही सच्ची सती है।

समाप्त.

स्त्रियोपयोगी पुस्तकें।

सौरीसुधार—यह पुस्तक स्त्रियोंके बड़े कामकी है। इसमें मासिक धर्म, गर्भावस्था, प्रसव काल, प्रसव और बच्चोंकी रक्षा वगैरह-का वर्णन बहुत ही खुलासा लिखा है। मूल्य आठ आना।

स्वामी और स्त्री—स्वामी और स्त्रीका कैसा व्यवहार होना चाहिये, इस विषयको बड़ी सरलतासे लिखा है। मूल्य दश आना।

सीतावनवास—सीताजीके नामसे सब परिचित हैं। उनके वनवासका हाल बड़ा ही हृदय द्रावक है। प्रत्येक स्त्रियोंके पढ़ने योग्य है। मूल्य आठ आना।

आदर्श दम्पती—इसमें एक ऐसी प्रतिव्रता स्त्री और ऐसे एक सदाचारी पुरुषकी आदर्श कहानी लिखी है, जिससे अच्छी स्त्री रूप हो नहीं सकता। मूल्य दश आना।

प्रतिभा—स्त्री और पुरुषोंके चरित्रको उन्नत करनेवाला अद्वितीय उपन्यास। मूल्य कपड़ेकी सुन्दर जिल्दका सवा रुपिया।

आँखकी किरकिरी—जगत् प्रसिद्ध लेखक बाबू रवीन्द्रनाथ ठाकुरके बंगला उपन्यासका हिन्दी अनुवाद। मनुष्यकी चित्त वृत्ति बाहरके कारणोंके मिलनेसे कैसे कैसे बदलती जाती है, इसको बड़ी खूबीके साथ लिखा है। कपड़ेकी सुन्दर जिल्द बँधी है। मूल्य पौने दो रु०।

फूलोंका गुच्छा—इसमें छोटी छोटी ११ कहानियाँ बड़ी ही मनोहर, शिक्षा दायक चरित्रको उन्नत करनेवाली हैं। मूल्य दश आना

युवती योग्यता—इस पुस्तकमें प्राचीन स्त्रियोंकी चतुराई

बुद्धिमत्ता, और पांडित्यके ऐतिहासिक उदाहरणोंका वर्णन है। मूल्य ≈)॥

आश्चर्य घटना या नौका डूबी—एक शिक्षित पुरुष परस्त्रीको पासमें रखकर भी किस प्रकार अपने चरित्रको शुद्ध रख सकता है। यह देखना हो तो इसे अवश्य पढ़िये। मूल्य सवा रु०।

दुःखिनी बाला—बाल्य विवाहका अशुभ परिणाम बड़ी युक्तिसे दिखलाया है। मूल्य ⁻)॥

स्त्री मनोबोधिनी—इसमें स्त्रियोंकी सब अवस्थाओंकी शिक्षा लिखी है। एक सर्व कार्य निपुण गृहिणी बनना हो तो इस पुस्तकको पढ़ें। मूल्य १।)

पतिव्रता—इस पुस्तकमें सती, सुनीति, गान्धारी, सावित्री, दमयन्ती और शकुन्तला—इन छह पतिव्रताओंका चरित लिखा गया है। इसकी भाषा बड़ी सरस और सरल है। मूल्य ॥।)

बालापत्र बोधिनी—यह पुस्तक लड़कियोंके लिये बड़े कामकी है। इसमें पत्र लिखनेके नियम आदि बतानेके अतिरिक्त नमूनेके पत्र भी छपे हैं, इस पुस्तकसे अनेक उपयोगी शिक्षायें भी प्राप्त हो जायगी। मूल्य ।≈)

भारतीय विदुषी—इस पुस्तकमें भारतकी कोई ४० प्राचीन विदुषी देवियोंके संक्षिप्त जीवन-चारित लिखे हैं। मूल्य ।≈)

इनके सिवाय हमारे यहां सब तरहकी हिन्दीकी उत्तमोत्तम पुस्तकें भी मिलती हैं।

मिलनेका पता:—

मैनेजर हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय,

हि० हीराबाग पो० गिरगाव—बम्बई।

मेरे गुरुदेव

अर्थात्

श्रीस्वामी रामकृष्ण-परमहंस ।

पाठको ! लीजिये, हिन्दीमें यह एक अनुपम पुस्तक है। स्वामी-
ी पुस्तकोंके लाभसे हिन्दीके पाठक अभीतक वंचित ही रहे हैं ।
ी, बंगला, मराठी, गुजराती आदि भाषाओंमें स्वामीजीकी पुस्तकोंका
आदर है कि उनकी प्रत्येक पुस्तकोंके अनेकों संस्करण निकल
ः है—लाखों प्रतियां बिक चुकीं हैं। परंतु हिन्दीमें उनकी एक भी
क नहीं है। हिन्दीका साहित्यभंडार स्वामीजीके ग्रन्थरत्नोंसे
दम शून्य है यह देखकर हमने इन पुस्तकोंके प्रकाशित करनेका
गार किया है। लीजिये, यह पुस्तक उपर्युक्त अभावके पूर्तिका एक
ीसा प्रयत्न है। आशा है कि हिन्दीके पाठक इस अनुपम रत्नका
दय आदर करेंगे।

भगवान् श्रीरामकृष्ण परमहंसके प्रधानतम शिष्य जगत् प्रसिद्ध
स्वामी विवेकानंदजीने अमेरिकाके न्यूयार्क शहरमें अपने गुरुदेवके
बन्धमें यह पुस्तक My Master नामकी जो वक्तृता दी थी यह
ी वक्तृताका हिन्दी अनुवाद है। स्वामीजीने अपने गुरुदेवके
बन्धमें अमेरिका निवासियोंके साम्हने क्या कहा है यह जाननेकी
से इच्छा न होगी? इस पुस्तकमें परमहंसजीके अलौकिक और
तूहलपूर्ण धर्ममय जीवनरहस्यका संक्षिप्त वर्णन और उनके धर्म-
बन्धी मन्तव्योंका अच्छा दिग्दर्शन किया गया है। पुस्तकमें परम-
जीका एक सुन्दर हाफटोन चित्र भी दिया गया है। पुस्तक अवश्य
नीय और चित्र दर्शनीय है। पुस्तककी सफाई छपाई आदि सब
तम है। मूल्य चार आना मात्र।

पत्ता—हिन्दी-हितैषी कार्यालय.

पो० देवरी (सागर).

बुद्धिमत्ता, और पांडित्यके ऐतिहासिक उदाहरणोंका वर्णन है। मूल्य ≈)॥

आश्चर्य घटना या नौका डूबी—एक शिक्षित पुरुष परस्त्रीके पासमें रखकर भी किस प्रकार अपने चरित्रको शुद्ध रख सकता है। यह देखना हो तो इसे अवश्य पढ़िये। मूल्य सवा रु०।

दुःखिनी बाला—बाल विवाहका अशुभ परिणाम बड़ी युक्तिसे दिखलाया है। मूल्य ≈)॥

स्त्री प्रबोधिनी—इसमें स्त्रियोंकी सब अवस्थाओंकी शिक्षा लिखी है। एक सर्व कार्य निपुण गृहिणी बनना हो तो इस पुस्तकको पढ़ें। मूल्य १।)

पतिव्रता—इस पुस्तकमें सती, सुनीति, गान्धारी, सावित्री, दमयन्ती और शकुन्तला—इन छह पतिव्रताओंका चरित लिखा गया है। इसकी भाषा बड़ी सरस और सरल है। मूल्य ।॥)

बालापत्र बोधिनी—यह पुस्तक लड़कियोंके लिये बड़े कामकी है। इसमें पत्र लिखनेके नियम आदि बतानेके अतिरिक्त नमूनेके पत्र भी छपे हैं, इस पुस्तकमें अनेक उपयोगी शिक्षायें भी प्राप्त हो जायगी। मूल्य ।≈)

भारतीय विदुषी—इस पुस्तकमें भारतकी कोई ४० प्राचीन विदुषी देवियोंके संक्षिप्त जीवन-चरित लिखे हैं। मूल्य ।≈)

इनके सिवाय हमारे यहां सब तरहकी हिन्दीकी उत्तमोत्तम पुस्तकें भी मिलती हैं।

मिलनेका पता:—

मैनेजर हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय,

हि० हीराबाग पो० गिरगाव—बम्बई।

मेरे गुरुदेव

अर्थात्

श्रीस्वामी रामकृष्ण-परमहंस ।

ाठको ! लीजिये, हिन्दीमें यह एक अनुपम पुस्तक है। स्वामी-
पुस्तकोंके लाभसे हिन्दीके पाठक अभीतक वंचित ही रहे हैं ।
ी, बंगला, मराठी, गुजराती आदि भाषाओंमें स्वामीजीकी पुस्तकोंका
आदर है कि उनकी प्रत्येक पुस्तकोंके अनेकों संस्करण निकल
हैं—लाखों प्रतियां बिक चुकी हैं। परंतु हिन्दीमें उनकी एक भी
तक नहीं है। हिन्दीका साहित्यभंडार स्वामीजीके ग्रन्थरत्नोंसे
दम शून्य है यह देखकर हमने इन पुस्तकोंके प्रकाशित करनेका
चार किया है। लीजिये, यह पुस्तक उपर्युक्त अभावके पूर्तिका एक
ऐसा प्रयत्न है। आशा है कि हिन्दीके पाठक इस अनुपम रत्नका
श्य आदर करेंगे।

भगवान् श्रीरामकृष्ण-परमहंसके प्रधानतम शिष्य जगत् प्रसिद्ध
स्वामी विवेकानंदजीने अमेरिकाके न्यूयार्क शहरमें अपने गुरुदेवके
सम्बन्धमें यह पुस्तक My Master नामकी जो वक्तृता दी थी यह
उसी वक्तृताका हिन्दी अनुवाद है। स्वामीजीने अपने गुरुदेवके
सम्बन्धमें अमेरिका निवासियोंके साम्हने क्या कहा है यह जाननेकी
से इच्छा न होगी ? इस पुस्तकमें परमहंसजीके अलौकिक और
त्त्वपूर्ण धर्ममय जीवनरहस्यका संक्षिप्त वर्णन और उनके धर्म-
म्बन्धी मन्तव्योंका अच्छा दिग्दर्शन किया गया है। पुस्तकमें परम-
सजीका एक सुन्दर हाफटोन चित्र भी दिया गया है। पुस्तक अवश्य
ठनीय और चित्र दर्शनीय है। पुस्तककी सफाई छपाई आदि सब
त्तम है। मूल्य चार आना मात्र।

पुस्तक मिलनेके पते—

पता—हिन्दी-हितैषी कार्यालय,

पो० देवरी, जिला सागर (म. प्र.)

और

हिन्दीग्रन्थरत्नाकर कार्यालय,

ठि० हीराबाग, पो० गिरगाव बम्बई।

कर्नाटक प्रेस, बम्बई।